कार्यालय प्राचार्य, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिरमिरी जिला–कोरिया (छ.ग.)
नैक द्वारा "C" ग्रेड प्रदत्त
Affiliated to Sarguja University, Ambikapur AISHE: C-9736 Phone No. 07771-265026
Email-govtlahiricollege@gmail.com Website- www.govtlahiripgcollege.com

SSR (IInd Cycle)

3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC care list

Response:

Sl. No.	Contents	Page (From..to...)
1	Report of published research paper per teacher	2-7
2	Scan copy of the research article	8-97

IQAC Coordinator
Govt. Lahiri P.G. College, Chirimiri
Distt. - Korlya (C.G.)

PRINCIPAL
Govt. Lahiri P.G. College
Chirimiri, Distt.- Korea (C.G.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिरमिरी जिला–कोरिया (छ.ग.)
नैक द्वारा"C" ग्रेड प्रदत्त

Affiliated to Sarguja University, Ambikapur AISHE: C-9736 Phone No. 07771-265026
Email-govtlahiricollege@gmail.com Website-www.govtlahiripgcollege.com

Report of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC website during the last five Sessions:

Name of the Author: -Dr. Ram Kinker Pandey

Sl. No.	Title of paper	Year of Publication	Department of the teacher	Name of journal	ISSN/ISBN number
1	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में इतिहास बोध का स्वरूप	2019	हिन्दी	हिन्दी अनुशीलन	2249-930 X
2	हिन्दी कहानी: परम्परा और पृष्ठभूमि	2019	हिन्दी	शोध संदर्श	2319-5908
3	तीसरी कसम: अनुठी प्रेमकथा	2019	हिन्दी	हिन्दी अनुशीलन	2249-930 X
4	वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का स्वरूप	2019	हिन्दी	हिमांजलि	2949-4905
5	भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष और महात्मा गांधी की पत्रकारिता	2020	हिन्दी	हिन्दी अनुशीलन	2249-930 X
6	जयशंकर प्रसाद कृत कंकाल का अनुशीलन	2020	हिन्दी	अनुसंधान	2249-9318
7	आधुनिक हिन्दी कविता: प्रारंभ एवं परवर्ती विकास	2020	हिन्दी	शोध सरिता	2348-2397
8	दोपहर का भोजन: मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ	2021	हिन्दी	शोध सृजन	Nil
9	राम नरेश त्रिपाठी का काव्य वैविध्य	2021	हिन्दी	शोध सृजन	Nil
10	विस्थापन की त्रासदी का महावृत्तांत: डूब	2021	हिन्दी	शोध संचार बुलेटिन	2229-3620
11	नई कहानी आंदोलन के अंत: सूत्रों की पड़ताल	2021	हिन्दी	शोध धारा	0975-3664

12	धर्मवीर भारती का साहित्य चिंतन	2021	हिन्दी	शोध दिशा	0975-735 X
13	भीष्म साहनी का औपन्यासिक अवदान	2021	हिन्दी	समसामयिक सृजन	2320-5733
14	मुक्ति बोध की कहानियॉः वैचाारिक के कलेवर में आख्याान	2021	हिन्दी	समसामयिक सृजन	2320-5733
15	हिन्दी कथा साहित्य और आलोचनाः विधात्मक स्वरूप की पहचान	2021	हिन्दी	शोध दिशा	0975-735 X
16	राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक मैथिलीशरण गुप्त	2021	हिन्दी	समसामयिक सृजन	2320-5733
17	भक्ति आंदोलन में मराठी एवं गुजराती संतो का प्रदेय	2021	हिन्दी	शोध दिशा	0975-735 X

Name of the Author: - Dr. Aaradhana Goswami

Sl. No.	Title of paper	Year of Publication	Department of the teacher	Name of journal	ISSN/ISBN number
1	Slavery, suffering and violence in Toni Morrison's novels	2017	English	Research Link	0973-1628
2	Higher Education in : Hindrances and measures to overcome those	2017	English	Journal of humanities and culture	2393-8285
3	Stigma of slavery and racial identity	2018	English	Jodhpur Studies in English	0970-843x
4	Historical Trauma of Race and Identity Crises	2018	English	Toni Morrison's Novel	978-1428003496

5	Ethical and Moral Values in Indian Higher Education System	2019	English	Emerging Trends in English Trauma	978-81-942601-4-1
6	A New Phase of Indian English Drama	2020	English	Women Development	978-81-952235-0-3
7	Role of Indian English Literature in Women Empowerment	2020	English	Women Empowerment	978-81-952235-0-3
8	Race and gender marginalization in Toni Morrison's the bluest eye	2021	English	Journal of literature, culture and media studies	0974-7192
9	Emergence of new woman and her challenges in Shashi Deshpande's novels	2021	English	Journal of literature, culture and media studies	0974-7192

Name of the Author: - Mr. S.C.Chaturvedi

Sl. No.	Title of paper	Year of Publication	Department of the teacher	Name of journal	ISSN/ISBN number
1	Association of solar flux (2800 MHz) & cosmic ray intensity for solar cycle 22 and 23	2020	Physics	International journal of Physics and Application	2664-7583
2	Correlative of Geomagnetic Field with Solar Parameters during 2008-2020	2020	Physics	International Journal of Advances in Engineering and Managemen t	2395-5252
3	Study of effect of Magnetic Clouds Geomagnetic Indices during period 2007	2021	Physics	Asian basic and applied research journal	168-171
4	Correlative Study of Interplanetary Magnetic Field (IMF) with Solar Indices during period 2008-2020	2021	Physics	Indian journal of research	2250-1991
5	The Solar-Terrestrial Links and Energy Transfer Mechanism in Recurrent and Non-recurrent Geomagnetic Activities and Impacts of	2021	Physics	International Journal of Research in Engineering and Science	2320-9364
6	The geomagnetic field variations Morphology of Geomagnetic Storms and distribution of Plasma in the Magnetosphere	2021	Physics	International Journal of Creative Research Thoughts	2320-2882

Name of the Author: - Dr. Dhansay Dewangan

Sl. No.	Title of paper	Year of Publication	Department of the teacher	Name of journal	ISSN/ISBN number
1	Synthesis, Molecular Docking, and Biological Evaluation of Schiff Base Hybrids of 1,2,4-Triazole-Pyridine as Dihydrofolate Reducates Inhibitors	2021	Chemistry	Current Research in Pharmacology and Drug Discovery	2590-2571
2	PPAR gamma targeted molecular docking and synthesis of some new amide and urea substituted 1, 3, 4-thiadiazole derivative as ant diabetic compound	2020	Chemistry	Journal of Heterocyclic Chemistry	1943-5193
3	Design, Synthesis and Characterization of Quinoxaline Derivatives as a Potent Antimicrobial Agent	2018	Chemistry	Journal of Heterocyclic Chemistry	1943-5193
4	Synthesis and molecular docking study of novel hybrids of 1,3,4-oxadiazoles and quinoxaline as a potential analgesic and anti-inflammatory agents	2018	Chemistry	Journal of Heterocyclic Chemistry	1943-5193
5	Synthesis, Characterization, Molecular Modeling and Biological Evaluation of 1,2,4-Triazole- Pyridine Hybrids As Potential Antimicrobial Agents	2018	Chemistry	Journal of Heterocyclic Chemistry	1943-5193
6	Analgesic and anti-inflammatory potential of merged pharmacophore contaning1,2,4-triazoles and substituted benzyl groups via this linkage	2018	Chemistry	Journal of Heterocyclic Chemistry	1943-5193
7	Synthesis, characterization, and screening for analgesic and anti-inflammatory activities of Schiff bases of 1,3,4-oxadiazoles linked with quinazolin-4-one	2017	Chemistry	Journal of Heterocyclic Chemistry	1943-5193

Name of the Author: - Dr. Rajani Sethia

Sl. No.	Title of paper	Year of Publication	Department of the teacher	Name of journal	ISSN/ISBN number
1	चिरमिरी कोयला खदान श्रमिकों को प्राप्त आवासीय सुविधा एक अध्ययन	2017	Economics	Research Link Monthly	0973-1628
2	दीन दयाल उपाध्याय का आर्थिक चिंतन एवं इसकी प्रासंगिकता	2017	Economics	Asian Journal of Advance Study	2395-4965
3	कोयला खान श्रमिकों की आय एवं उपभोग प्रवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन–चिरमिरी कोयला क्षेत्र के विशेष संदर्भ में	2017	Economics	Research Digest	0973-6387
4	21वीं सदी एवं महिला सशक्तिकरण	2018	Economics	Asian Journal of Advance Study	2395-4965
5	कोयला खान श्रमिकों की आर्थिक स्थिति एक अध्ययन	2018	Economics	Research Analysis & Evaluation	0975-3486
6	श्रम संगठनों की भूमिका, चिरमिरी कोयला क्षेत्र के संदर्भ में	2019	Economics	अयन्	2347-4451

IQAC Coordinator
Govt. Lahiri P.G. College, Chirimiri
Distt. - Korlya (C.G.)

PRINCIPAL
Govt. Lahiri P.G. College
Chirimiri, Distt.- Korea (C.G.)

अनुक्रम

विमर्श 5

प्रो0 नन्दकिशोर पाण्डेय

संवाद 12

डॉ0 नरेंद्र मिश्र

1. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कविता : उन्मुक्त मन की रागात्मकता एवं मंगलमयी जनपक्षधरता 16
डॉ0 व्यासमणि त्रिपाठी

2. वैश्विक स्तर पर बुलंदी की ओर बढ़ती हिन्दी 25
डॉ० दर्शन पाण्डेय

3. तुलसीदास के काव्य में नैतिक मूल्यों की अवस्थिति 32
केशवसिंह रघुवंशी

4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में इतिहास बोध का स्वरूप 37
डॉ0 रामकिंकर पाण्डेय

5. आधुनिक रामकाव्यों में चित्रित नारी–जागरण की चेतना 47
चम्पालाल कुमावत

6. हिन्दी नाटकों में बदलते पारिवारिक मूल्य 53
डॉ0 धीरेन्द्र शुक्ल

7. केदारनाथ सिंह : मैं बोलता हूँ, इसलिए लिखता हूँ 56
डॉ0 मनोज पाण्डेय

8. मानस–हंस की सामाजिक संचेतना 64
डॉ0 हरीदास व्यास

9. एक शायर हूँ गरीबी में जिसे पाला है (गोपालदास नीरज की कविता) 75
प्रो0 वशिष्ठ अनूप

10. नई सदी की कविता में सार्वभौमिकता 80
डॉ0 नीतू परिहार

11. प्रेमचंद के कथा साहित्य में राष्ट्रबोध (विशेष संदर्भ– यह मेरी मातृभूमि है) 85
डॉ0 सुधीर कुमार शर्मा

12. 'व्यक्तिगत' में व्यक्त संवेदनाओं का स्वर 89
डॉ0 प्रवीण चंद्र बिष्ट

Scanned by CamScanner

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में इतिहास बोध का स्वरूप

डॉ0 रामकिंकर पाण्डेय

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के एक सफल आलोचक, निबंधकार, उपन्यासकार, भाषा–चिंतक और संस्कृतिकार के रूप में ख्यात हैं। वास्तव में आचार्य द्विवेदी पूर्णतः एक संस्कृति पुरूश थे। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व उनके सर्जक और विचारक मनीषी की तरह परंपरा का विकास होते हुए, सभी परंपराओं में आगे बढ़ते हुए सदैव आधुनिक होता हुआ गतिमान रहा है। उनका साहित्य केवल परंपरा का पालन करने–कराने वाला नहीं रहा है वह सामाजिक–सांस्कृतिक अतीत के आलोक में वर्तमान को एक रास्ता दिखाने वाला भी है। उन्होने लगभग सभी विधाओं में अपनी स्पष्ट दृष्टि का परिचय दिया है। आचार्य द्विवेदी को सामान्यतः इतिहास और परंपरा का लेखक माना गया है किंतु उनका परंपरानुशीलन अर्थवान् प्रगतिशीलता से मंडित है, उनकी वैयक्तिक स्वच्छंदता सामाजिक इतिहास की गरिमा लिये हुए मानवता का ध्वज आगे बढ़ाने की पक्षधर है। आचार्य द्विवेदी द्वारा प्रणीत चार उपन्यास हैं– 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारूचन्द्र लेख', 'पुनर्नवा' और 'अनामदास का पोथा'। इनमें से प्रथम तीन का संबंध सीधे–सीधे भारतीय मध्यकालीन इतिहास की घटनाओं से है जबकि अनामदास का पोथा– अथ रैक्व आख्यान का इतिहास पौराणिक संदर्भों से जुडा हुआ है। अपने इन सभी उपन्यासों में इतिहास–चित्रण के साथ–साथ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी नें प्रेम और सौंदर्य की भी सुंदर अभिव्यंजना की है ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने समय–समय पर दिए अपने विभिन्न साक्षात्कारों में अपने उपन्यासों को शुद्ध 'गप' या 'गल्प' ही माना है लेकिन उनके उपन्यास मात्र गल्प नही है बल्कि वे संस्कृति और इतिहास के जीवंत दस्तावेज भी हैं। उनके उपन्यासों में लिखित इतिहास उस तथ्यपरक इतिहास से अवश्य भिन्न है जिसमें केवल घटनाओं का विवरण होता है बल्कि उनका इतिहास एक ओर तत्कालीन कालखंड के सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश का चित्र खींचता हुआ चलता है और दूसरी ओर उस युग के मूल्यों को भी स्थापित करने का प्रयास करता है। उनके उपन्यासों में इतिहास का उपयोग एक व्यापक फलक को पृष्ठभूमि के रूप में रखने के लिए हुआ है, जिसके द्वारा एक प्रगतिशील और सजग मानवता की स्थापना की जा सके। इसकी पुष्टि अपने महत्वपूर्ण उपन्यास 'पुनर्नवा' में द्विवेदी जी स्वयं कहते हैं– व्यवस्थाओं का निरंतर संस्कार आवश्यक है अन्यथा वे सब कुछ तोड़ देंगी। उनका निष्कर्ष है– 'अगर निरंतर व्यवस्थाओं का संस्कार नही होता रहेगा, तो एक दिन व्यवस्थाएँ तो टूटेंगी ही, अपने साथ धर्म को भी तोड़ देंगी।' इससे यह स्पष्ट है

Scanned by CamScanner

CONTENT

Sanskrit

- युधिष्ठिर विजय महाकाव्य में दार्शनिक चेतना का विश्लेषणात्मक अध्ययन — 1-5
  –विजय कुमार यादव एवं डॉ0 संगीता अग्रवाल — 6-8
- प्रो. अमरनाथ पाण्डेय का जीवन वृत्त एवं कर्त्तव्य–*प्रशान्त शुक्ल* — 9-17
- 'अपरिग्रह' की भावना से आत्मा को शान्ति एवं आर्थिक समस्या का भी समाधान–*डॉ0 सिकन्दर लाल* — 18-23
- महाभारत कालीन सामाजिक परिवर्तन–*डॉ0 राजेश रंजन* — 24-28
- बौद्ध धर्म ग्रन्थों में पर्यावरण–*डॉ0 सुकृति* — 29-31
- रस स्वरूप : एक विवेचन–*संदीप कुमार पाण्डेय* — 32-34
- वेणीसंहार में द्रौपदी का संघर्षात्मक जीवन–एकता एवं *प्रो0 अनीता जैन*

Hindi

- स्त्री अस्मिता के पथ की अन्वेषी : मीराबाई–*डॉ0 रतन कुमारी वर्मा* — 35-39
- कालजयी कवि 'जयशंकर प्रसाद' के साहित्य में मानवीय भावना–*शशि कपूर* — 40-45
- मध्यकालीन काव्य में नारी चेतना–*डॉ0 रतन कुमारी वर्मा* — 46-49
- इंशानी रिश्तों की खोज में नासिरा शर्मा की कहानियाँ–*डॉ0 विनोद कुमार विद्यार्थी* — 50-52
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना–*श्रेया सिंह* — 53-56
- जीवन मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका–*डॉ. सुषमा सिंह* — 57-59
- नागार्जुन के काव्य में जनवादी चेतना–*विनोद कुमार* — 60-65
- सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य कौशल में राष्ट्रीय चेतना–*डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार* — 66-69
- समय से मुठभेड़ करती 'धूमिल' और पंजाबी कवि 'पाश' की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन–*आत्माराम* — 70-77
- संजीव के उपन्यासों की भाषा–*धर्मेन्द्र कुमार* — 78-81
- आधुनिक हिन्दी साहित्य के आलोचक : डॉ. रामविलाश शर्मा
  –श्री युगल सिंह राजपूत एवं डॉ. स्नेहलता निर्मलकर — 82-84
- इक्कीसवीं सदी और रेणु का नारी विषयक दृष्टिकोण–*बसन्त पाल* — 85-86
- हिन्दी साहित्य में संत रविदास की साहित्यिक रचनाओं पर आधारित ''शोध-पत्रों'' के शीर्षक
  –डॉ0 लालबहादुर सिंह — 87-89
- उत्कट अनुभव एवं उद्वेग का उघाटन : समकालीन हिन्दी कविता में समाज-बोध
  –डॉ0 कृपा किन्जलकम् — 90-94
- आदिवासी हिन्दी उपन्यासों में चित्रित नक्सलवाद की समस्या (आमचो बस्तर, ग्लोबल गाँव के देवता और मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)–*डॉ0 संजय नाइनवाड* — 95-99
- महान समन्वयवादी : गुरु नानकदेव–*डॉ0 ईश्वर पवार* — 100-105
- मधु कांकरिया के 'सूखते चिनार' में आतंकवादी दानव का कहर–*डॉ0 किरण ग्रोवर* — 106-111
- त्रिलोचन : जीवन संघर्ष एवं यथार्थ परक विसंगतियाँ
  –कमलेन्द्र कुमार सतनामी एवं डॉ0 आशुतोष कुमार द्विवेदी — 112-113
- भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में संवेदना–*मो0 वारिस* — 114-119
- सूफी साहित्य का संवेदनात्मक परिचय–*दुर्गा प्रसाद* — 120-123
- मराठी भाषी छात्रों का हिन्दी अध्ययन : समस्याएँ एवं समाधान–*डॉ0 संजय भाऊ साहब दवंगे* — 124-126
- हिन्दी कहानी : परम्परा और पृष्ठभूमि–*डॉ0 राम किंकर पाण्डेय* — 127-130
- हिन्दी साहित्य में सामाजिक यथार्थ की अवधारणा–*मनोज कुमार एम0जी0* — 131-134
- अनुवाद का समाज समाजशास्त्र और भाषा व्यवस्था–*डॉ0 विजय कुमार रोडे* — 135-138

Scanned by CamScanner

(U.G.C. Approved Peer Reviewed Refereed Journal) ISSN No. - 2319-5908
Hindi : Shodh Sandarsh-VII, Vol.-XXV, Sept.-Dec. 2019, Page : 127-130
General Impact Factor : 1.7276, Scientific Journal Impact Factor : 6.756

हिन्दी कहानी : परम्परा और पृष्ठभूमि

*डॉ. राम किंकर पाण्डेय**

हमारे यहाँ कहानी की लिखित और मौखिक दोनों परम्पराएँ विद्यमान हैं। उपनिषदों की रूपक कथाओं, महाभारत के उपाख्यानों, रामायण की कहानियों, बौद्धों की जातक कथाओं और फिर पौराणिक देवी–देवताओं के चतुर्दिक बुनी गई रोचक कथाओं का अपूर्व भंडार हमारे यहाँ मौजूद है। बाद में इसी कथा–परंपरा का विकास 'वासवदत्ता', 'कादम्बरी', 'दशकुमार चरित्र', आदि की लम्बी कहानियों और पंचतंत्र, हितोपदेश, बेताल पच्चीसी, सिंहासन–बत्तीसी, शुक सप्तति, कथासरित्सागर और भोज प्रबन्ध आदि की छोटी–छोटी कहानियों में हुआ। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल से पूर्व अधिकांशतः पद्य में और कभी–कभी गद्य में उक्त कहानियों की परंपरा विद्यमान रही और बाद में इसी परंपरा का स्वाभाविक विकास आधुनिक कहानी के रूप में हुआ या नहीं यह एक विवादास्पद प्रश्न है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि आधुनिक काल में कहानी के लिए अनुकूल जमीन हमारे यहाँ तैयार थी। जिस पर आगे चलकर हिन्दी कहानी की भव्य और विशाल इमारत तैयार हुई।

यद्यपि हिन्दी कहानी की परंपरा के बीज हमारे यहाँ मौजूद थे लेकिन जैसा कि डॉ. हरदयाल का कहना है– "इसमें कोई संदेह की बात नहीं कि आधुनिक काल में कहानी के लिए अनुकूल भूमि हमारे यहाँ तैयार थी लेकिन पश्चिम में कहानी (शार्ट स्टारी) के जो प्रतिमान निर्धारित किए गए और जिनके आधार पर हमने कहानी के संबंध में निर्णय करना प्रारंभ किया वे पश्चिम से आए थे और वैसी कहानियाँ लिखने की प्रेरणा भी पश्चिम से ही आई थी, यद्यपि से प्रेरणा का माध्यम बंगला में लिखी जाने वाली 'गल्पें बनी थी।"[1]

हिन्दी में आधुनिक ढंग की कहानियों के प्रारंभ और हिन्दी की पहली कहानी को लेकिन काफी विवाद है। हिन्दी कहानी के कुछ इतिहासकारों ने 'रानी केतकी की कहानीं' (1803 ई.) या राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द रचित राजा भोज का सपना (1886 ई.) या भारतेंदु युग में रचित कथात्मक निबंधों–राधाचरण गोस्वामी कृत यमलोक की यात्रा, भारतेंदु कृत एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न आदि को हिन्दी की पहली कहानियाँ घोषित किया है। सरस्वती के प्रारंभिक वर्षों में कुछ मौलिक कहानियाँ प्रकाशित हुई जिनकी सूची आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी अपने हिंदी साहित्य का इतिहास में दी है जो इस प्रकार है –

1. इन्दुमती (किशोरी लाल गोस्वामी) सं. 1957
2. गुलबहार (किशोरी लाल गोस्वामी) सं. 1959
3. प्लेग की चुड़ैल (मास्टर भगवानदास, मिरजापुर) सं. 1959
4. ग्यारह वर्ष का समय (रामचंद्र शुक्ल)सं. 1960
5. पंडित और पंडितानी (गिरिजा दत्त वाजपेयी) सं. 1960
6. दुलाई वाली (बंग महिला) सं. 1964

उपरोक्त कहानियों में से हिन्दी की पहली कहानी कौन सी होगी इस पर विचार करते हुए आचार्य शुक्ल ने मार्मिकता की दृष्टि से भाव प्रधान तीन कहानियों को विचारणीय माना–इन्दुमती, ग्यारह वर्ष का समय और दुलाई वाली। पहली कहानी के संबंध में उनका मानना है कि "यदि इंदुमती किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है तो

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग), शा. लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिरमिरी, कोरिया, छ.ग.

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

1.	विमर्श *प्रो0 नंदकिशोर पाण्डेय*	5
2.	संवाद *प्रो0 नरेन्द्र मिश्र*	8
3.	मानवीय मूल्यों की स्थापना करने वाला खंडकाव्य–कालजयी *डॉ0 योगेश जी पाटील*	15
4.	लोकायतन : छायावादोत्तर युग का अप्रतिम महाकाव्य *डॉ0 मनीषा मिश्र*	20
5.	तीसरी कसम : अनूठी प्रेमकथा *डॉ0 रामकिंकर पाण्डेय*	26
6.	श्रृंखला की कड़ियाँ : स्त्री विमर्श का प्रथम दस्तावेज *डॉ0 गीता कपिल*	31
7.	रश्मिरथी में सामाजिक समरसता *डॉ0 आदित्य कुमार गुप्त*	38
8.	श्रेय नहीं कुछ मेरा *डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय*	45
9.	बांग्ला कथाशिल्पी शरतचंद्र की जीवनगाथा–आवारा मसीहा *प्रो0 यशवंत सिंह*	54
10.	अंधायुग : अँधेरे में आस्था के प्रकाश का गीतिनाट्य *डॉ0 सुमित मोहन*	61
11.	सफलता की राह में रिश्तों का भोज : चीफ की दावत *डॉ0 हितेन्द्र कुमार मिश्र*	72
12.	कालजयी शब्दशिल्पी : अज्ञेय *डॉ0 मधुसूदन शर्मा*	78
13.	व्यक्ति स्वातंत्र्य की पहचान : शेखर एक जीवनी *डॉ0 प्रणु शुक्ला*	86
14.	एक कंठ विषपायी में आधुनिक युगबोध *डॉ0 दीपिका विजयवर्गीय*	90

पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल
(यू0जी0सी0 केयर लिस्ट में शामिल) ISSN : 2249-930X

Scanned by CamScanner

तीसरी कसम : अनूठी प्रेम कथा

डॉ0 रामकिंकर पाण्डेय

'तीसरी कसम' उर्फ मारे गए गुलफाम फणीश्वरनाथ रेणु की बहुपठित और बहुचर्चित कहानी है। यह प्रेमकथा सन् 1956 ई. में लिखी गई और 1957 ई. में संशोधित होकर पटना से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'अपरम्परा' में प्रकाशित हुई। तीसरी कसम वास्तव में प्रेमकथा ही है या यूँ कहे कि इसकी मूल वस्तु प्रेम है। तीसरी कसम के इसी पक्ष पर विचार करते हुए डॉ. हरदयाल लिखते हैं– "प्रेम के अनुभव को रेणु ने बड़ी संवेदनशीलता के साथ पकड़ा है और बड़ी कुशलता के साथ अभिव्यक्त किया है। स्त्री–पुरूष आदिम काल से प्रेम के अनुभव से गुजरते रहे हैं, लेकिन हर प्रेम करने वाले को लगता रहता है कि उसका प्रेम औरों से अलग और विशिष्ट है। इसी कारण प्रेम का अनुभव कभी पुराना नहीं पड़ता है। संसार की साहित्यक रचनाओं में सबसे अधिक प्रेम का ही चित्रण हुआ है। इसका कारण यह है कि भाषा की सीमित सामर्थ्य के कारण प्रेम की विशिष्ट और अनुपम अनुभूति को भाषाबद्ध कर पाना रचनाकार के लिए हमेशा एक चुनौती रहा है। इस चुनौती से तमाम रचनाकार जूझते रहे हैं और अपनी मौलिकता स्थापित करते रहे हैं। अपनी मौलिकता स्थापित करने में जो जितना सफल रहा है, उसे उतना ही बड़ा रचनाकार माना गया है और उसकी रचनाएँ उतनी ही विशिष्ट और स्थाई महत्व की मानी गई हैं। इसीलिए साहित्य में रूढ़ अभिव्यंजना वाली रचनाओं की अपेक्षा उन रचनाओं को अधिक महत्व मिलता है जिनमें मौलिक अभिव्यंजना होती है। तीसरी कसम में प्रेम का अनुभव भी मौलिक है और उसकी अभिव्यंजना भी मौलिक है। इसमें अभिव्यक्ति पाने वाला प्रेम घटित भी मौलिक परिवेश में होता है।"[1]

यहाँ यह लम्बा उद्धरण हमें यह संकेत करता है कि 'तीसरी कसम' की अंतर्वस्तु उस प्रेमानुभव की भावभूमि है जो निश्छल है। इस अनूठी प्रेम कथा के केन्द्र में चालीस साल की आयु का गाड़ीवान हीरामन और मथुरामोहन नौटंकी कंपनी की अभिनेत्री हीराबाई है। तीसरी कसम मे हीरामन तीन कसमे खाता है पहली कसम यह है कि अपनी बैल गाड़ी पर चोर बाजारी के माल की लदनी नहीं करेगा। इसका कारण है जेल जाने का डर एक बार चोर–बाजारी के माल की लदनी मे वह अपनी बैलगाडी खो चुका है,इसी बैलगाड़ी खोने के डर से वह अब हर भाड़ेदार से पहले ही पूछ लेता है– 'चोरी–चमारी वाली चीज तो नहीं ? हीरामन की दूसरी कसम अपनी बैलगाड़ी पर बॉस की लदनी नहीं करने की है। कारण, बॉस की लदनी में गालियाँ और घुड़कियाँ सुननी पड़ती हैं और वह किसी की घुड़कियाँ सह नहीं सकता, किसी की गाली नहीं सुन सकता।

हीरामन की तीसरी कसम अपनी बैलगाड़ी पर कम्पनी की औरत को बैठाकर नहीं ले जाने की है। उसकी यही तीसरी कसम, 'तीसरी कसम' कहानी को अद्भुत प्रेमकथा में रूपांतरित कर कहानी को अमर कर देता है साथ ही हीरामन और हीराबाई को भी अमर कर देता है। हीरामन की बैलगाड़ी में एक जनाना सवारी है,

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

संपादकीय (1) 7

संपादकीय (2) 9

आलेख

1. राष्ट्रीय अस्मिता और हिन्दी 11
   डॉ. शिवशरण कौशिक
2. वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का स्वरूप 16
   डॉ. राम किंकर पाण्डेय
3. राष्ट्रकवि दिनकर का राष्ट्रवाद 20
   प्रोफेसर महन्द्र प्रसाद सिंह
4. आधुनिक मराठी साहित्य 26
   डॉ. बलीराम धापसे
5. तुलसी का रामराज्य : पाठ–कुपाठ 34
   डॉ. निरंजन कुमार यादव
6. गाँधी रहेंगे, जैसे बुद्ध रहे हैं 42
   प्रोफेसर हितेन्द्र पटेल
7. गाँधी की नजरों में जापान 47
   डॉ. वेदप्रकाश सिंह
8. भक्तिकालीन कवियों का रेख़्ता–काव्य 53
   डॉ. पंकज पराशर
9. उत्तराखण्ड में भू–जल संसाधन एवं प्रबंधन की राजनीति 56
   हरीश दत्त
10. रेत हूँ, ढेर नहीं : थार की एक झलक 59
    डॉ. मनीषा चौधरी
11. मध्यकालीन राजस्थान में ठिकाना व्यवस्था की स्थापना 63
    हेमन्त चौहान
12. सांस्कृतिक वैशिष्ट्य से समादृत लोकभूमि : नागालैण्ड 68
    डॉ. कुमार वरुण

Scanned by CamScanner

ISSN 2349-4905

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का स्वरूप

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

प्रस्तावना

भारतीय संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया। सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप को मान्यता प्रदान की गयी। साथ ही 1965 ई. तक अंग्रेजी भाषा का प्रावधान रखा गया। लेकिन बाद में संशोधन कर इसे आगे के लिए बढ़ा दिया गया। आज हिन्दी भारत के अलावा कई देशों में व्यवहृत हो रही है। दुनिया के कई छोटे बड़े देशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। दुनिया में अनेक देशों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में भारतीय मूल के नागरिकों और हिन्दी भाषा की उपस्थिति अब प्रभावी मानी जा रही है। इस बड़े फलक पर चहुँमुखी चुनौतियों और प्रतियोगिताओं के बीच से उभर–उभरकर अब भारतीय मूल के अनगिनत प्रवासी अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध करते हुए हिन्दी भाषा को सृजन और अभिव्यक्ति का माध्यम बना रहे हैं।

विवेचना

आज वैश्वीकरण, ग्लोबलाइजेशन या भूमण्डलीकरण का अर्थ है, विश्व में चारों ओर अर्थव्यवस्थाओं का बढ़ता हुआ एकीकरण। वास्तव में यह एक आर्थिक अवधारणा है जो आज एक सांस्कृतिक और बहुत कुछ अर्थों में भाषायी संस्कार से भी जुड़ चुकी है। वैश्वीकरण आधुनिक विश्व का वह स्तम्भ है जिस पर खड़े होकर दुनिया के हर समाज को देखा, समझा और महसूस किया जा सकता है। वैश्वीकरण आधुनिकता का वह मापदण्ड है जो किसी भी व्यक्ति समाज राष्ट्र को उसकी भौगोलिक सीमाओं से परे हटाकर एक समान धरातल उपलब्ध कराता है, जहाँ वह अपनी पहचान के साथ अपने स्थान को पुष्ट करता है। वैश्वीकरण के प्रवाह में आज कोई भी भाषा और साहित्य अछूता नहीं रह गया है, वह भी अपनी सरहदों को पारकर विश्व भर के पाठकों तक अपनी पहचान बना चुका है जिसमें दुनिया भर के प्रबुद्ध पाठक भी एक दूसरे से जुड़ सके हैं और साहित्य का वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन संभव हो सका है।

हिन्दी भारतवर्ष की प्रमुख भाषा है। आंकड़े बताते हैं कि देश में हिन्दी को मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वाले भारतीयों का प्रतिशत लगभग 43 है। यह मातृभाषा के रूप में बोलने वालों का आंकड़ा है, यदि हम संपर्क और द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग करने वाले भारतीयों की संख्या भी इसमें जोड़ दें तो इसका प्रतिशत बहुत अधिक बढ़ जाता है। भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में बसने वाले लोगों की संपर्क भाषा हिन्दी है। उत्तर से दक्षिण में बसने वाले लोगों और दक्षिण से उत्तर पूर्व में बसने वाले लोगों की संपर्क भाषा भी हिन्दी ही है। हिन्दी के अतिरिक्त कोई और भाषा इस देश की संपर्क भाषा हो भी नहीं सकती है। इस संदर्भ में हम यह रेखांकित कर सकते हैं कि अंग्रेजी तो बिल्कुल भी देश की संपर्क भाषा नहीं बन सकती क्योंकि यह देश की जनसंख्या की एक प्रतिशत से भी कम लोगों की मातृभाषा है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गाँधीजी ने इस स्थिति को पहचानते हुए ही कहा था कि – "कांग्रेस अधिवेशन की कार्यवाही केवल हिन्दी में होगी, क्योंकि सम्पूर्ण राष्ट्र तक यदि हमें कांग्रेस का संदेश पहुंचाना है तो यह केवल हिन्दी के माध्यम से ही संभव हो सकता है।"[1]

Scanned by CamScanner

15. असमिया साहित्य में गांधी विचारधारा 106
प्रो. दिनेश कुमार चौबे

16. हिन्दी नाट्य साहित्य में गाँधी दर्शन 112
डॉ. राकेश शुक्ल

17. हिन्दी साहित्यकार 'दिनकर' की दृष्टि में गांधीवाद-एक वृहत चिंतन परम्परा 118
महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन
प्रो. दीपेन्द्र सिंह जडेजा

18. स्वाधीनता का महानायक गांधी : काव्य दर्पण में 123
डॉ. बाबूराम

19. मगही के प्रबंध एकार्थ काव्य 'गाँधी' 131
डॉ. भरत सिंह

20. कविगुरु एवं महात्मा होने का अर्थ 140
डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी

21. केरल में हिन्दी के प्रचार प्रसार में गांधीजी का योगदान 145
डॉ. इन्दू के.वी.

22. गाँधी-गुण : एक साहित्यिक धरोहर 148
डॉ. मीता शर्मा

23. प्रासंगिकता की चुनौतियों से टकराता गाँधीवाद 155
डॉ. अनिल राय

24. गाँधी-चिंतन और हिन्दी कविता 162
प्रो. वशिष्ठ अनूप

25. भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष और महात्मा गाँधी की पत्रकारिता 169
डॉ. राम किंकर पाण्डेय

26. महात्मा गाँधी और चंपारण सत्याग्रह 176
डॉ. हरेकृष्ण तिवारी

27. हिन्दी गज़ल-साहित्य में गाँधी-दर्शन की अनुगूँज 179
(भानुमित्र कृत गज़ल-ग्रन्थ के विशेष सन्दर्भ में)
डॉ. अरविन्द कुमार जोशी

28. गांधी जी के विचारों का हिन्दी काव्य में चिंतन 190
डॉ. कामिनी ओझा

Scanned by CamScanner

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष और महात्मा गाँधी की पत्रकारिता

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

भारतीय स्वाधीनता संघर्ष विश्व का अद्वितीय स्वतंत्रता संग्राम था जिसका उद्देश्य न केवल आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था बल्कि सांस्कृतिक स्वतंत्रता और अपनी अस्मिता की रक्षा करना भी था। भारत में ब्रितानी हुकूमत केवल राजनीतिक दासता की नहीं बल्कि सांस्कृतिक पराधीनता का भी द्योतक थी। भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के मध्य महात्मा गाँधी का आगमन एक युगांतरकारी घटना थी। उन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान आजादी प्राप्ति हेतु सत्य, अहिंसा, विश्वबंधुत्व, शांति तथा सत्याग्रह के जिन सार्वभौमिक मूल्यों की स्थापना की वे पूरे विश्व के लिए अमूल्य बन गए। महात्मा गाँधी ने भारत की सांस्कृतिक पराधीनता के प्रति अपनी चिंता व्यक्त करते हुए उसके खिलाफ संघर्ष किया।

भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के परिदृश्य में गाँधी का आगमन एक अभूतपूर्व घटना थी। गाँधी के आगमन से पूर्व 1857 का विद्रोह हो चुका था जिसे हम प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नाम से जानते हैं। इसमें लाखों सैनिकों, कारीगरों, श्रमिकों तथा किसानों ने विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए मिला-जुला प्रयास किया था। 1857 के संग्राम पर टिप्पणी करते हुए इतिहासकार विपिन चंद्र लिखते हैं -"यह विद्रोह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। यह लगभग एक शताब्दी से ब्रिटिश नीतियों और साम्राज्यवादी शोषण के प्रति असंतोष का परिणाम था। इस असंतोष ने अंग्रजों के विरोध का मार्ग दिखाया, जो हमारी सांस्कृतिक व मानवीय मूल्यों के दमन का परिणाम था। मेरठ से चलकर दिल्ली पर कब्जा लगभग सभी बड़े-छोटे नगरों का नेतृत्व करने लगा। कानपुर में बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहब ने विद्रोहियों की कमान संभाली। बरेली में खान बहादुर ने रहनुमाई की। बिहार के जगदीशपुर में सत्तर वर्षीय बाबू कुंवर सिंह ने अंग्रजों के छक्के छुड़ाए। झांसी में रानी लक्ष्मीबाई के मैदान संभालने के बाद अंग्रेजों को मुंह की खानी पड़ी। इस तरह सिपाहियों के विद्रोह और कसमसाती जनता के विद्रोह के संगम से उपजा 1857 का आंदोलन समूची जनता का अप्रत्याशित विद्रोह था।"[1]

महात्मा गाँधी के भारत आगमन से पूर्व भी देश के लगभग सभी प्रमुख क्षेत्रों से अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में पत्र निकल रहे थे। इनमें प्रमुख रूप से थे मद्रास में 'हिन्दू' महाराष्ट्र में 'मराठा', बंगाल में 'युगांतर', 'भारत मित्र', हितवार्ता आदि। इसके अतिरिक्त देवनागर, नृसिंह, कलकत्ता समाचार, विश्वमित्र, आदि पत्र निकल रहे थे जो खुलेआाम बगावत का बिगुल बजाकर, अंग्रेजी राज को चुनौती दे रहे थे। उस समय पंडित मदनमोहन मालवीय के 'अभ्युदय', अरविंद घोष के 'कर्मयोगी' पंडित कृष्णदत्त पालीवाल के 'सैनिक' आदि को पढ़ना ब्रिटिश शासन की नजर में अपराध माना जाता था। 1913 में कानपुर के गणेश शंकर विद्यार्थी का 'प्रताप' इलाहाबाद का 'स्वराज्य' आदि ने आजादी की लड़ाई में बलिदानी की भूमिका का निर्वहन किया। 'आज' (1920) और देश का स्वाधीनता संग्राम अनेक अंशों में समानांतर चले।[2] अर्थात स्वतंत्रता आंदोलन की पत्रकारिता का मात्र उद्देश्य था पूरे देश के अंदर स्वाभिमान और आत्मगौरव की चेतना का संचार करके उसके अंदर की सोई शक्ति को स्वतंत्रता

Scanned by CamScanner

28. **प्रसाद के नाटकों में अभिनेयता** 199
डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, एल.एस.एम.रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़
उत्तराखण्ड

29. **जयशंकर प्रसाद के काव्य में मानवीय संवेदना व सौंदर्य बोध** 203
डॉ. प्रीती सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
हिमांचल प्रदेश

30. **छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में राष्ट्रीय जागृति** 208
डॉ. अश्विनी कुमार
सहायक प्राध्यापक, मधुपुर महाविद्यालय, मधुपुर, एस.के.एम. विश्वविद्यालय, दुमका
झारखंड

31. **जयशंकर प्रसाद का जीवन दर्शन - कामायनी के सन्दर्भ में** 211
डॉ. अंशु शुक्ला
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
महाराष्ट्र

32. **बहुविज्ञ, बहुकाव्यधर्मी छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद विमर्श एवं विश्लेषण** 216
डॉ. रवि कुमार गोंड़
हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
हिमांचल प्रदेश

33. **जयशंकर प्रसाद कृत 'कंकाल' का अनुशीलन** 226
डॉ. राम किंकर पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, हिंदी, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिरमिरी, कोरिया
छत्तीसगढ़

34. **जयशंकर प्रसाद के नाटक में चित्रित स्कंदगुप्त** 231
डॉ. देव्यानी महिड़ा
प्राध्यापिका, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, एन.एस.पटेल आर्ट्स कॉलेज, आणंद
गुजरात

Scanned by CamScanner

जयशंकर प्रसाद कृत 'कंकाल' का अनुशीलन

डॉ. राम किंकर पाण्डेय*

जयशंकर प्रसाद की ख्याति हिन्दी साहित्य में एक कवि, नाटककार तथा कहानीकार के रूप में निर्विवाद रही है। उनके निबंध तथा साहित्य समीक्षा संबंधी लेखन को भी पर्याप्त प्रसिद्धि मिली है। लेकिन एक उपन्यासकार के रूप में प्रसाद का लेखन अत्यल्प ही कहा जाना चाहिए, फिर भी प्रसाद जी का साहित्यिक व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली और शक्तिशाली है कि उनकी प्रत्येक रचना हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण हो उठी है। जयशंकर प्रसाद साहित्य को केवल मनोरंजन के स्तर पर स्वीकार नहीं करते, अपनी इसी बात को पुष्ट करते हुए वे लिखते हैं -"संसार को काव्य से दो तरह के लाभ पहुँचते हैं - मनोरंजन और शिक्षा।"[1]

प्रसाद ने कुल तीन उपन्यास लिखे हैं -कंकाल और तितली (पूर्ण) तथा इरावती अधूरा है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में इन तीनों का अपना अलग स्थान है। 'कंकाल' का प्रकाशन वर्ष 1929 ई. में हुआ था। उपन्यास के प्रकाशकीय वक्तव्य में प्रसाद जी लिखते हैं - इस उपन्यास द्वारा हिन्दी में एक परिवर्तन का प्रारंभ होगा। अब तक के उपन्यासों का उद्देश्य रहा है या तो मनोरंजन या उन आदर्श चरित्रों को चित्रित कर देना जो समाज द्वारा मनोनीत हुए हैं, किंतु 'कंकाल' दिखलाता है कि समाज जिन्हें अपने दुर्बल पैरों से ठुकरा देने की चेष्टा करता है, उनमें कितनी महत्ता छिपी रहने की संभावना है और आदर्श मानकर जिनका गुणगान करता है, उनमें पतन भी हो सकता है।" 'कंकाल' में उपन्यासकार मध्यवर्गीय जीवन को संपूर्णता में अभिव्यक्त करता है, वास्तव में यह उपन्यास तत्कालीन समाज में चल रही सामाजिक, धार्मिक और सांसारिक मनो-वृत्तियों का तटस्थ और यथार्थ अंकन करता है।

उपन्यास का आरंभ कौतूहल और आश्चर्य के साथ होता है, प्रयाग के कुंभ पर्व के चित्रण से जिस तरह उपन्यास की शुरुआत होती है वह हिन्दी उपन्यास के लिए नई बात थी। एक हँसमुख युवती, खिन्न पुरुष और शांत नौकर उस संन्यासी के निकट पहुँचते हैं जो आत्म संयम में डूबा हुआ है। निशा की निस्तब्धता में उस युवती का अल्हड़ सौंदर्य महात्मा के हृदय में भी हिलोर पैदा कर देता है। नदी तट पर पौधे को सींच रहे दो किशोरों को नियति अचानक अलग कर देती है, कालांतर में वही किशोर देव निरंजन के रूप में तेजस्वी महात्मा बन जाता है। आज वही किशोरी अल्हड़ युवती के रूप में उसके समक्ष पुत्र कामना हेतु उपस्थित है। उसे देखकर देव निरंजन आज अशांत है, उसका मन उत्तल तरंगे भरने लगता है। वह शांति की तलाश में किशोरी के मदभरे यौवन और रूप लावण्य के आगे आत्म समपर्ण कर देता है –"तुमको पाने के लिए ही जैसे आज तक तपस्या करता रहा, यह संचित तप तुम्हारे चरणों में निछावर है। संतान, ऐश्वर्य और उन्नति देने की मुझमें जो कुछ शक्ति है, वह सब तुम्हारी है।"[2]

आगे चलकर उपन्यास कई घटनाओं के वृत्तांत स्वरूप आगे बढ़ता है। जिनमें कहीं-कहीं तारतम्य का अभाव भी दिखता है। तारा के पिता का घमंड और अहंकार समाज की विकृतियों और विरूपताओं को उजागर करता है। वह समाज और धर्म के भय से ग्रस्त है। पारिवारिक विघटन को उपन्यास सशक्त

* सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिरमिरी, कोरिया, छत्तीसगढ़

Scanned by CamScanner

19.	भारत व राजस्थान में कृषक आत्महत्या की समस्या : एक अध्ययन	डॉ0 मंजू यादव राजेन्द्र मीणा	75
20.	शाम्भवी मुद्रा का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	गुंजन शर्मा आकाश प्रसाद कोटनाला	78
21.	पुनर्नवा का पुनः अवलोकन	डॉ0 पल्लवी	83
22.	आधुनिक हिन्दी कविता : प्रारम्भ एवं परवर्ती विकास	डॉ0 राम किंकर पाण्डेय	87

Scanned by CamScanner

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
SHODH SARITA
SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 28, October-December 2020
Page Nos. 87-90
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

आधुनिक हिन्दी कविता : प्रारम्भ एवं परवर्ती विकास

डॉ0 राम किंकर पाण्डेय*

शोध सारांश

हिन्दी की आधुनिक कविता की शुरूआत ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ी बोली के प्रयोग से होती है। खड़ी बोली के प्रयोग के साथ ही आधुनिक हिन्दी कविता अपने शिल्प और संवेदना में बहुधर्मी और विविधवर्णी हो जाती है। अपने पूर्ववर्ती कालों आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल की तुलना में उसका स्वर और संरचना पूरी तरह से भिन्न है। हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में काव्य रचना से पहले गद्य का विकास दिखाई देता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास में भी विकास क्रम के अनुसार गद्य का प्रकरण पहले आता है। हालांकि परवर्ती इतिहासकारों के यहाँ कविता का प्रकरण पहले है। इतिहास लेखन में आया हुआ यह परिवर्तन गद्य साहित्य की तुलना में कविता के उत्तरोत्तर मजबूत होने का परिचायक है। वास्विकता यह है कि खड़ी बोली कविता के लिए जो जमीन भारतेंदु युग में तैयार हुई थी। उसे आगे चलकर कई रचनाकारों ने समृद्ध किया। इन रचनाकारों में श्रीधर पाठक, मैथलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', राम नरेश त्रिपाठी, सियाराम शरण गुप्ता, गया प्रसाद शुक्ल सनेही, नाथूराम शंकर शर्मा, राय देवी प्रसाद पूर्ण, माखनलाल चतुर्वेदी आदि प्रमुख हैं। वास्तव में ये सभी कवि आधुनिक हिन्दी कविता के परम्परा निर्माता कहे जा सकते हैं। आज हिन्दी कविता की जो विशाल और बहुमंजिली इमारत हमें दिखाई देती है उसके निर्माण में इन सभी कवियों का योगदान अतुलनीय है।

Keywords : परम्परा, कविता, आधुनिक, ब्रजभाषा, इतिहास, शिल्प, संवेदना, योगदान, प्रकरण, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, संरचना।

हिन्दी की आधुनिक कविता की शुरूआत ब्रजभाशा को छोड़कर खड़ी बोली के प्रयोग से होती है। खड़ी बोली के प्रयोग के साथ ही आधुनिक हिन्दी कविता अपने शिल्प और संवेदना में बहुधर्मी और विविधवर्णी हो जाती है। अपने पूर्ववर्ती कालों आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल की तुलना में उसका स्वर और संरचना पूरी तरह से भिन्न है। हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में काव्य रचना से पहले गद्य का विकास दिखाई देता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास में भी विकास क्रम के अनुसार गद्य का प्रकरण पहले आता है। हालांकि परवर्ती इतिहासकारों के यहाँ कविता का प्रकरण पहले है। इतिहास लेखन में आया हुआ यह परिवर्तन गद्य साहित्य की तुलना में कविता के उत्तरोत्तर मजबूत होने का परिचायक है। वास्विकता यह है कि खड़ी बोली कविता के लिए जो जमीन भारतेंदु युग में तैयार हुई थी। उसे आगे चलकर कई रचनाकारों ने समृद्ध किया। इन रचनाकारों में श्रीधर पाठक, मैथलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', राम नरेश त्रिपाठी, सियाराम शरण गुप्ता, गया प्रसाद शुक्ल सनेही, नाथूराम शंकर शर्मा, राय देवी प्रसाद पूर्ण, माखनलाल चतुर्वेदी आदि प्रमुख हैं। वास्तव में ये सभी कवि आधुनिक हिन्दी कविता के परम्परा निर्माता कहे जा सकते हैं। आज हिन्दी कविता की जो विशाल और बहुमंजिली इमारत हमें दिखाई देती है उसके निर्माण में इन सभी कवियों का योगदान अतुलनीय है।

आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख विशेषता समाज और राष्ट्र की ओर उन्मुख होना है। डॉ. राम स्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं –"हिन्दी साहित्य के अलग–अलग कालों में अलग–अलग मानवीय वृत्तियॉं रचना की प्रेरक रही हैं। कभी यह वृत्ति राजा अपना आश्रयदाता की वीरभावना थी, तो कभी भक्ति और फिर कभी श्रृंगार। आधुनिक काल के आरंभ से यह वृत्ति राष्ट्रीयता की रही है, जिसके सर्वाधिक सशक्त और प्रतीक कवि मैथलीशरण गुप्त कहे जा सकते हैं। यह राष्ट्रीय भावना भी आगे चलकर फिर क्रमशः रूपांतरित होती गई है – देश प्रेम से देश भक्ति और फिर भारतेंदु के प्रयोग में देश वत्सलता जो क्रमशः राष्ट्रीयता का उग्र रूप धारण करती है, पर क्रमशः परवर्ती कवियों में सांस्कृतिक चेतना के स्तर पर विकसित हुई जन–अस्मिता की पहचान बन जाती है ।"[1]

हिन्दी कविता के प्रथम उत्थान में जब ज्यादातर कवि ब्रजभाषा बनाम खड़ी बोली के विवाद में पड़े थे, तब श्रीधर पाठक दोनो बोलियों में समान अधिकार से रचना कर रहे थे। एक तरह

*सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिरमिरी, जिला – कोरिया (छ0ग0)

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

थिएटर के मरजीवा अरुण पाण्डेय हम तुझे वली हैं समझे – गोकि बादाख़्वार है तू...!!
सत्यदेव त्रिपाठी 5

विष्णु प्रभाकर की अमर कृति : आवारा मसीहा
प्रकाश मनु 19

अकादमिक ऊँचाइयों को छूता शोध-सृजन का प्रेमचंद विशेषांक
डॉ. वेद मित्र शुक्ल 28

मेरा सावन सूना है
जयराम जय 30

माफी
अनूपा सिंह 31

काशीनाथ सिंह की कहानियों का बदलता हुआ पाठ-संदर्भ और हमारा समय-समाज
संजय कुमार सिंह 36

गोरखनाथ की साहित्य साधना
प्रो.दीपक प्रकाश त्यागी, डॉ. विवेक प्रकाश सिंह 41

दफ़न-भूमि का सोना
अण्णा भाऊ साठे, अनुवाद- जनार्दन 48

प्रकृति और पुरुष के सामंजस्य के कवि श्री प्रकाश मिश्र
प्रो. शिव प्रसाद शुक्ल 53

प्रेमचंद का रचनात्मक प्रदेय
डॉ.पूर्ण चन्द्र माइती 56

'शोध- सृजन' का प्रेमचंद विशेषांक संरक्षणीय अंक
प्रो. प्रतिभा राजहंस 58

यथार्थ अनुभूतियों के कथाकार: प्रेमचंद
ताराकांत झा 60

रस्म पगड़ी
हीरालाल नागर 62

हिन्दी साहित्य के विकास में प्रगतिशील चिन्तन की भूमिका
सेवाराम त्रिपाठी 70

अभिशप्त लोक का आत्मसंघर्ष
डॉ वेदप्रकाश अमिताभ 75

लड़की
रामदरश मिश्र 77

दोपहर का भोजन: मध्यवर्गीय जीवन का आख्यान
डॉ. राम किंकर पाण्डेय 79

समधिनें
डॉ. रंजना जायसवाल 82

बौद्धिक-प्रक्रिया के आईने में राजा राममोहन राय की संपादन-कला के क्रियात्मक आयोजन
राम आह्लाद चौधरी 85

Scanned by CamScanner

दोपहर का भोजन: मध्यवर्गीय जीवन का आख्यान

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

अमरकांत हिन्दी कथा साहित्य के उन विरले कथाकारों में से हैं जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन का जीवंत आख्यान प्रस्तुत किया है। वे नयी कहानी आंदोलन के दौर के महत्त्वपूर्ण कहानीकार हैं । उनकी कहानियों में मध्यवर्ग के दारुण यथार्थ और जिजीविषा, घनीभूत पीड़ा और जीवन संघर्ष का अंतरंग चित्रण मिलता है। इस संबंध में डॉ. नामवर सिंह ने कहा है -''अमरकांत ने अपनी कहानियाँ यहीं से उठायी हैं और इस तरह हमारी आँखों में हमारी ही जिन्दगी के जाने कितने पर्दे उठ गए हैं। इस क्षेत्र में अमरकांत की कहानियाँ किसी भी नए लेखक के लिए चुनौती हैं।'' उनकी कहानियों का कथानक और उसकी शैली सहज और स्वाभाविक होती है, कथा की बुनावट जीवन-संघर्ष के नजदीक और यर्थाथ से संपृक्त होती है। उनकी प्रसिद्ध कहानियों 'डिप्टी कलक्टरी', जिन्दगी और जोंक', 'मकान', 'दोपहर का भोजन', आदि ऐसी कहानियाँ हैं जो जीवन की जटिलताओं को समेटते हुए उसके समग्र यथार्थ का उद्घाटन करती हैं।

'दोपहर का भोजन' कहानी का प्रकाशन 1956 ई. में हुआ था और हिन्दी कहानी में यह दौर नयी कहानी का था साथ ही भारत के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण में यह समय मोहभंग का भी था। आजादी के बाद का पहला और दूसरा दशक मध्यवर्ग के लिहाज से मोहभंग का ही समय था। यह मोहभंग के देश के स्वाधीनता संघर्ष के दौरान देखे गए उन सपनों का था, जिनके पूरे होने की उम्मीद देशवासी लगाए हुए बैठे थे। लेकिन तत्कालीन नीतियों के कारण वे सपने पूरे नहीं हो सके थे और अधिकांश देशवासी अपने को ठगा सा महसूस कर रहे थे। नयी कहानी के कहानीकारों ने इस मोहभंग, घुटन, संत्रास, पीड़ा और संघर्ष को अपनी कहानियों में यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

अमरकांत की कहानी 'दोपहर का भोजन' मध्यवर्ग की टूटन, घुटन गरीबी, संत्रास और बेरोजगारी से उपजी पीड़ा की दारुण और दुखद स्थितियों की सघन अभिव्यक्ति है। 'दोपहर का भोजन' कहानी आकार में छोटी है,लेकिन अपने प्रभांव और सघनता में बड़ी है। वास्तव में यह एक बड़े फलक की कहानी है, कथा के माध्यम से लेखक मध्यवर्गीय परिवार की लाचारी और स्त्री की दुखभरी कथा को भी उठाता है। सिद्धेश्वरी के माध्यम से लेखक यह बताने की कोशिश करता है कि मध्यवर्गीय परिवार में सर्वाधिक दुख स्त्री को ही भुगतना पड़ता है। इसकी पुष्टि कहानी के आरंभ में ही इस कथन से होती है -''सिद्धेश्वरी ने खाना बनाने के बाद चूल्हे को बुझा दिया और दोनों घुटनों के बीच सिर रखकर शायद पैर की अंगुलियों या जमीन पर चलते चींटे-चींटियों को देखने लगी। अचानक उसे मालूम हुआ कि बहुत जोर से उसे प्यास लगी है, वह मतवाले की तरह उठी और गगरे से लोटा भर पानी लेकर गट-गट चढ़ा गयी। खाली पानी उसके कलेजे में लग गया और वह 'हाय राम' कहकर वहीं जमीन पर लेट गयी।'' यहाँ पता चलता है कि सिद्धेश्वरी किस कदर बेबस और किंकर्तव्यविमूढ़ है। सिद्धेश्वरी की स्थिति देखकर हमें उसके पूरे परिवार की हालत का पता चल जाता है। भूख से वह व्याकुल है इसलिए एक लोटा पानी पीकर रह जाती है। कमजोरी के कारण वह मतवाले की तरह चलती है। यहाँ इस बात की पुष्टि भी होती है कि जब वह पानी पीती है, तो पानी उसके कलेजे में लग जाता है और वह दर्द से बेहाल होकर वहीं निढ़ाल होकर लेट जाती है।

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

संपादकीय 3

प्रेमचन्द और फ़िल्म साहित्य एक समीक्षात्मक अध्ययन ▪ डॉ. लता अग्रवाल 5

अभिषेक त्रिपाठी की कविताएँ ▪ कालां जादू 10

कोरोना- एक प्रेम गाथा ▪ डा .महिमा श्रीवास्तव 11

पर्यावरण ▪ रामदरश मिश्र 13

ज़हीर कुरेशी की ग़ज़लों में बीसवीं सदी के नारी-मन की खुलती किताब ▪ डॉ. मधुकर खराटे 14

पार्थक्य ▪ अमित कुमार 18

प्रवासी हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति ▪ डॉ. (श्रीमती) काकोली गोराई 21

भारतेंदु और नए ज़माने की मुकरियाँ ▪ डॉ० सुनीता साव 23

आत्मकथ्य: मैं और मेरी बाल कविताएँ ▪ प्रकाश मनु 26

रामनरेश त्रिपाठी का काव्य वैविध्य ▪ डॉ. राम किंकर पाण्डेय 36

कविता ▪ लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता 41

समकालीन हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर भीष्म साहनी ▪ डॉ. एस. ए. मंजुनाथ 42

साध्वी मीराबाई की मर्दानगी ▪ अक्षय चैतन्य 46

लाल सिंह: सांस्कृतिक चेतना का मुख्य स्वर शोध-सृजन निर्माण
की संस्कृति का वाहक शोध-सृजन: शैलेश सिंह ▪ मधुरिमा भट्टाचार्जी 51

पाहुड़दोहा: अपभ्रंश का जैन रहस्यवादी काव्य ▪ डॉ. अभिजीत भट्टाचार्य 53

शोध-सृजन - समीक्षा-दिसंबर, 2020 ▪ डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी 64

यह प्रेम कथा नहीं है ▪ शाश्वत रतन 65

विवेकानंद के दर्शन के आलोक में निराला की कविताएँ ▪ डॉ. सुनील कुमार 71

सर विलियम जोंस की 275 वीं सालगिरह
साहित्य की वैज्ञानिक अर्थवत्ता संदर्भ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य ▪ राम आह्लाद चौधरी 78

Scanned by CamScanner

रामनरेश त्रिपाठी का काव्य वैविध्य

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

बहुमुखी प्रतिभा के धनी समर्थ रचनाकार पंडित राम नरेश त्रिपाठी का रचना काल पचास वर्ष की कालावधि में फैला हुआ है। उन्होंने इस दौरान साहित्य की विविध विधाओं में अधिकार पूर्वक रचनाएँ की है। त्रिपाठी जी कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, कोशकार, टीकाकार, आलोचक,सम्पादक, चरित लेखक, व्यंग्य लेखक, बाल साहित्यकार, शिक्षण साहित्य लेखक, इतिहास लेखक, सूक्तिकार, वैयाकरण एवं भाषाविद, यात्रा वृत्तांतकार के साथ-साथ संगीत, विज्ञान, अनुवाद, संस्कृति, राजनीति एवं ग्राम्य गीतों के संकलनकर्ता और लेखन मोर्चे पर आजीवन तैनात रहे। द्विवेदी युग और छायावाद के संधि-स्थल पर खड़े त्रिपाठी जी खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में सजाने संवारने वालों में अग्रगण्य रहे हैं। आलोचक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी काव्य' में लिखते हैं - ''अतः साहित्य के जितने अंगों पर त्रिपाठी जी ने रचना की है उतने अंगो पर साहित्य के किसी लेखक की लेखनी ने काम नहीं किया है। इस क्षेत्र में त्रिपाठी जी अद्वितीय हैं।''1 जब हम त्रिपाठी जी के रचना-संसार पर दृष्टि डालते हैं तो देखते हैं कि उनके रचनाकार का कवि रूप हमारे सामने सर्वाधिक मुखरित होकर आता है। उन्होनें अपनी रचनाओं के माध्यम से देश-प्रेम की भावना का प्रसार करने के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना के प्रसार का भी कार्य किया है।

त्रिपाठी जी की प्रकाशित काव्य कृतियों में मिलन (1917ई.), पथिक (1920 ई.) और स्वप्न (1928 ई.) चर्चित रहे हैं। उन्होंने अपने इन तीनों खंड काव्यों की य पृष्ठभूमि पर ही किया है। 'मिलन' एक तरह से रा य जागरण का स्वर मुखरित करता है। उसका कथानक तत्कालीन राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ता है। इसमें चित्रित विदेशी शासक और क्रूर कर्मचारियों के अत्याचार की छवि हम अंग्रेजी शासन में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। एक तरह से मिलन में स्वतंत्रता पूर्व भारत के यथार्थ की झांकी हम देख सकते हैं। नायक

आनंद कुमार और पत्नी विजया का देश भ्रमण और देशवासियो में जन जागृति का प्रसार करने की भावना में महात्मा गॉधी का प्रभाव स्पष्ट है। 'मिलन' का कथानक कुछ इस तरह से बुना गया है जिसमें हमें तत्कालीन स्वाधीनता संघर्ष और उसके परिणाम का पूर्वाभास दिखाई देता है। नायक आनंद कुमार और उसकी पत्नी विजया के परिश्रम स्वरूप जनता में विद्रोह की भावना का उदय होता है, राजा और प्रजा के बीच भयानक संघर्ष होता है जिसमें साधु की मृत्यु होती है और विदेशी शासक भाग जाते हैं। विदेशियों का पलायन और गुलामी से मुक्ति का सपना त्रिपाठी जी अपनी इस रचना में देखते हैं। 1917 ई. में लिखी हुई रचना में हम 1947 ई. का पूर्वानुमान स्पष्टतः देख सकते हैं। 'पथिक' में भी कर्मशील नायक का संघर्ष शुभ का संदेश लेकर आता है और प्रजातंत्र की स्थापना होती है। स्वप्न में भी विदेशी आक्रमणकारियों को प्रत्युत्तर देने की कहानी है। 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं - ''मिलन, पथिक और स्वप्न नामक इनके तीनों खंड काव्यों में इनकी कल्पना ऐसे मर्म पथ पर चली है, जिस पर मनुष्य मात्र का हृदय स्वभावतः ढलता आया है।''2

राम नरेश त्रिपाठी की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के विविध रूप हैं। परम्परागत देश-प्रेम उनकी कविता में बड़ी सजगता के साथ उद्घाटित हुआ है। उनकी कविता में चल रहे राष्ट्र संघर्ष की ओजस्विनी वाणी मिलती है, सत्य और अहिंसा के लिए प्राणों के बलिदानियों की अमरगाथा मिलती है। राष्ट्रीय कविता की समस्त विधाओं को समेटती हुई उनकी कविता कुछ मूल समस्याओं पर ही विचार करती है। उनके काव्य में देशप्रेम, राष्ट्रीय जागरण एवं स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान, विदेशी शासन की आलोचना तथा सांस्कृतिक गौरव का मुखर गान आदि की सहज अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। राष्ट्रीयता की उत्ताल तरंगो से तरंगायित हृदय के इस महाकवि ने मिलन, पथिक, स्वप्न और अन्य स्फुट संग्रहों के माध्यम से भी विदेशी शासन का डटकर विरोध करते हुए सजग रहने का मूल मंत्र दिया है -

Scanned by CamScanner

40.	उच्च शिक्षा में युवा असंतोष : (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)	प्रतिभा पन्त प्रो0 इला साह	173
41.	वेबसीरीज में प्रदर्शित सेक्स एवं हिंसा का युवाजन पर प्रभाव : एक अध्ययन	डॉ0 प्रतिभा शर्मा	178
42.	भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग में लाभांश नीति की निगमित लाभदायकता पर प्रभाव : भारत में चयनित ऑटोमोबाइल उद्योग का विश्लेषणात्मक अध्ययन	पुनीत कुमार कनौजिया	182
43.	हरियाणा पंचायतीराज में महिलाएं : चुनौतियाँ एवं संभावनाएं	राजकुमार यादव	188
44.	इक्कीसवीं सदी में संस्कृत–वाङ्मय से अपेक्षाएँ एवं चुनौतियाँ	डॉ0 उषा नागर	191
45.	दूतकाव्य परम्परा में 'पत्रदूतम्' का वैशिष्ट्य	महासिंह सोढ़ा डॉ0 हरमल रेबारी	195
46.	विस्थापन की त्रासदी का महावृत्तांत – डूब	डॉ0 राम किंकर पाण्डेय	201
47.	बस्तर के जनजाति आर्थिक जीवन में पारम्परिक जनजाति बाजार की प्रासंगिकता : शोध साहित्य की समाजशास्त्रीय समीक्षा	कविता यदु डॉ0 निस्तर कुजूर	204
48.	इतिहास लेखन में बक्सर जिला की प्राचीनता	मंदीप कुमार चौरसिया	208
49.	विवाहित कामकाजी महिलाओं की समस्याएं : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (लखनऊ जिले की शिक्षिकाओं के विशेष सन्दर्भ में)	रूचि यादव	211
50.	भारत में एफ0एम0सी0जी0 कम्पनी की लाभदायकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन : चयनित एफ0एम0सी0जी0 कम्पनी के सन्दर्भ में	पुनीत कुमार कनौजिया	216
51.	भारत में आरक्षण नीति	डॉ0 गिर्राज प्रसाद बैरवा	222
52.	हिंदी डायरी साहित्य : लेखकों का जीवन संघर्ष	ममता चौधरी	226
53.	अमृतराय के उपन्यासों में विविध आयाम	शिवराम मीणा	230
54.	महर्षि दयानन्द का यज्ञचिन्तन	डॉ0 सुधीर कुमार शर्मा	234
55.	कालिदास का सौन्दर्य सन्निवेश	डॉ0 स्नेहलता शर्मा	238
56.	डॉ. जगदीश गुप्त के काव्य में शिल्प सौन्दर्य	अरविन्द वर्मा	243
57.	सिनेमा में नारी मुक्ति संघर्ष	ममता सैनी	247
58.	स्त्री–विमर्श : वैदिक युग से वर्तमान तक	डॉ0 सतीश कुमार पांडेय	251
59.	शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में स्त्री–पुरुष पात्रों का अनुशीलन	कमलेश चौधरी	254
60.	सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित जीवन की समस्याएं और संघर्ष	अनिता रानी	257
61.	'बंग महिला' की कहानियों में स्त्री–चेतना	डॉ0 श्रुति शर्मा	259

Scanned by CamScanner

ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
शोध संचार बुलेटिन
January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 201-203
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

विस्थापन की त्रासदी का महावृत्तांत - डूब

डॉ0 राम किंकर पाण्डेय*

शोध सारांश

वीरेन्द्र जैन कृत उपन्यास 'डूब' विस्थापन की त्रासदी का महावृत्तांत है। इसका प्रकाशन सन् 1991 ई. में हुआ था। इसमें मध्यप्रदेश के एक पिछड़े क्षेत्र की विस्थापन की समस्या को वृहत्तर संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। आजाद भारत में विभिन्न बिजली परियोजनाओं के माध्यम से एक बड़ी आबादी का विस्थापन हुआ है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक उस क्षेत्र में बिजली परियोजना के माध्यम से 'डूब' क्षेत्र में आने वाली आबादी की पीड़ा का यथार्थ अंकन किया गया है। 'डूब' में चित्रित 'लड़ैई' गाँव प्रतीक बनकर उभरता है उन गांवों का जो इस तरह की विकास परियोजनाओं की भेंट चढ़ जाते हैं। उपन्यासकार ने उपन्यास में किसानों और ग्रामीणों के शोषण का यथार्थ चित्रण किया है। अपने वोट बैंक के जुगाड़ में नेता और राजनीतिक दल किस तरह के षड्यंत्र रचकर ग्रामीणों को धोखा देते हैं यह उपन्यास में बखूबी चित्रित हुआ है। राजनीतिक नेताओं के साथ मिलकर प्रशासनिक अधिकारी भी ग्रामीणों को मिलने वाली मुआवजे की राशि को हड़पने के लिए तैयार बैठे रहते हैं। वास्तव में यह उपन्यास विकास परियोजनाओं से विस्थापित होने वाले समूहों की विडम्बनात्मक और त्रासदी पूर्ण जीवन का महावृत्तांत हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

Keywords : डूब, ग्रामीण, विस्थापन, उपन्यास, परियोजना, शोषण

वीरेन्द्र जैन हिन्दी के उन उपन्यासकारों में शामिल हैं जो सदैव जन सरोकारों से जुड़े रहते हैं। उनकी औपन्यासिक परिधि बहुत विस्तृत है। आलोच्य उपन्यास 'डूब' से पहले उनके कई उपन्यास प्रकाशित हो चुके थे, लेकिन एक सफल उपन्यासकार के रूप में उनकी ख्याति 'डूब' के प्रकाशन से ही हुई। 'डूब' मध्यप्रदेश के एक पिछड़े क्षेत्र की पीड़ा को सशक्त और मजबूत ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत करता है। 'डूब' में चित्रित 'लड़ैई' गाँव भारत के अन्य गाँवों की तरह ही पिछड़ेपन का प्रतीक है। गाँव वालों का निरंतर शोषण व्यवस्था के द्वारा किया जा रहा है। विकास से कोसों दूर यह गाँव सभी सुविधाओं से दूर और अभावग्रस्तता में जी रहा है। गाँव में ऊँची जातियों द्वारा गरीब किसानों का शोषण एक तरफ बदस्तूर जारी है तो दूसरी ओर साहूकारों द्वारा भी वे लगातार ठगे जा रहे हैं। उपन्यासकार ने इन तमाम स्थितियों का वर्णन उपन्यास में विस्तार से किया है।

'लड़ैई' गाँव के बारे में बताते हुए लेखक कहते हैं कि इस गाँव का इतिहास बहुत समृद्ध रहा है। इसका संबंध भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से भी जुड़ता है। पहले इस जगह घना जंगल हुआ करता था, 1857 ई. की लड़ाई के बाद लोगों ने यहाँ अपना डेरा डाला तो इस गाँव का अस्तित्व सामने आया। गाँव की परंपरा बहुत समृद्ध रही है, यहाँ अतिथियों का स्वागत दिल खोल कर किया जाता रहा है, लेकिन आज स्थितियाँ बदल रही हैं। गाँव की इस समृद्ध विरासत पर बात करते हुए लेखक बताते हैं –"कण–कण में बसे भगवान के वे अंश जब यह स्थान खाली कर गए तब बसा यहाँ गुरीला। वहाँ बसा सिद्धपुरा। बाद में लड़ाई के सताए इतने लोग आ गए यहाँ। उन्होने यहाँ बस कर हमारा मान बढ़ाया, इसलिए हमारे तुम्हारे पूर्वजों ने उनकी कृपा को उस उदारता को हमेशा याद रखने की खातिर अपने गाँव का नाम गुरीला से बदलकर रख दिया लड़ैई।"[1] इस तरह से गाँव के समृद्ध इतिहास को सामने रखकर लेखक पाठकों को गाँव से जोड़ने का प्रयास करता है। स्वतंत्र भारत में जिस तरह से विकास का मॉडल गढ़ा गया वह जनता की उम्मीदों के ठीक विपरीत रहा है। विस्थापन की समस्या ऐसे ही विकासवादी माडल का परिणाम रही है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने बेतिया नदी पर राजघाट बाँध परियोजना का स्वप्न देखा था। यह परियोजना रूस के सहयोग से पूरी होने वाली थी। 'लड़ैई' गाँव इस परियोजना के डूब क्षेत्र में आ गया था। गाँव वालों को विस्थापन का दंश झेलना पड़ता है। मुआवजे के लेन–देन में सरकारी महकमे द्वारा भारी खेल किया जाता है। उपन्यास गाँव वालों के दुख–दर्द को पूरी सच्चाई से बयान करता है। उपन्यास का एक पात्र माते कहता है –"लबरी है जा सरकार, महालबरी, झूठी महाझूठी।" आजादी के बाद से ही भारत के गाँव हमारे नेताओं और उनके दलाल वर्ग द्वारा वोट बैंक की राजनीति के

*सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिरमिरी, जिला – कोरिया (छ0ग0)

Scanned by CamScanner

ISSN : 0975-3664 RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH-DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रिव्यूड, रेफर्ड एवं यूजीसी केयर लिस्टेड शोध जर्नल (साहित्य, कला और संस्कृति पर केंद्रित)
(A quarterly peer reviewed, referred, U.G.C. care listed reseach journal of Art & Humanities)
Year 2021 March Vol. 1

अनुक्रम Contents

शीर्षक	लेखक	पृ०सं०
शोध आलेख		
✦ हिन्दी साहित्य		1-167
१. भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी कविता	डॉ. शिवजी उत्तम चवरे	1-6
२. 'आज बाजार बन्द है' : वेश्यामुक्ति की पहल	डॉ. मिनी जोर्ज	7-12
३. आधुनिक हिन्दी कविता में अंतर्विषक संदर्भ	डॉ० मनोज कुमार स्वामी	13-17
४. शिवमूर्ति के 'कुच्ची का कानून' में प्रतिबिंबित ग्रामीण चेतना	डॉ० उमा देवी	18-22
५. कंचन सेठ की कविताओं में सामाजिक यथार्थ	डॉ० गोरखनाथ तिवारी	23-26
६. स्त्री अस्मिता की आदर्श कथाकार कमल कुमार	डॉ० शशिकांत मिश्र	27-33
७. भाषा : एक विमर्श	डॉ० अम्बिका उपाध्याय	34-40
८. तमस उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी	विनोद कुमार मौर्य	41-47
९. पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में राजेश जोशी तथा ज्ञानेन्द्रपति की चिंता (भू–पर्यावरण के विशेष संदर्भ में)	डॉ० सुनीता शर्मा निम्रता	48-56
१०. लीलाधर जगूड़ी के काव्य 'नाटक जारी है' में राजनीतिक चेतना	डॉ० विवेकानन्द पाठक	57-64
११. ब्रज का लोकसाहित्य	डॉ० सूर्यकान्त त्रिपाठी	65-70
१२. बुन्देली लोक काव्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना	सर्जना यादव	71-75
१३. हिंदी और मराठी की गज़ल में सामाजिक विषमता की सशक्त अभिव्यक्ति	डॉ० नवनाथ गाड़ेकर	76-80
१४. देहरी से देह तक पहुँचती : शैलजा पाठक की 'कमाल की औरतें'	डॉ० नीतू परिहार	81-87
१५. परम्परागत ढाँचे से पृथक स्वातंत्र्योत्तर भारत के जीवन का जीवंत दस्तावेज : 'राग दरबारी'	ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी	88-92
१६. नई कहानी आंदोलन के अंतः सूत्रो की पड़ताल	डॉ० राम किंकर पाण्डेय	93-98
१७. २१वीं सदी में मीडिया और हिन्दी का वैश्विक विस्तार	डॉ० अरूण कुमार चतुर्वेदी	99-103
१८. इक्कीसवीं शताब्दी के नवगीत में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	सीमा यादव	104-108
१९. 'एक न एक दिन' : रिश्तों के मर्म पर अर्थतंत्र का निर्मम	मृत्युंजय सिंह	109-116

Scanned by CamScanner

हिन्दी साहित्य

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696
SHODH-DHARA ; Mar 2021; Vol. 1; P. 93-98

नई कहानी आंदोलन के अंतः सूत्रों की पड़ताल

डॉ० राम किंकर पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, **चिरमिरी, कोरिया, छ०ग०**

(प्राप्त - १ दिसंबर २०२०)

Abstract

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में 'नई कहानी आंदोलन' अत्यंत महत्वपूर्ण है। सन् १९५० ई. के आसपास हिन्दी कहानी के शिल्प और संरचना में परिवर्तन दिखाई देने शुरू होते हैं। इसकी नव्यता को पहचान कर इसे 'नई कहानी' की संज्ञा से अभिहित करने का काम कवि दुष्यंत कुमार ने 'कल्पना' पत्रिका के जनवरी १९५५ के अंक में किया था। कहानी के नए सरोकारों और प्रयोगधर्मिता को लेकर डॉ. धर्मवीर भारती ने 'धर्मयुग' में कहानी के बदले हुए स्वरूप को रेखांकित करते हुए मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेन्द्र यादव को नई कहानी आंदोलन के त्रिकोण के रूप में स्थापित किया था। वास्तव में नई कहानी का आग्रह नएपन पर है। इस नएपन के आधार पर उसने अपने को पूर्ववर्ती कहानी से अलगाया है। दरअसल नए कहानीकारों ने यह महसूस किया कि वैचारिक स्तर पर यह मूल्यों के विघटन का दौर है। इस दौर में मोहभंग, अविश्वास, संदेह, भय और आशंका के व्यापार ने आदर्शवाद की सुखद कल्पनाओं से लोगों को अलग कर दिया था। नई कहानी ने संयुक्त परिवार के विघटन, नए शहरी मध्यवर्ग के उदय और पूंजी के बढ़ते वर्चस्व के कारण बढ़ती आर्थिक–सामाजिक विषमता को खासतौर से रेखांकित किया। साथ ही नये मनुष्य, नये दृष्टिकोण, नई संवेदनाओं, नए यथार्थ और नए संदर्भों के चित्रण के लिए नई कहानी को नवीन शिल्प की भी खोज करनी पड़ी।

Figure : 00 References : 16 Table : 00

Key Words: कहानी, नई कहानी, आंदोलन, नई कहानी की विषय भूमि, नई कहानी के अंतः सूत्र।

आमुख :- हिन्दी कहानी के इतिहास में 'नई कहानी' आंदोलन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। बीसवीं शताब्दी के छठें दशक के मध्य से लेकर सातवें दशक के मध्य तक वह हिन्दी साहित्य की चर्चा के केन्द्र में रही है। उसको लेकर जितना वाद विवाद, चर्चा–परिचर्चा और उठा–पठक हुई थी, उतना किसी दूसरी साहित्यिक विधा को लेकर कभी नहीं हुआ। सर्वाधिक विवाद तो इस आंदोलन के प्रारंभ को लेकर ही रहा है। जहाँ एक ओर कुछ आलोचक और कहानीकार १९५१ के दशक को 'नई कहानी' के दशक के नाम से अभिहित करते हैं तो वहीं दूसरी ओर कतिपय कहानीकार और आलोचक इसकी अंतिम समय–सीमा सातवें दशक के पूर्वार्द्ध तक ले जाते हैं। कमलेश्वर, मार्कण्डेय, दुष्यंत कुमार, मोहन राकेश और राजेन्द्र यादव जैसे लेखक नई कहानी का आरम्भ १९५० ई. के आसपास मानते हैं। जबकि डॉ. गोपाल राय का कहना है कि "तथ्य यह है कि नई कहानी का आंदोलन 'आंदोलन' के रूप में छठें दशक के अंत में आरम्भ हुआ और सातवें दशक के लगभग मध्य में समाप्त हो गया। १९५५ तक तो उसका नाम–निशान भी नहीं था।"[१] कुछ इसी तरह का मत आलोचक नामवर सिंह का भी है। नामवर सिंह ने कहानी के जनवरी १९५६ ई. के अंक में प्रकाशित लेख 'आज की हिन्दी कहानी' में कहा था कि 'नई कहानी' नाम से कोई आंदोलन अभी तक नहीं चला है।"[२] लेकिन इसका मतलब कतई नहीं है कि हिन्दी

Scanned by CamScanner

नारी-व्यथा की कथा प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के विशेष संदर्भ में/ **डॉ॰ मनोहर आप्पासो जमदाडे** 286
परंपरा तथा आधुनिकता के समन्वयक : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी/ **प्रतिभा झा** 290
मधु काँकरिया के उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' में धर्म व नारी-चेतना/ **रानी देवी** 295
दलित विमर्श : अवधारणा और स्वरूप/ **रविन्द्र कुमार** 299
प्रगतिशील हिंदी कविता में व्यंग्य सरंचना/ **रेश्मा एम एल** 303
अमरकांत की कहानियों में मानवमूल्य/ **डॉ॰ सुनीता अवस्थी** 309
समकालीन महिला कथालेखिकाओं के लेखन में स्त्री-परिवेश/ **डॉ॰ दिग्विजय टेंगसे** 316
भारत में लोकतंत्र : दशा एवं दिशा/ **डॉ॰ विजय प्रकाश** 320
उत्तराखंड के अभिशप्त और उपेक्षित वर्ग की गाथा—कगार की आग/ **डॉ॰ मुक्तिनाथ यादव** 327
स्वच्छंदतावाद की अवधारणा और उसकी प्रमुख विशेषताएँ/ **प्राची तिवारी** 332
अनुच्छेद-21 जीवन का अधिकार और आदिवासी कविताएँ/ **डॉ॰ श्रीमती राजु एस॰ बागलकोट** 338
केदारनाथ सिंह की कविताओं में लोकसौंदर्य/ **उमेश कुमार पर्वत** 343
मंगलेश डबराल की काव्य संवेदना/ **डॉ॰ नवनाथ शिंदे** 347
मीराबाई और हिंदी का स्त्री-विमर्श/ **डॉ॰ दीप कुमार मित्तल** 353
बीपीएल परिवारों में रहने वाले वृद्धजनों की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का एक अध्ययन/ **डॉ॰ श्याम सिंह, डॉ॰ संजीव कुमार लवानियां** 359
आज के समय की हिंदी कहानी/ **वीरेश कुमार** 366
आदिवासी जीवन और संस्कृति/ **सपना रानी** 372
किन्नर जीवन का संघर्ष : पोस्ट बॉक्स नं॰ 203 नाला सोपारा/ **डॉ॰ अशोक शामराव मराठे** 375
धर्मवीर भारती का साहित्य-चिंतन/ **डॉ॰ राम किंकर पांडेय** 381

Scanned by CamScanner

धर्मवीर भारती का साहित्य-चिंतन

डॉ॰ राम किंकर पांडेय
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिरमिरी, जिला-कोरिया (छ॰ग॰)

धर्मवीर भारती ने साहित्य की विविध विधाओं में लेखन किया है। उनकी ख्याति एक कवि, कहानीकार, नाटककार, उपन्यासकार, निबंधकार आदि विविध रूपों में है। सृजनात्मक लेखन के साथ-साथ उन्होंने सैद्धांतिक पक्ष पर भी यथेष्ट लेखन किया है। धर्मवीर भारती ने साहित्यकार की प्रेरणा, साहित्य प्रयोजन और सृजन की प्रक्रिया से संबंधित लेखन के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए हैं। डॉ॰ धर्मवीर भारती साहित्य को एक व्यापक और उदार धरातल पर स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार जीवन-प्रक्रिया और सृजन-प्रक्रिया सर्वथा अभिन्न हैं और जीवन-प्रक्रिया की लंबी शृंखला में सृजन का क्षण स्वत: बिना किसी नियम के अकारण नहीं आता है। ज्ञानोदय में लिखे एक लेख में वे कहते हैं, 'क्या ऐसा है कि समूची जीवन-प्रक्रिया अलग चलती रहती है और रचना-प्रक्रिया का घनीभूत क्षण अकस्मात कभी रहस्यमय ढंग से अकारण आ जाता है।'[1] उनके मतानुसार जीवन का व्यापक अनुभव-वैभव, जो स्थूल दृष्टि से परस्पर असंयुक्त तथा असंगठित दिखाई पड़ता है, अपने समग्र प्रभाव से सृजन-प्रक्रिया को उद्दीप्त करता रहता है, और अंत में जब वह उद्दीपन अपनी-अपनी चरम अवस्था को प्राप्त करता है तो सृजन-क्षण प्रस्तुत होता है। 'कितने ही क्षण हैं, कितनी स्थितियाँ हैं जो प्रत्यक्षत: असंबद्ध लगती हैं, पर कुल मिलाकर हमारे चेतना या अर्द्धचेतन मन में लहर पर लहर इस एक बिंदु को उभारती रहती है।'[2]

डॉ॰ धर्मवीर भारती साहित्य में वैयक्तिकता से भी अधिक सामूहिकता की प्रमाणिकता पर जोर देते हैं। इसको स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं, 'जहाँ लेखक ने सामान्यजन की नियति से अपनी नियति को पृथक किया कि यथार्थ का सूत्र उसके हाथ से छूटा और जब जन के, प्रजा के यथार्थ से वह विच्छिन्न ही हो गया, तब उसके लिए दो ही रास्ते बचे–राजाश्रय या रहस्यवाद।'[3] यह सत्य है कि जब-जब साहित्य राजाश्रय की ओर मुड़ता है तब-तब वह जनसामान्य से कट जाता है। मध्यकालीन साहित्य इसका स्पष्ट प्रमाण है। धर्मवीर भारती जी का मानना है कि उस साहित्य में भी जहाँ मानव का मौलिक यथार्थ प्रमाणिक रूप से मुखरित हुआ है, वहीं साहित्यिक गुण विद्यमान हैं अन्यथा साहित्य सजीव नहीं हो सका है। साहित्य-सृजन का आधार तो मनुष्य का मौलिक यथार्थ ही है। मध्यकालीन साहित्य में भी वही अंश सजीव और सप्राण है, जहाँ इस लोक का प्राणी बोल उठा है, परलोक का द्रष्टा नहीं।'[4] भारती जी साहित्य को बेहद व्यापक और उदार धरातल पर अवस्थित मानते हैं, वे साहित्य को संकीर्णता के दायरे से बाहर निकालकर रखने के आग्रही हैं। प्रगतिवाद के नाम पर वे साम्यवादी पार्टी के नियंत्रण और बँधे-बँधाए ढाँचे के कारण जो संकीर्णता आ रही थी, उसका वे प्रत्यक्ष रूप से विरोध करते हुए लिखते हैं, 'मानवता के

Scanned by CamScanner

• धार्मिक शोषण का... : एन आर सेतु लक्ष्मी 132
• पति-पत्नी के अहं के... : स्नेहा शर्मा 135
• नागार्जुन के साहित्यिक... : संदीप कुमार 138
• बाँसवाड़ा... : डॉ. सौरभ त्यागी-सुरभी दोषी 140
• सम्मेलन पत्रिका का... : त्रिभुवन गिरि 145
• बाणभट्ट की आत्मकथा का... : चंदन कुमार 148
• अमरकांत कीं... : अजीत कुमार पटेल 151
• रामविलास शर्मा के... : डॉ. अजीत सिंह 154
• चित्रा मुद्गल के... : डॉ. अमिता तिवारी 158
• विवेकी राय का कविता... : अनुपमा तिवारी 161
• वर्तमान समय में... : डॉ. आशीष यादव 164
• भारतेंदुयुगीन कविता... : डॉ. भास्कर लाल कर्ण 167
• भोजपुरी बारहमासा... : भव्या कुमारी 172
• नारी मुक्ति का... : डॉ. बीना जैन 175
• हिंदी पत्रकारिता... : डॉ. चयनिका उनियाल 178
• लोकमानस के अनूठे... : डॉ. छोटू राम मीणा 181
• महामारी कोविड-19 के... : डॉ. ऋषिपाल-
डॉ. ज्योति श्योराण-डॉ. जयपाल मेहरा
डॉ. निधि जैन-सुश्री पल्लवी 185
• योग : विश्व... : डॉ. दयाशंकर सिंह यादव 189
• पूना पैक्ट की... : डॉ. दीपक कुमार गुप्ता 192
• लोकमान्य तिलक... : डॉ. राजेश कुमार शर्मा 195
• मानवतावादी व महिला... : डॉ. संगीता शर्मा 200
• वर्तमान परिपेक्ष्य में... : डॉ. शारदा देवी 204
• संस्कृति के वाहक... : डॉ. भारती बतरा 208
• हरियाणवी सिनेमा में... : डॉ. जयपाल मेहरा 211
• महादेवी वर्मा की... : डॉ. गीता पांडेय 214
• 'मानस' में उपलब्ध... : डॉ. गीता कौशिक 218
• हिंदी नवगीतों के... : डॉ. प्रकाश चंद्र गिरि 221
• भूमण्डीकरण का... : डॉ. कमलेश सरीन 223
• सावित्री बाई फुले... : डॉ. हंसराज 'सुमन' 226
• हिंदू धर्मशास्त्र और... : डॉ. अमिष वर्मा 229
• भूमंडलीकरण और... : हुलासी राम मीना 234
• हिंदी की आदिवासी... : डॉ. जसपाल कौर 237
• रामधारी सिंह... : डॉ. जायदासिकंदर शेख 240
• डॉ. रामविलास शर्मा... : डॉ. जितेश कुमार 244
• वर्तमान पत्रकारिता में... : कामरान वासे 247
• 'पद्मावत' में प्रेम... : डॉ. केदार कुमार मंडल 251
• आदिवासी कविताओं... : प्रो. खेमसिंह डहेरिया 254
• क्षेत्रीय मौखिक... : रंजन कुमार 257
• अपने स्वत्व को... : लक्ष्मी विश्नोई 260
• श्रीलाल शुक्ल... : सुधीर कुमार जोशी 263
• आत्मनिर्भर महिलाओं... : डॉ. बिजेंद्र कुमार 267
• श्यौराज सिंह बैचेन... : डॉ. मणिवेन पटेल 270
• भारतीय समाज में... : मनीष कुमार सिंह 273
• आधुनिक इतिहास में... : डॉ. मेघना शर्मा 276
• निर्गुण संतों की... : डॉ. प्रदीप कुमार' 280
• दलित और... : डॉ. नुरजाहान रहमातुल्लाह 283
• भारत में भाषाई... : ओमप्रकाश यादव 286
• मानवीय संस्कृति... : डॉ. प्रवीण कुमार 290
• कामाख्या शक्तिपीठ... : डॉ. प्रीति वैश्य 296
• 'मोहन राकेश की... : प्रिया पाण्डेय 299
• हिंदी गजल... : डॉ. जियाउर रहमान जाफरी 303
• भीष्म साहनी का... : डॉ. राम किंकर पाण्डेय 306
• भारत की नई शिक्षा... : डॉ. रमेश कुमार 310
• श्रीलाल शुक्ल के... : रवीश कुमार यादव 313
• शैलेंद्र के भोजपुरी... : डॉ. संगीता राय 315
• रामनरेश त्रिपाठी... : संजीव कुमार पाण्डेय 319
• सूर्यकांत त्रिपाठी... : सरिता कुमारी 322
• मृदुला गर्ग के... : डॉ. सविता डहेरिया 325
• मोहन राकेश की... : डॉ. सुनील कुमार सुधांशु 331
• मीडिया में दलितों का... : डॉ. स्वर्ण सुमन 334
• डॉ. कुँअर बेचैन की... : तेज प्रताप 340
• जनजातीय.. : डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय 344
• हिंदी दलित कविता... : विजय कुमार 348
• आधुनिक हिंदी... : विकास कुमार सिंह 351
• हिंदी साहित्य में... : विनय कुमार पाठक 354
• वैश्वीकरण और... : मुरली मनोहर भट्ट 357
• सुभद्रा कुमारी... : अनिता उपाध्याय 360
• हिंदी रंगमंच की... : डॉ आशा-डॉ. अनिल शर्मा 363
• जनमाध्यम के रूप... : डॉ. योगेश कुमार गुप्ता 367
• परंपराओं और... : डॉ. नीरव अडालजा 372
• हिंदी कथा साहित्य... : प्रियंका कुमारी गर्ग 377
• वैश्वीकरण की दौड़... : डॉ. कमलेश कुमारी 381
• 'रामचरितमानस' में... : डॉ. हेमवती शर्मा 385
• रघुवीर सहाय के... : प्रतिभा देवी 387
• भारतीय संस्कृति बनाम... : डॉ. स्वाति श्वेता 390
• अनौपचारिक... : मुकेश कुमार मीना-विनोद सेन 394
• इतिहास शिक्षण में... : डॉ. अजीत कुमार बोहत 398
• परंपरागत नृत्य कलाओं... : डॉ. दिलावर सिंह 401
• राष्ट्रीय शिक्षा... : मोनिका कौल-ईश्वर सिंह 405
• सामाजिक माध्यमों... : डॉ. अनिल कुमार 408
• हिंदी सिनेमा... : डॉ. संतोष कु. सिंह 412
• शिक्षक शिक्षा का... : विक्रम बहादुर नाग 415
• रामनरेश... : सरला माधव प्रसाद तिवारी 419
• वैदिक साहित्य में... : डॉ. राजवीर शास्त्री 423
• उच्च शिक्षा में... : मोना भटनागर-नम्रता सोनी 424
• तुलसी का काव्य... : डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव 428
• समावेशी शिक्षा... : अश्वनी 433
• अस्तित्व की... : मनीष कुमार-डॉ. रानीबाला गौड़ 436
• अज्ञेय के... : गरिमा वर्मा--डॉ. रानीबाला गौड़ 438

Scanned by CamScanner

भीष्म साहनी का औपन्यासिक अवदान

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

भारत विभाजन की त्रासदी पर भारतीय साहित्य में बहुत कुछ लिखा गया हैं। हिंदी, उर्दू, पंजाबी और बंगाली के साहित्य में अनेक रचनाएँ उपलब्ध हैं। हिंदी में 'तमस' से पहले यशपाल का 'झूठा सच' इस पृष्ठभूमि पर लिखी गई सबसे बृहद रचना है। तमस पर टिप्पणी करते हुए महीप सिंह लिखते हैं–"तमस देश-विभाजन की त्रासदी के लगभग तीन दशक बाद प्रकाशित हुआ था। उस समय इस उपन्यास को पढ़कर ऐसा लगा था कि इतने अंतराल के पश्चात भी इस कथ्य की सर्जनात्मक संभावनाएँ चुकी नहीं हैं। तमस की जिस बात ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया था, वह थी अपने कथ्य के प्रति लेखक की गहरी समझ और आत्मीयता। लेखक ने जिस ढंग से स्थितियों को उभारा था, जिस सूक्ष्मता से चरित्रों का सृजन किया था और जिस अंतरंग जानकारी से घटनाओं को नियोजित किया था, उससे उस त्रासदी को उसके क्रूरतम रूप में रेखांकित किया जा सका था। 'तमस' पाँच दिनों की कहानी है, किंतु उन पाँच दिनों के पीछे हमें बहुत सारे दिन, वर्ष और शताब्दियाँ झाँकती हुई दिखाई देती हैं। घृणा, विद्वेष, सांप्रदायिक उन्माद और इन सबसे उत्पन्न विचार तथा व्यवहार जनित क्रूरता इस देश में सदियों पहले पनपी और समय-समय पर अपना रूप बदल-बदल कर नंगा नाच करती रही।"[1]

वास्तव में भीष्म साहनी ने 'तमस' में सांम्प्रदायिक उन्माद के जीवंत चित्रण के साथ ही साथ उन स्थितियों और कारणों के सटीक विश्लेषण तथा चित्रांकन का भी प्रयत्न किया है जो देश के विभाजन और संप्रदायिकता के मूल में थे। उपन्यास में उन्होंने इस बात पर विशेष जोर दिया है कि सांप्रदायिकता की आग फैलाने में ब्रिटिश शासन और उसके चाटुकार पिटठुओं का विशेष हाथ था, बल्कि यह सब बनी बनाई योजना का एक हिस्सा था। लेखक ने इस कटु ऐतिहासिक सच्चाई को बहुत स्पष्टता से रचनात्मक सघनता प्रदान की है कि अंग्रेजों ने अपनी सत्ता कायम रखने के लिए हिंदुओं और मुसलमानों को आपस में लड़ाने और फूट डालने के सैकड़ों षड्यंत्र किए और उनकी ये हरकतें आजादी प्राप्ति तक कायम रहीं। बल्कि 1947 का साल नजदीक आत-आते और तेज हो गईं। यह उनकी हरकतों का ही फल था कि कांग्रेस हिंदुओं की संस्था बन गई और जिन्ना के नेतृत्व में मुसलमानों के लिए एक अलग देश पाकिस्तान की माँग उठने लगी थी, जो 1947 में जाकर फलीभूत हुई। वास्तव में भारत के विभाजन और पाकिस्तान का गठन अपने आप में कोई एक सरल घटना मात्र नहीं थीं, यह कोई जमीन का बँटवारा भी नहीं था बल्कि इस विभाजन के भीतर हिंदुओं और मुसलमानों के पारस्परिक संशय, अविश्वास और खून खराबे की अनगिनत अमानवीय कृत्यों की कहानी छिपी हुई है। विभाजन की यह विभीषिका अपने पीछे सांप्रदायिकता की आग और वैमनस्य तथा मानवीय यातना का वह उत्स छोड़ गई जो अभी तक रह-रहकर समय-समय पर विषाक्त धुँआ फेंकती है जिससे वातावरण दूषित हो उठता है।

'तमस' में सांप्रदायिक दंगों की शुरुआत अंग्रेज शासकों के इशारे पर म्युनिसिपल कमेटी के कारिंदे मुराद अली द्वारा सीधे-सादे सामान्य व्यक्ति नत्थू द्वारा सुअर मरवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा देने की घटना से होती है। और वह भी केवल पाँच रुपए देकर, यहाँ हम देख सकते है कि किस तरह से मुराद अली जैसे शरारती तत्व गरीबों और मजदूर लोगों को चंद रूपयों का लालच देकर वैमनस्य का बीज बोने के लिए इस्तेमाल करने से भी नहीं चूकते। नत्थू द्वारा मस्जिद सीढ़ियों पर सुअर मारकर रखने के फलस्वरूप शहर में हिंदू-मुसलमानों के बीच भयंकर दंगा होता है, जिसका दुष्परिणाम सबको भोगना पड़ता है। दंगा फैलने के साथ ही अविश्वास, आशंका, भय और क्रोध को धर्न्मोन्माद आधारित हिंसा अपना भयंकर रूप ग्रहण कर लेती है। इस पूरे घटनाक्रम का लेखक ने बेहद विश्वसनीय और जीवंत चित्रण किया है। 'तमस' पर टिप्पणी करते हुए गोपाल राय का कहना है–"इस अमानवीय क्रूरता के बीच मानवीय संवेदना और उदारता के छोटे-छोटे प्रसंग बड़े ही प्रीतिकर और मार्मिक रूप में प्रस्तुत हुए हैं। इस माहौल में जबकि इंसानी पहचान खत्म हो जाती है, आदमी बधिक और वध्य पशु में परिणत हो जाता है, एहसान अली की घरवाली राजो या करीम खाँ जैसे नेक आदमी हैवानियत के सारे दबावों को झेलते हुए इंसानियत की लाज रखते हैं। इस प्रकार भीष्म साहनी ने सांप्रदायिकता की चुनौती को रचनात्मक

Scanned by CamScanner

- राधाचरण गोस्वामी की राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना : *डॉ. कामना पाण्डेय* 333
- पब्लिक स्कूल एवं अनुदानित इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन : *डॉ. राजेश कुमार* 337
- रश्मिरथी का नया पाठ : *डॉ. प्रशांत गौरव* 341
- सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक साहित्य के विकास में सम्मेलन पत्रिका का योगदान *त्रिभुवन गिरि* 344
- अवध का प्रथम नवाब सआदत ख़ाँ बुरहान-उल-मुल्क : *डॉ. चित्रगुप्त* 347
- हवेली संगीत में ब्रज के होरी गीतों की परंपरा व परिवर्तित स्वरूप *डॉ. स्मृति त्रिपाठी* 350
- उत्तराखण्ड की पत्रकारिता से गुजरते हुए दलित पत्रकारिता : *डॉ. राम भरोसे* 353
- तुलसी की भक्ति भावना : एक समीक्षा *डॉ. आर्यकुमार हर्षवर्धन* 356
- जायसी कृत पद्मावत में सांस्कृतिक समन्वय *डॉ. रश्मि शर्मा* 358
- भूमंडलीकरण, वसुधैव कुटुंबकम और अमेरिकीकरण : *नीरज* 362
- हिंदी साहित्य में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन *डॉ. राखी उपाध्याय* 366
- राष्ट्रीय-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रस्तोता नाटककार जयशंकर प्रसाद : *डॉ. नीतू शर्मा* 369
- रमेशचंद्र शाह के उपन्यासों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों की प्रासंगिकता *कृपा शंकर* 372
- 'अभ्युदय' उपन्यास में नारी विषयक चेतना *पंकज सिंह* 375
- ज्ञानरंजन की कहानियों में भाषा एवं शैली का साहित्यिक अनुशीलन : *अर्जुन यादव* 379
- शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में ग्रामीण अनुशीलन : *सीमा यादव* 382
- प्रतापनारायण मिश्र के लोक साहित्य की सामाजिक प्रादेयता : *विशाल मिश्र* 385
- पारंपरिक कृषि पद्धति पर सुराजीगाँव योजना का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन *एस कुमार-सपना शर्मा सारस्वत* 387
- स्वराज्य, आत्मनिर्भरता और आदर्श राज्य की अवधारणा भारतीय विचारकों के दृष्टिकोण में *डा. सुनीता* 392
- विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में सांस्कृतिक चेतना : *अनिरुद्ध कुमार* 395
- डॉ. अस्तअली खाँ मलकांण के काव्य में लोक संस्कृति : *डॉ. ईश्वर सिंह* 398
- मुक्तिबोध की कहानियाँ : वैचारिकी के कलेवर में आख्यान : *डॉ. राम किंकर पाण्डेय* 400
- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी के बाल साहित्य में मानवीय मूल्य : *डॉ. श्रवण राम* 403
- आदिवासियों के...: *मिथिलेश कुमार मिश्र* 406
- भूमंडलीकरण, वसुधैव कुटुंबकम और अमेरिकीकरण : *नीरज* 409
- पूर्ववर्ती हिंदी कहानी से समकालीन हिंदी कहानी में उपेक्षा का जटिल...: *डॉ. रिंपी खिल्लन सिंह* 413
- खेलत गेंद गिरे यमुना में : 'पीड़ा के दंश' कहानी की कथावस्तु में स्त्री : *रश्मि* 416
- गणित अध्ययन : हिंदी...*डॉ. प्रीति धर्माह* 419
- सुभद्रा कुमारी चौहान समसामयिकता के संदर्भ में मुख्यता : *अनीता उपाध्याय* 422
- गोदान और किसान का अंतःसंबंध *विजय यादव* 425
- कमलेश्वर की कहानियों में आधुनिक जीवन का यथार्थ चित्रण : *डॉ. आभा शर्मा* 429
- प्रेमचंद के कृतित्व की साहित्यिक मूल्यांकन पत्रकारिता के संदर्भ में : *मुन्ना लाल पाल* 432
- स्त्री अस्मिता की दृष्टि से मोहन राकेश के नाटकों में नारी का सामाजिक स्वरूप *संगीता कुमारी पासी-डॉ. कुसुम कुंज मालाकार* 435
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य पर जयनंदन के कहानी साहित्य में संवैधानिक मूल्यों का प्रभाव *डॉ. आगेडकर भानुदास भिकाजी श्री. डवरी दादासाहेब आनंदराव* 439
- शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रोद्योगिकी का प्रदेय *डॉ. शोभा एम. पवार* 442
- विष्णु प्रभाकर के नाटकों में जीवन-दर्शन *डॉ. रीना डोगरा* 444
- मिथक का अर्थ एवं स्वरूप : भारतीय दृष्टिकोण : *डॉ. गुरदीप रानी* 447
- भारतीय महिला आंदोलन में गांधी के योगदान : *मीना चरांदा* 450
- सरकारी एवं स्ववित्त पोषित बी.एड. कॉलेजों में कार्यरत... : *शिवबच्चन सिंह यादव* 453
- सामाजिक व्यवस्था और उसके अंतर्द्वंद्वों की पड़ताल करती कविताएँ : *प्रियंका कुमारी* 457
- मैला आंचल में... : *डॉ. महेंद्र पाल सिंह* 459
- हिंदी सिनेमा पर वामपंथ का... : *शिवेंद्र राणा* 462
- अफगानिस्तान की परिवर्तित स्थिति का भारत पर प्रभाव : *डॉ. सोनाली सिंह* 465
- स्त्रीवादी साहित्य और... : *डॉ. नीलिमा चौहान* 469
- 'आनंद' मरा नहीं करते... : *कपिल कुमार* 472
- प्रेमचंद कालीन हिंदी... : *डॉ. चिम्मन* 474
- एनी बेसेंट के शैक्षिक... : *डॉ. प्रमिला मलिक-अर्चना कुमारी* 477
- भारतीय समाज एवं संस्कृति पर... : *डॉ. अर्चना सिंह* 481

Scanned by CamScanner

मुक्तिबोध की कहानियाँ : वैचारिकी के कलेवर में आख्यान

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

हिंदी कहानी की विकास यात्रा विविधवर्णी एवं बहुरंगी रही है जिसे एक सुदृढ़ आधार देने का कार्य कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने किया। उन्होंने हिंदी कहानी को नया स्वरूप प्रदान किया था। प्रेमचंद के द्वारा खड़ी की गई बुनियाद में समय के साथ उसमें और कड़ियाँ जुड़ती गई। प्रेमचंद के बाद जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, सुदर्शन आदि ने हिंदी कहानी को नए आयाम दिए। आजादी के बाद कहानी के शिल्प और संवेदना में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। 'नई कहानी' आंदोलन ने जोर पकड़ा और कहानी विधा हिंदी साहित्य के विमर्श के केंद्र में आ गई। 'नई कहानी' अनुभव की प्रामाणिकता पर जोर देती है। आजादी के बाद जो सामाजिक यथार्थ निर्मित हुआ उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति हमें 'नई कहानी' आंदोलन की कहानियों में देखने को मिलती है। पारिवारिक विघटन, आजादी से मोहभंग, मोहभंग से उपजे घुटन, संत्रास और कुंठा की स्थितियों की अभिव्यक्ति नई कहानी को पूर्व की कहानी से अलग करती हैं। कथाकार काशीनाथ सिंह लिखते हैं–''यथार्थ कहानी का जीवन है, इसलिए इस यथार्थ ने ही उसे पुनर्जीवित भी किया ऐसे यथार्थ ने जो उन दिनों आजादी की रूमानी परतों में लिपटा हुआ था और व्यक्त होने के लिए बेचैन था। इस तरह उसे पहचाना भले कविता ने हो, पकड़ने और सामने लाने का काम कहानी ने किया–'नयी कहानी' ने।''[1]

मुक्तिबोध की ख्याति कवि और विचारक के रूप में रही है। उनका कहानीकार रूप हमारे बीच की चर्चा से प्रायः नदारद रहा है। जबकि वह भी नई कहानी के दौर में ही कहानियाँ लिख रहे थे। लेकिन मुक्तिबोध की कहानियाँ उस दौर में अधिकतर आलोचकों द्वारा उपेक्षित ही रही हैं। संभवतः मुक्तिबोध की कहानियों की हिंदी साहित्य में व्यापक स्तर पर समीक्षा ही नहीं हुई। उनकी कहानियों के रचना समय को हम देखें तो यह पता चलता है कि उन दिनों के किसी भी साहित्यिक आंदोलन का आंतक या गहरा प्रभाव उन पर नहीं है। जबकि इसी समय उनकी महत्त्वपूर्ण कहानियाँ क्लाड ईथरली, आखेट, ब्रह्मराक्षस का शिष्य, जिंदगी की कतरन, सतह से उठता आदमी आदि प्रकाशित होती हैं। यह एक चौंकाने वाला तथ्य है कि उस समय के किसी बड़े आलोचक के यहाँ उनकी कहानियों की विस्तृत चर्चा हमें नहीं मिलती है। जहाँ थोड़ी बहुत चर्चा दिखती भी है तो यही माना जाता है कि मुक्तिबोध की कहानियाँ कहानी के साँचे में फिट नहीं बैठती हैं। जबकि उनकी कहानियाँ हिंदी कहानी की परंपरा से एकदम अलग हैं, उनका टेम्परामेंट एकदम भिन्न है। अपने एक साक्षत्कार में नामवर सिंह ने कहा था कि अगर उन्हें 'कहानी नई कहानी' लिखने के दौरान 'क्लाड ईथरली' दिख गई होती तो नई ने कहानी केंद्र में निर्मल वर्मा को नहीं, मुक्तिबोध को रखते। हालाँकि बाद में भी नामवर सिंह ने मुक्तिबोध की कहानियों पर विस्तार से कोई चर्चा नहीं की।

मुक्तिबोध रचनावली के खंड तीन में मुक्तिबोध की संपूर्ण कहानियाँ संग्रहित हैं, जिसमें उनकी पूर्ण और अपूर्ण कहानियों को संकलित किया गया है। पूर्ण कहानियों की कुल संख्या पच्चीस है और अपूर्ण कहानियों की संख्या बाईस है जिनमें एक अधूरा उपन्यास अंश भी सम्मिलित है। मुक्तिबोध की कहानियों के विषय बहुत व्यापक हैं उनकी कुछ कहानियाँ व्यक्तिपरक हैं तो कुछ मनोवृत्तिपरक हैं, कुछ कहानियों की विषय वस्तु घटना परक है तो कुछ स्थिति प्रधान कहानियाँ भी हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मुक्तिबोध स्थितियों, घटनाओं, व्यक्तियों या मनोविकारों में से जब किसी को भी कथा का स्वरूप प्रदान करते हैं तो वह कथा स्वतः गतिमान हो जाती है। उनकी रचना प्रक्रिया की पद्धति ही अलग होती है। उनके लेखन की विविधता उनकी वैचारिक धुरी में घूमती है। उनकी कहानियों पर विचार करते समय यह प्रश्न बहुधा पैदा होता है कि उनकी कहानियों में कहानीपन कितना है? इस संबंध में कथा आलोचक संजीव कुमार का मानना है, '' 'मुक्तिबोध' स्वभावतः कहानीकार नहीं हैं। असल में वे बुनियादी तौर पर विचारक है, पर मुक्तिबोध के यहाँ उनका विचारक उनके कथाकार के साथ रचनात्मक सह अस्तित्व पाने में प्रायः विफल रहा है।''[2] आगे चलकर संजीव कुमार इस बात को और स्पष्ट करते हुए यह बताते हैं कि क्यों मुक्तिबोध के यहाँ पूर्ण और अपूर्ण कहानियों की संख्या लगभग बराबर है। वे लिखते हैं–''कथाकार वाली कल्पनाशीलता का यह अभाव मुक्तिबोध के कहानी संसार में अपूर्ण रचनाओं कीबड़ी संख्या और पूर्ण कही जाने वाली कहानियों में भी अधूरेपन की प्रतीति का कारण है। ऐसा जान पड़ता है कि उनकी ज्यादातर कहानियों का भ्रूण चिंतन सूत्रों से निर्मित हुआ है, कथा स्थितियों की कौंध से नहीं। कथा स्थितियों की कौंध में जिस तरह

Scanned by CamScanner

उदयप्रकाश की कहानियों में राजनीतिक समस्याएँ/
मिनी॰ एस॰, डॉ॰ बी॰ कामकोटि 127
हिंदी कथासाहित्य और आलोचना : विधात्मक स्वरूप की पहचान/
डॉ॰ रामकिंकर पांडेय 130
समाज के विविध आयामों की झाँकी : एक सच्ची-झूठी गाथा/
स्मृति स्मरणिका जेना 138
वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की दुर्दशा (सूर्यबाला के दीक्षांत उपन्यास के संदर्भ में)/
विनीता विश्वाल 142
जैनधर्म में अहिंसा और मोक्ष की अवधारणा/ **पूजा** 148
हिंदी सिनेमा में अभिव्यक्त आपदा का स्वरूप/ **डॉ॰ सीमा शर्मा** 151
गीताश्री की कहानियों में चित्रित यथार्थबोध/ **अर्चना यादव, डॉ॰ जयकरण यादव** 158
कालीदास विरचित मेघदूत में वर्णित आयुर्वेदिक वनस्पतियाँ/
केशव दत्त जोशी, डॉ॰ लज्जा भट्ट (पंत) 166
समकालीन कहानियों में सामाजिक चेतना/ **वंदना देवी, डॉ॰ कल्पना दुबे** 170
कश्मीर विषयक हिंदी कविता : उद्भव और विकास/ **उमर बशीर** 175
उत्तराखंड की भोटिया जनजाति : इतिहास, समाज एवं संस्कृति/
हर्ष अग्निहोत्री, डॉ॰ गुड्डी बिष्ट पंवार 183
ममता कालिया की कहानियों में स्त्री-चेतना/ **नगीना मेहरा** 188
शैलेश मटियानी के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ/
सुबिया फैसल,डॉ॰ रेशमा अंसारी 192
भूमंडलीकरण और सांस्कृतिक ग्राह्यता का प्रश्न श्वेत एवं स्याह पक्ष/
डॉ॰ अनिता पाटील 196
दलित-चिंतन के नए परिपेक्ष्य/ **ललिता यादव, प्रज्ञा पाठक** 203
हिंदी और कन्नड़ मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों में सामाजिक चेतना/
मेहराज बेगम सैय्यद, डॉ॰ श्रीमती राजु एस॰ बागलकोट 208
साकेत एक दृष्टि/ **डॉ॰ वंदना शर्मा** 212
गोदान और यथार्थवाद/ **अनिरुद्ध गोयल** 217
गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन-दर्शन/ **डॉ॰ विशेष कुमार राय** 224
ओसिया मंदिर समूह की हरिहर प्रतिमाओं का कलात्मक वैशिष्ट्य/
बालिष्टर सिंह राठी 230
भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास में श्रमण-परंपरा का योगदान/
डॉ॰ बृजेंद्र सिंह बौद्ध 235
आवां उपन्यास के प्रधान नारी-पात्र/ **डॉ॰ मोहम्मद शाकिर शेख** 241
नारी-विमर्श के नए प्रश्न : प्रभा खेतान के चिंतन के विशेष संदर्भ में/

Scanned by CamScanner

हिंदी कथासाहित्य और आलोचना : विधात्मक स्वरूप की पहचान

डॉ॰ रामकिंकर पांडेय
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिरमिरी, कोरिया (छ॰ग॰)

साहित्य में विभिन्न विधाएँ प्रारंभिककाल से ही मौजूद तो रही है पर इनके अस्तित्व और स्वरूप को लेकर साहित्य चिंतकों में पर्याप्त मतभेद रहा है। हिंदी में प्रारंभिक विधाएँ महाकाव्य, खंडकाव्य, चंपू काव्य के रूप में हमारे सामने हैं जिनका विस्तृत इतिहास हमें काव्यशास्त्र में उपलब्ध है। भारतीय काव्यशास्त्र का आरंभ नाट्यशास्त्र से माना जाता है जिसका रससिद्धांत नाटक और महाकाव्य से गहराई से संबंधित था। आचार्य भामह ने गद्य और पद्य को काव्य अर्थात् साहित्य की विधाएँ बताई हैं–'शब्दार्थौसहितौ काव्यं गद्यं पद्यं तद्विधा'[1] (काव्यालंकार–1/16) आगे चलकर उन्होंने और व्याख्या करते हुए साहित्य के पाँच प्रकार सर्गबंध, अभिनेयार्थ, आख्यायिका, कथा अनिबद्ध बताए–

संगबन्धोऽभिनेयार्थः तथैवाख्यायिका कथा।
अनिबद्धउच काव्यादि तत्पुनः पउचधोच्यते।[2]

–काव्यालंकार 1/18

साहित्य की विधाओं पर विचार करते हुए महाकवि और गद्यकार आचार्य दंडी ने छंद के परिप्रेक्ष्य में उसकी तीन विधाएँ बताई हैं–'गद्यं पद्यं मिश्रउच तत्र त्रिधैव व्यवस्थितम्। (काव्यादर्श1/11) इसी तरह अग्निपुराण में भी गद्य, अर्थात् 'पाद विभाग से रहित पदों का प्रवाह के तीन भेद बताए गए हैं–चूर्णक, उत्कलिका तथा वृत्तगंधि। गद्य को शैली तथा विषयवस्तु के आधार पर पाँच प्रकारों में बाँटा गया है–आख्यायिका, कथा, खंडकथा, परिकथा और कथानिका। हिंदी साहित्य की वर्तमान कथा-आलोचना के अनेक शब्द जैसे–कथा, उपन्यास, उपन्यासिका, लघु उपन्यास, लंबी कहानी, लघुकथा इत्यादि को उक्त वर्गीकरण से जोड़कर देखा जा सकता है।

विधा का शाब्दिक अर्थ है–भेद या प्रकार। फ्रेंच और लैटिन के इन दिनों बहुप्रचलित शब्द 'ज्याँ' (Genre) को उसी तरह साहित्य के 'प्रकार' (Kind) के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। जिस प्रकार संस्कृत के शब्द काव्य भेद या विद्या का उपयोग होता रहा है। जिस तरह अँग्रेजी में Mode, Form, Kind, Type आदि शब्द हैं उसी तरह से हिंदी में काव्य रूप, काव्य भेद, काव्य प्रकार, विधा आदि शब्द हैं। अब यहाँ एक और प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या विधा का संबंध रचना की आंतरिक प्रकृति से होता है? या और कहीं से? इस संबंध में सी॰एस॰ लेविस का एक मजेदार कथन है कि अच्छा प्रेमगीत (Love-Sonnet) वही लिख सकता है जो न केवल सुंदर युवती पर मुग्ध होता है बल्कि 'गीत' (Sonnet) विधा पर भी। कुल मिलाकर हम यह कह

ISSN 0975-735X

Scanned by CamScanner

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक
प्रो. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

ले-आउट
स्कोप सर्विसेज, दरियागंज, नई दिल्ली

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF वेद विहार,
नियर: शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/-रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
E-mail : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakshan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

विभाजन की त्रासदी और मंटो — 7
विजय पालीवाल

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का विश्लेषणात्मक अध्ययन — 11
डॉ. अजीत कुमार बोहत

स्त्री अस्मिता संघर्ष और राजकमल चौधरी का हिंदी कथा साहित्य — 15
अजीत सिंह

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की इतिहास-दृष्टि — 18
डॉ. अमित सिन्हा

मध्यवर्गीय जीवन और चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का कहानी संग्रह 'आधा कमरा' — 20
अनिता देवी

छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में जल संसाधन की भूमिका — 23
डॉ. श्रीमती अनीता मेश्राम

राहुल सांकृयायन का यात्रावृत्त साहित्य में वर्णित धार्मिक पक्ष — 27
अरूण माधीवाल

सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के पक्षधर : सुब्रह्मण्य भारतीय — 30
डॉ. के. बालराजू

नेतृत्व और सम्प्रेषण का यथार्थ — 34
डॉ. कुमार भास्कर

नयी कविता और कुँवर नारायण — 37
भावना

आधुनिक दिल्ली हिंदी रंगमंच का स्वरूप — 40
डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह

स्त्री अस्मिता का मिथक — 43
गजेन्द्र पाठक

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत-नेपाल संबंध — 45
डॉ. गौरव कुमार शर्मा

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित का सामाजिक-बोध — 47
गौतम कुमार खटीक

भारत में राजनीतिक विकास एवं संविधान संशोधन : एक विश्लेषण — 50
गोविन्द नैनीवाल

भारत में जलवायु परिवर्तन एवं सरकारी नीतियां — 54
हंसा मीना

बेटी उपन्यास में बेटी की गौरव गाथा — 57
डॉ. कमलेश कुमारी

रामवृक्ष बेनीपुरी के गद्य साहित्य की भाषा — 59
डॉ. करतार सिंह

राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक : मैथिलीशरण गुप्त — 62
डा. राम किंकर पाण्डेय

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित*

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक : मैथिलीशरण गुप्त

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

'राष्ट्र' केवल सीमाओं से घिरा हुआ भूमि का कोई टुकड़ा नहीं वरन यह मनुष्य के चिंतन और कर्म की पृष्ठभूमि में जीवन का वह अमिट मूल्य है । जहॉ मनुष्य कर्म, सभ्यता, संस्कृति और आस्था के मेल से नई भावना को जन्म देता है । सृष्टि के आविर्भाव से मनुष्य के भाव जगत में जननी और जन्मभूमि का सर्वोच्च स्थान रहा है । हमारे यहॉ कहा भी गया है –''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' जिस धरा पर मनुष्य का पालन–पोषण होता है, उसे अन्न, जल, वायु मिलते हैं उस धरा की रक्षा का स्वाभाविक दायित्व बोध मानव के भीतर होता है। अपनी भूमि से लगाव के आत्मिक बोध के कारण मनुष्य उससे गहनतम रूप से जुड़ जाता है। इसी दायित्व को जब एक जन समुदाय ग्रहण करता है तो वह राष्ट्र के रूप में जाना जाता है।

'राष्ट्र' शब्द सर्वधातुभ्यः 'ट्रन' उगादि पत्यय के संयोग से 'रासु शब्दे' अथवा 'राज शोभते' धातु से बनता है। संस्कृत का 'राष्ट्रम' शब्द 'राज+ट्रन' शब्दों के संयोग से बना है जिसका अर्थ है राज्य, देश साम्राज्य आदि। व्युत्पत्ति की दृष्टि से राष्ट्र संयुक्त शब्द और पुरुष वाचक संज्ञा है, जिसका अर्थ है – 'राज्य में बसने वाला जनसमुदाय जिसमें जिला, प्रदेश, देश अधिवासी, जनता और प्रजा का समेकित स्वरूप मौजूद होना है। विभिन्न शब्दकोशों में इसकी व्याख्या हमें मिलती है। डॉ. रामचंद्र वर्मा अपने कोश में 'राष्ट्र' शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं –''किसी निश्चित और विशिष्ट क्षेत्र में रहने वाले लोग जिनकी एक भाषा, एक–सी रीति–रिवाज तथा एक सी विचारधारा होती है और वे एक शासन में रहते हैं उसे राष्ट्र कहा जाता है।'' 'राष्ट्र' शब्द में 'ईय' प्रत्यय लगने से 'राष्ट्रीय शब्द बना है। 'राष्ट्रीय' शब्द 'राष्ट्रे भव इति राष्ट्रीयता' से भी बना है। राष्ट्र+धञ (राष्ट्रीयः) हिन्दी भाषा में 'राष्ट्रीय एकस्य भाव इति एकता।' के रूप में बना है। राष्ट्र की अवधारणा बेहद पुरानी है। लेकिन अठारहवीं – उन्नीसवीं शताब्दी के आसपास राष्ट्र की संकल्पना एक नए अर्थ में उभरकर आती है। आधुनिक युग में 'स्वतंत्रता' को राष्ट्र का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। महात्मा गॉधी ने भी राष्ट्र का अभिप्राय 'स्वतंत्र देश' ही माना है। राष्ट्र की अवधारणा में वहां के निवासियों का मानस अपने देश की भौगोलिक सीमाओं, वहॉ के गौरवशाली इतिहास, परंपराओं आदि से अभिन्न रूप से जुड़ जाता है और वह उस राष्ट्र की एकता, अखंडता, संप्रभुता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार रहता है ।

प्राचीन काल में राष्ट्रीयता का मूल स्वरूप सांस्कृतिक रहा है, जहॉ जन्मभूमि को माता के समान श्रेष्ठ माना जाता है। आदिकालीन, साहित्य में वीरता के स्वर तो हैं लेकिन उस चेतना में व्यापक राष्ट्रीयता का अभाव दिखाई देता है क्योंकि उस समय कवि राज्याश्रित होते थे और वे अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशस्तिगान में ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा का प्रदर्शन करते थे। भक्तिकालीन साहित्य ईश्वर से जुड़ाव का साहित्य रहा है जिसे लोकमंगल का साहित्य कहा गया है लेकिन राष्ट्रीय चेतना के व्यापक सूत्र वहॉ भी दिखाई नहीं देते हैं। रीतिकाल के काव्य में श्रृंगार की प्रधानता है लेकिन वहॉ भूषण जैसे कवि हैं जिनके काव्य में वीरोचित भाव हमें मिलते हैं, भूषण ने अपनी कविता के माध्यम से शौर्य की गाथा कही है। लेकिन यहॉ भी राष्ट्रीयता के उस स्वर का अभाव है जिसे हम आज के संदर्भ में देखते हैं।

भारत में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार आधुनिक काल में हमें मुकम्मल रूप में दिखाई देता है, जिसकी अभिव्यक्ति आधुनिक काल के साहित्य में हमें प्रखर रूप से मिलती है। उन्नीसवीं शताब्दी के पुनर्जागरण ने सर्वप्रथम सांस्कृतिक चेतना का प्रसार संपूर्ण देश में किया। राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, केशवचंद्र सेन, विवेकानंद आदि इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण के वाहक बने। इसी समय भारत का स्वाधीनता संघर्ष तीव्रतर हुआ जिसमें जनभागीदारी का व्यापक स्वरूप हमें दिखाई देता है। स्वतंत्रता संघर्ष की यह लौ भारत के जनमानस को जगा रही थी। हिन्दी साहित्य के कवि रचनाकार भी इससे अछूते नहीं रहे। भारतेन्दु हरिशचंद्र द्वारा आधुनिक काल में उदीप्त राष्ट्रीय चेतना की काव्य धारा बाद के कवियों में भी अनवरत रूप से जारी रही। इस कड़ी में रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधर पाठक, सियाराम शरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद आदि की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

मैथिली शरणगुप्त का नाम तत्कालीन कवियों में राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक के रूप में अग्रणी है। हृदय से भक्त, स्वभाव से उदार, धर्मपरायण, सत्यान्वेशी, विनम्र और मिलनसार रचनाकार मैथिली शरण गुप्त जी ने अपनी रचनाओं से राष्ट्रीय चेतना को एक नई उॅचाई दी। गुप्त जी हमारे देश और युग के प्रतिनिधि कवि हैं। हमारा देश अखंड है और उस अखंडता की भावना मैथिली शरण गुप्त ने दी है। जब तक समूचे देश की राष्ट्र प्रेम के आधार पर एकता के सूत्र में बॉधने का प्रयत्न कोई न करे, तब उसे राष्ट्र कवि कहलाने का सौभाग्य प्राप्त नही हो सकता। गुप्त जी ने एक राष्ट्र की भावना अपनी रचनाओं द्वारा हमें दी है और इसी से भारतवर्ष में वे राष्ट्र कवि के नाम से विख्यात हैं। 'भारत–भारती' मैथिली शरण गुप्त की प्रमुख रचना है। यह अपने युग की महत्वपूर्ण रचना है जिसने

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

'तेजवंत तेजाजी' महाकाव्य में लोकसंस्कृति/ **मोहित कुमार** 11

फिल्मों में लोकसंगीत : एक अवलोकन/ **प्रो॰ माला मिश्र** 17

लोकसंस्कृति : समकालीन परिदृश्य/ **डॉ॰ राकेश कुमार दुबे** 21

मोहन राकेश के चयनित एकांकी/ **डॉ॰ ममता कुमारी** 26

पंजाब की 21वीं सदी की हिंदी कविता में दलित-विमर्श/ **प्रीति गुप्ता, डॉ॰ अनिल कुमार पांडेय** 31

रंगमंच का बदलता स्वरूप/ **डॉ॰ प्रमोद परदेशी** 35

भक्ति-आंदोलन में मराठी एवं गुजराती संतों का प्रदेय/ **डॉ॰ राम किंकर पांडेय** 40

'जो इतिहास में नहीं है' और 'धूणी तपे तीर' उपन्यासों में अभिव्यक्त आदिवासी आंदोलन/ **डॉ॰ मृदुल जोशी, आँचल चौधरी** 48

'मुहता नैणसी री ख्यात' में वर्णित समाज और संस्कृति/ **डॉ॰ रणजीत सिंह चौहान** 54

'जहाजिन' उपन्यास : एक गिरमिटिया महिला की संघर्षकथा/ **डॉ॰ मुन्नालाल गुप्ता** 59

भारतीय नाट्यकला में संगीत का महत्त्व/ **कृष्ण कुमार** 65

हरियाणवी लोकगीतों में पर्यावरण चेतना/ **डॉ॰ सुमन** 70

हरियाणवी लोकगीतों में दर्शन-तत्त्व/ **डॉ॰ विकास कुमार, डॉ॰ मनोज कुमार** 75

असमिया लोकसाहित्य में राम : एक अध्ययन (लोकगीतों के विशेष संदर्भ में)/ **तृष्णा दत्त** 81

परंपरा और आधुनिकता के मध्य स्त्री की अस्मिता का संघर्ष/ **श्वेतासिंह** 86

21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में कृषक जीवन : एक विवेचन/ **रीना चौधरी** 92

असम की बोड़ो जनजाति का सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन/ **डॉ॰ दिनेश साहू** 97

दैनिक भास्कर की वेबसाइट पर प्रकाशित खबरों और आलेखों का दिल्ली-एनसीआर के युवाओं पर प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/ **आदर्श कुमार** 102

अफगानिस्तान संकट पर वैश्विक समुदाय की निष्क्रियता/ **डॉ॰ मोहनलाल जाखड़** 108

चोलकालीन स्थानीय स्वशासन/ **डॉ॰ मनीष कुमार साव** 114

भारत में आर्थिक विकास में कृषि आधारित उद्योगों की भूमिका/ **रमाशंकर शर्मा, डॉ॰ स्वाति जैन** 118

छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन पर पढ़ने की आदतों का प्रभाव/ **शीतल शर्मा, डॉ॰ वर्षा शर्मा** 123

वर्तमान भारतीय उद्योग-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/

ISSN 0975-735X

Scanned by CamScanner

भक्ति-आंदोलन में मराठी एवं गुजराती संतों का प्रदेय

डॉ॰ राम किंकर पांडेय
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिंदी
शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय, चिरमिरी
जिला कोरिया (छ॰ग॰)
प्रो॰ डी॰एस॰ ठाकुर
प्राध्यापक हिंदी
डॉ॰ भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालय
पामगढ़, जिला जांजगीर चांपा (छत्तीसगढ़)

'भक्ति' शब्द की उत्पत्ति जिस 'भज' धातु से हुई है, उसका अर्थ होता है–सेवा करना। परंतु यह इसका व्यापक अर्थ नहीं बल्कि संकुचित अर्थ है। व्यापक अर्थ में इसमें ईश्वर का भजन, पूजन, प्रेम और समर्पण सब शामिल हैं। वास्तव में भक्ति ईश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति है। यह ईश्वर-प्राप्ति के ज्ञान और कर्मरूपी साधनों से थोड़ा भिन्न है। जहाँ ज्ञान का संबंध ईश्वर-संबंधी तत्त्वचिंतन से है तथा कर्म का उन क्रियाओं से जिनके द्वारा ईश्वर की प्राप्ति होती है, वहीं भक्ति का संबंध ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण से है। इसीलिए देवर्षि नारद ने भक्ति की परिभाषा देते हुए कहा है–'भक्ति भगवान के प्रति परम प्रेमरूपा और अमृत स्वरूपा है।' (सा त्वस्मिन परम प्रेम रूपा। अमृत स्वरूपा चा। –नारद भक्तिसूत्र, श्लोक 2,3) ऋषि शांडिल्य के अनुसार भी 'ईश्वर के प्रति परम अनुरक्ति ही भक्ति है। जिन्होंने जाना है, उन्होंने कहा है कि उसके साथ जुड़ जाने से अमरतत्व की प्राप्ति हो जाती है।' (सा परानुरक्तिरीश्वरे। तत्संस्थस्यामृतत्वोपदेषात। शांडिल्य भक्तिसूत्र, श्लोक 2-3) भक्ति के संबंध में वस्तुतः सच यह है कि भक्ति साधना भी है और सिद्धि भी है। वहाँ साधन ही साध्य है। भक्ति का अर्थ है परम प्रेम। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी भक्ति के स्वरूप पर विचार करते हुए इसे प्रेम और श्रद्धा का योग बताया है। उनके शब्दों में, 'जब पूजाभाव की वृद्धि के साथ श्रद्धा-भाजन के सामीप्य लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों के साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिए। जब श्रद्धेय के दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि में आनंद का अनुभव होने लगे, जब उससे संबंध रखनेवाले श्रद्धा के विषयों के अतिरिक्त बातों की ओर भी मन आकर्षित होने लगे, तब भक्तिरस का संचार समझना चाहिए।' (चिंतामणि भाग-1, पृ॰ 26)

यह भक्ति किसी कामना से युक्त नहीं है बल्कि यह संपूर्ण समर्पण की वस्तु है, क्योंकि इसमें भक्त अपने सारे कर्मों को भगवान को ही अर्पित कर देता है। वह अपने लौकिक-वैदिक सभी क्रियाकलापों का भगवान में न्यास कर देता है। इस भक्ति को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह गूँगे के स्वाद की तरह अनिर्वचनीय है। यह गुण, कामना और वियोगरहित है। यह सूक्ष्मतर होते हुए भी अनुभवगम्य है तथा इसमें सदा वृद्धि होती रहती है। यह मनुष्य का प्रयास नहीं, ईश्वर का प्रसाद है इसीलिए इसे ईश्वर-प्राप्ति का सबसे सहज-सरल मार्ग माना गया है।

ISSN 0975-735X

Scanned by CamScanner

Law

- Mimamsa Principles of Interpretation : A Legal Hermeneutics
  Keshav Jha (130)........91

Library Science

- E-Library : Information Treasure
  Dr. Yogini Dhakad (115)........94

Political Science

- प्रशासन एवं मानवाधिकार
  डॉ.आरती तिवारी (74)........97
- धमतरी जिले के नगरी विकासखण्ड की कमार जनजाति की सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ एवं समाधान के उपाय
  डॉ.अजय चन्द्राकर एवं कु.शफिकुन्निसा खान (104)........99
- मतदान के समय मतदाताओं का व्यवहार
  डॉ.आयशा अहमद एवं डॉ.एन.के.वैष्णव (70)........102
- मतदाता जागरुकता : एक विश्लेषण (छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिला के ग्राम रामपुर के विशेष संदर्भ में)
  डॉ.(श्रीमती) नागरत्ना गनवीर (97)........104
- सूचना का अधिकार : मौजूदा परिदृश्य
  डॉ.सुभाष चंद्राकर एवं ज्योत्स्ना वैष्णव (80)........106

Sociology

- तृतीय लिंग की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द जिले के विशेष संदर्भ में)
  डॉ.जया ठाकुर (87)........109

Arts & Humanities

Drawing

- चित्रकला के उद्भव और विकास में कल्पना का योगदान
  डॉ.(श्रीमती) वीणा चौबे (HHH)........111

English Literature

- Sheikh Mohammad Abdullah - A Nationalist at Heart
  S.M. Shafi Bhat (95)........113
- Slavery Suffering and Violence in Toni Morrison's *Paradise*
  Dr. Aradhana Goswami (77)........115
- Anita Desai and Arun Joshi As An Existentialist
  Dr. Dhalesh Kumar Patel (56)........117

Hindi Literature

- बाजारवादी जीवन शैली और हिन्दी भाषा
  डॉ.अमित शुक्ल (35)........119
- 'दोहा अभिशाप' में निहित दलित चेतना
  राजेन्द्र कुमार एवं डॉ.वंदना कुमार (88)........121
- प्रेमचन्द पूर्व के उपन्यासों का शिल्पगत वैशिष्ट्य
  डॉ.धर्मेन्द्र कुमार शुक्ल (92)........124
- जन कवि मुक्तिबोध के काव्य में सामाजिक-संघर्ष
  डॉ.अब्दुर्रहीम (116)........127
- हबीब तनवीर के रंगकर्म में अनुस्यूत छत्तीसगढ़ी लोक
  डॉ.वंदना कुमार (110)........130
- विवेकानंद और नारी जागरण
  डॉ.अनसूया अग्रवाल (85)........132
- स्वामी विवेकानंद : एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व
  डॉ.अरुणा चोपड़ा (86)........135

Philosophy

- Relevance of Gandhian Social Evils for The Present Social Context : A Study
  Dr. N. Mallikarjuna (137)........137

Sanskrit Literature

- ऋग्वेद-प्रातिशाख्य में विहित संज्ञाएँ : एक अध्ययन
  डॉ.अजय कुमार (49)........140
- अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यसर्जना
  शीतल चन्द्र शर्मा (106)........144
- 'मेघदूतम्' में सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्यावरण का स्वरुप
  संतोष कुमार अहिरवार एवं डॉ.एस.एस.गौतम (113)........147

Multidisciplinary (Misc)

Research Paper

- Materialism Crashing Chidhood Satisfaction
  Dr. Vanita Gandotra Khanjo (75)........150
- Natural Resources and Sustainable Development
  Dr. Parul Malik (114)........153
- ग्रामीण भारत : विकास की ओर
  डॉ.विम्मी बहल एवं डॉ.अनिल शिवानी (91)........155

❁❁

UGC - Approved - Journal

UGC Journal Details

Name of the Journal : Research Link

ISSN Number : 09731628

e-ISSN Number :

Source: UNIV

Subject: Accounting,Anthropology,Business and International Management,Economics, Econometrics and Finance(all),Education,Environmental Science(all),Finance,Geography, Planning and Development,Law,Political Science & Social Sciences(all)

Publisher: Research Link

Country of Publication: India

Broad Subject Category: Arts & Humanities,Multidisciplinary,Social Science

❁❁

UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : English Literature
Research Link - 162, Vol - XVI (7), September - 2017, Page No. 115-116
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor 2015 - 2.182

Slavery Suffering and Violence in Toni Morrison's *Paradise*

Paradise, Toni Morrison's Morrison's seventh novel, published in 1997, first novel since winning the Nobel Prize for Literature in 1993 addresses the same great themes of her 1987 masterpiece, Beloved the loss of innocence, the paralyzing power of ancient memories and the difficulty of accepting loss and change and pain. It deals with the devastated legacy of slavery and examines the emotional and physical violence that human beings are capable of inflicting upon one another. It also suggests that redemption is to be found not in obsessively remembering the past but in letting go. It's a contrived, formulaic book that mechanically put men against women, old against young, the past against the present. Toni Morrison's Paradise explores a little-known fact of African-American history: the migration of African Americans to the West after the Civil War. Like many whites who went west in the latter half of the nineteenth century, African-Americans who migrated west sought a better life. In the case of African-Americans, however, a central part of that better life was isolation from white discrimination. For that reason, black townships were formed in Oklahoma and Texas. Morrison's novel focuses upon a fictional township called Ruby in the state of Oklahoma during the 1970's. Paradise presents the lives and interactions between residents of an all-black town, Ruby, and its neighbors, a group of women who live outside of town which is known as the "Convent." Patricia Best, the town's self-appointed historian, describes the beautiful, tall, and graceful people of Ruby as eight-rocks (8-R), because of the blue-black color of their skin that resembles "a deep level in the coal mines." (193) Key Words : Slavery, violence, conflict, Exploitation.

DR. ARADHANA GOSWAMI

Paradise (1997) Morison's seventh novel starts with violence and murder and of women on a dewy morning in Ruby, Oklahoma. It is based on an imagined history moving back and forth. It flashes on past life and its effect on present life. Morrison depicts the gaps between old and new generation and immensely complicated history.

Paradise presents before the readers different types of characters whose identity is portrayed as dominated by otherness, reflections of identities, views, commands or prohibitions, and even rejections of other characters. Whereas the citizens of Ruby lived in an isolated world, Morrison shows the impossibility and dangers of assumed self-identical identity. Morrison depicts the all-black patriarchal community of the town of Ruby in contrast to the liberal female community of the Convent. Morrison's opening sentence in Paradise 'they shoot the white girl first,' is deliberately arresting, but at the same time deliberately enigmatic, since the reader never know which the white girl is. Morrison answered of this:

I wanted to signal race from the very beginning, and then erase it, so that I made it possible to ask the question: who is the white girl? And then hope that I could write as well enough so that either it wouldn't matter, you knew all you need to know about those girls; or so it mattered so much you might ask yourself why you're worrying?

(Viner Katharine 2-5)

The men of Ruby are used to controlling their women; therefore they feel threatened by the self. Sufficiency of the female community, mainly because they have no means of controlling them. One is an all Black, middle-class town called Ruby with a population of three hundred and sixty churches. The other community is based in an old mansion called the Convent, where five women live tighter in "blessed malenessness" (177). Initially this place is safe from white racism and post World War II materialistic corruption, crimes, and even death. But in the 1970s, where the novel is located, problems among its members begin disrupting peace of Ruby. Some of the men regard the Convent as the cause of Ruby's destruction, raid the place and shoot all the women. These women come from different parts of the United States and from diverse backgrounds; they have at least one thing in common: their rejection of men, for men represent the patriarchal society that has mistreated them. A mansion that townsfolk have named the

Assistant Professor (Department of English), Govt. Lahiri College, Chirmiri, Dist.-Korea (Chhattisgarh)

- Retrospecting Sri Aurobindo's Vision On Education — 70-73
  Arati Upadhyay
- Estimating Contributions of Tourism: The Conception of Tourism Satellite Accounts (Tsa) — 74-81
  Bikram Pegu
- Indian Banking System And Ifrs: Impact of Ifrs On Indian Banking System Directly & Indirectly — 82-88
  Balkishan Vaishnav
- Female Foeticide in Modern Society and Role of Police — 89-95
  Suman Maurya, Sanjeevan
- Modern Relevance of Sixteen Samskara — 96-99
  Puja Dey
- Title: "Be Shame... They are at.. Age of Game: The Issue of Child Abuse" — 100-108
  Dr. Dimpal T. Raval
- Redefining India –China Relations In Obor Perspective — 109-115
  Yadavendra Dubey
- Importance of language in literature in reference to Kashinath Singh's Novel *Kashi Ka Assi* — 116-118
  Shiv Prakash Yadav
- Challenges and Problems of Rural Entrepreneurship in India — 119-126
  Rahul Singh
- Higher Education In India: Hindrances And Measures To Overcome Those — 127-130
  Dr Aradhana Goswami
- Slum Management And Development In South-West Delhi — 131-138
  Dr. Uttara Singh
- Competition Law In India: With Special Reference To The Abuse Of Dominant Position — 139-146
  Vijay Kumar
- The Origin and Development of Realism — 147-153
  Dr. Snigdha Mishra
- Post-War of Sri Lanka: Changing Role of India — 154-159
  Dr Ranvijay

Higher Education In India: Hindrances And Measures To Overcome Those

Dr Aradhana Goswami[*]

Abstract: *Beyond any doubt education plays a very vital role in the development and progress of any country. In a developing country education gains even more importance. Education is an important part of human civilization by which we transfer long collected knowledge from one generation to another generation. By passing long time education has shaped in three levels, these levels are well known as Primary, Secondary and Higher education. Higher education is an important part of development of every country. Now in India, Higher education is an important way to grow up with the perspective of Indian development but in running condition. Higher education has been surrounded with several problems and educationists still in search to resolve these conditions to lead India in fast growing globolize world.*

Problems relating to higher education in India –Privatization and commercialization, political interference and corruption , mismanagement and agitations, falling standards and irrelevance, decline in the standards of research work, teacher-students ratio, Curriculum frame work not according to the growing needs, indiscipline created by students, professional relation between teacher and students, monitoring agency (UGC) has limited resources to check quality of education, less salary of the teachers, advanced technology is being not supplied in adequate amount to the students, education planners are still following old pattern to create new policies, Medium of education, traditional methods of teaching, lack of refresher and orientation courses for the teacher, absence of proper guidance and counselling, lack of proper quality checking of the Institutions-are topics of public discussion almost on a day-to-day basis.

In conclusion it is the major categorizations i.e. Curriculum, teacher, students, learning environment, ICT methods and evaluation where the researcher has made an effort to locate the hindrances in effective teaching and provided suggestions to overcome them.

"True education must correspond to the surrounding circumstances or it is not a healthy growth" (Mahatma Gandhi).

Education is the best antipoverty sword in the hand of any government. The primary and secondary education is right of every person and therefore is the main duty of government to provide education for all. But so for higher education is concerned the main problem is that of funding the system and it is important issue which the higher education is facing. The teachers belong to the intellectual class of the society and they are affected with privatization. Classroom is a place where a more mature person like the teacher creates a

[*] **(Assistant Professor), Dept. Of English Govt. Lahiri College Chirimiri Korea Chattisgargh**

JODHPUR STUDIES IN ENGLISH

Vol. XVI, 2018

Board of Editors: KALPANA PUROHIT
SATISH KUMAR HARIT

Guest Editor: SHARAD K. RAJIMWALE

Department Of English
Jai Narain Vyas University, Jodhpur
Rajasthan, (India)

CONTENTS

1. Does a Name Matter?:
   Problematic of Anglo- Indian Literature 1
   -Susheel Kumar Sharma

2. Re-Reading History :A Study of
   Amitav Ghosh's The Shadow Lines 31
   -S.P.S Dahiya & Shikha

3. Widening the Horizon: A Reading Of Select
   Contemporary Indian Novels In English By Women 37
   -Vijay Sheshadri

4. Bridging Oceans: Cultural Encounters and
   Hyphenated Identities in Shantaram 43
   - Pradeep Trikha

5. Twelfth Century Renaissance and
   Revival of Latin Classic 52
   -Sharad Rajimwale

6. Teaching of English Word Stress, Sentence Stress
   and Rhythm to the Undergraduate Students
   Using English Literature in Indian Universities 61
   - Asif Shuja

7. Stigma Of Slavery And Racial Identity
   Crisis In Toni Morrison's The Bluest Eye 75
   -Aadhhana Goswami & Monika Gupta

8. Character Actors of the Hindi Cinema
   Zamin Kha Gayi Aasman Kaise Kaise 82
   - Aarttee Kaul Dhar

9. Buchi Emecehta's The Bride Price:
   A Continuing Reality 96
   - Rekha Sharma

Stigma of Slavery and Racial Identity Crisis in Toni Morrison's *The Bluest Eye*

-Aadhhana Goswami

- Monika Gupta

In *The Bluest Eye* (1970) the central theme is the effect of the standardized Western ideals of physical beauty and romantic love not only on the black women of Loraian, Ohio, but also on the black community's perception its worth. All of the adults in the book, in varying degrees, are affected by their acceptance of the society's inversion of the natural order. For internalizing the West's standards of beauty, the black community automatically disqualifies itself as the possessor of its own cultural standards. But beyond the statements of cultural mutilation that Pecola's desire for the bluest eye illustrate, Morrison Challenges the unnaturalness of a belief system in which physical beauty is associated with virtue. Such a system creates a hierarchy in which only a few can be worthy of love and happiness, while the rest are condemned to yearn hopelessly for self-fulfilment. *The Bluest Eye* thus discusses a theme that is both universal and particular to the black female experience: the desire for freedom from racial and sexual victimization: the search for self-definition and autonomy, for personal spiritual wholeness, the search for equitable male-female relationships, the need for love and friendship. (Judith H. Livingston) Mostly black female characters in fiction experience humiliation and suffer an acute isolation in a white racist society that has marginalized them. They are considered outcasts who do not enjoy any class and racial privilege and are often silenced by the hostile gaze of others.

Violence against women is approaching like giant. This is not the problem only of one country but of all the women on this earth. Every day in news papers, news channels and through other sources we come across that women are either raped, killed or being burnt for dowry. They face different types of violence like, mental, sexual physical or verbal in their day today life. A woman has to face dual oppression if she is a woman and poor. But it becomes more pathetic if she is exploited on the basis of caste and race. Toni Morrison, a 1993 Nobel Laureate for literature is one of the most prominent in the history of African- American literature. Morrison, in her artistic world, deals with the women of first half of the twentieth century who, brought up in a traditional environment, struggles to liberate themselves and seek their self identity and independence. She depicts their actual experiences, silences, repression and oppression. She presents the trauma of black life and universalizes oppression. She depicts the stifled and anguished existence of the Afro- American women; their pain of being black and a woman. In the novel *The Bluest*

The Cultural Semiotics of English Language and Literature

Editors

Dr G Kalvikkarasi
Associate Professor, DRBCCC Hindu College

Dr S Sridevi
Associate Professor, CTTE College for Women

© Emerald Publishers, 2018

No part of this book may be reproduced in any written, electronic, recording, or photocopying without written permission of the publisher or author. The exception would be in the case of brief quotations embodied in the critical articles or reviews and pages where permission is specifically granted by the publisher or author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

Published by
Olivannan Gopalakrishnan
Emerald Publishers
15A, First Floor, Casa Major Road
Egmore, Chennai - 600 008.
☎: +91 44 28193206, 42146994
✉: info@emeraldpublishers.com
: www.emeraldpublishers.com

Price : ₹ 600.00
ISBN : 9788179664711

Printed at : Aruna Enterprises, Chennai.

Contents

1. The Impact of War and Trauma in Rani Manicka's Selected Novels
Dr. Manimangai Mani and Ayaicha Somia 1
2. English Language Teaching Methods Using Pseudo Theatre Activities and Theatre-like Activities: Towards a Method Using Full-fledged Theatre Form
Dr.Kandiah Shriganeshan 14
3. A Comparison of Truth And Fiction: Aravind Adiga's The White Tiger
Dr. V Lakshmi 24
4. Objectification, Rejection, Suppression and Feminine Resistance in African Novel
Abubakar Mohammed Sani 28
5. Toni Morrison's Novels: Historical Trauma of Race and Identity Crisis
Dr. Aradhana Goswami 37
6. Bigg Boss And George Orwell's 1984 And The Concept Of Being 'Under Surveillance'
S. Sharon Grace 44
7. Exploitation of the Marginalised Community in Sivakami's The Grip of Change: A Critical Study
S. Jothiswari 47
8. Toni Morrison's The Bluest Eye: A Cultural Semiotic Approach
Dr. D. Rajakumari 51
9. Patriarchy, Inferiority and Abject in Dipika Rai's Someone Else's Garden
Manar Mohammad Chyad 57

Toni Morrison's Novels: Historical Trauma of Race and Identity Crisis

Dr. AradhanaGoswami
Department of English
Government Lahiri College, Chirimiri
Chhattisgarh

Toni Morrison, a Noble Laureate, is one of the foremost twentieth century African-American women novelists whose award winning novels have captivated the hearts of common readers as well as the scholars of literature. Her works deal with major contemporary social issues like racism, class exploitation and sexism. Morrison, through her novels, presents the non-linear African- American socio-historical reality, fragmented by a historical past of disconnection and raptures. Her works offer a fresh perspective on black life, their history and genealogy. The major focus of her works is apartheid, slavery and racism, and their psychological and social effects on the blacks over the ages. Not only restricting themselves to the effects of these practices, writers like Toni Morrison have traced the historical development of these ideologies. Morrison's novels show the victimization of black people within the context of a racial social order. The social history found in her novels is the history of daily inescapable assault by a world which denies minimum dignity to the Blacks. The overriding theme of her novels is the sense of identity of a black person trying to recover his history and cultures, which had so far been suppressed due to white narcissism. In her novels Morrison not only explores racism in the twentieth-century United States from the point of view of blacks, but by centring her stories on black women and their positions within their communities, she draws the reader's attention to intra-racial issues. She universalizes oppression- where blacks torment blacks, whites oppress blacks, women are against women, parents torture their children etc.

African American literature battles to assert the black Americans' history and identity that were dashed by the American whites. Prior to the American Civil War, this

First edition, 2018
ISBN : 13 : 978-1428003496
ISBN : 10 : 1428003496

Copyrights © 2018
No Material from this book should be reproduced elsewhere without the permission of the Publishers. The Publishers or the Editors need not necessarily agree with the views expressed in the Contributions to the book.

Editor : Dr. Raj Kumar Singh
Asst. Prof.-Libray Science
Lalata Singh Rajkiya Mahila
P.G. College Adalhat, UP, India
Email : singhrk262@gmail.com

Year: 2018

BLACK PEARL

Contact Address :
Black Pearl Publication
Hub :International Book Publication
Street:502 California st. San Francisco CA
City: San Francisco
State: CA
Postal Code: 94104
Country: US
Phone: +1.14157988908

Price : $ 90

QUALITY ENHANCEMENT OF ACCREDITATION IN HIGHER EDUCATION
-VAISHALI UNIYAL 638

AUTHENTICITY OF DIGITAL INFORMATION IN THE INTERNET
-MR. ANIL KUMAR SINGH 649

ETHICAL AND MORAL VALUES IN INDIAN HIGHER EDUCATION SYSTEM
-DR. ARADHANA GOSWAMI 659

CHALLENGES AND ISSUES IN HIGHER EDUCATION
-DR. GAGAN KUMAR
-SMT. PRIYANKA BHARTI 662

ISSUES AND CHALLENGES IN INDIAN EDUCATION SYSTEM
-AMIT KUMAR 667

COMPUTER-AIDED TEACHING
-SUBEDAR PRASAD
-CHITRASEN GUPTA 677

INDIAN HIGHER EDUCATION IN GLOBAL PERSPECTIVE
-DR. ALOK YADAV 680

EMERGING CHALLENGES IN MANAGEMENT EDUCATION
-DR. VIJAY KUMAR TIWARI
-DR. AVTAR DIXIT 686

Ethical and Moral Values in Indian Higher Education System

DR. ARADHANA GOSWAMI*

Educating the mind without educating the heart is no education at all (Aristotle).

India is predicted to play a very vital role in world education system by various eminent intellectuals all across the globe in recent time. our government is doing in best for creating favourable environment for realizing this dream. Our education department is one such section which is needed to be modified with time. We live in a society which is based on the principle of harmony. Different components of the society need to work as a collective system for keeping it lively. if we want to make our country a developed one then we need to establish a rational education system. Citizens should be educated for serving certain specific purpose and not for providing degrees only. The future of human civilization is based on how well we innovate our self and become better day by day. Education can provide a key role in improving the human civilization.

The word Ethics has been derived from the Greek word 'ethos' which means character and from Latin word 'Mores' which means customs. It can be defined as the moral values, rules or standards governing the conduct of a particular group, profession or culture. According to Aristotle, 'Ethics is more than a moral, religious or legal concept'. Aim of education is to help students to develop into highly evolved and morally oriented human beings. Education is one of the mean of transmission of ethical values and accumulated knowledge of the society. Every student is influenced by the personality and behaviour of teacher as well ad with the school atmosphere. They view them as their role model and place before them, as teacher is ideal for them.

Higher education has an important figure in the emerging knowledge society. Higher education is indispensable part of education system of India. Many higher educational institute and governing bodies UGC, AICTE, NCTE are turning a deaf ear towards the illegal activities of some of the academic players. Lack of clarity of government's policy on the issue of privatization

* Assistant Professor, Dept. of English, Govt. Lahiri PG College, Chirimiri Korea, Chhattisgarh. E-Mail - agoswami1203@gmail.com

Emerging Trends in English Drama

First Edition: 2019 - 20

© Author

☞ No part of this book can be reproduced / reprinted / used without due acknowledgement of the Author/Publisher.

Publisher:
Institute for Social Development and Research, Ranchi, Jharkhand.

ISBN: 978-81-942601-4-1

Price: Rs. 520.00

10. Sheridan's Achievement Vis-A-Vis- The Restoration Drama 68
-Dr. Laldeo Yadav
Teacher, D.A.V. Public School, Aurangabad, Bihar

11. Mahesh Dattani's Plays: A New Phase in Indian English Drama 73
-Dr Aradhana Goswami
Assistant Professor, Dept of English, Govt. Lahiri PG College (Sant Gahira Guru Sarguja University), Chirimiri, Koria, Chhattisgarh

12. Upamanyu Chatterjee and Emerging Trends in Indian English Drama 77
-Sarika Bhagat
Research Scholar, Dept. of English, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand

13. Girish Karnad and the Tradition of Drama 85
-Dr. Ranjeet Kumar Prasad
Assistant Teacher (English), Durga Unchch Vidya Mandir, Bishunpura, Ziradei, Siwan, Bihar

14. An Appraisal of Literary Works of Satyajit Ray 89
-Amarnath Dutta
Asst. Professor, Faculty of English, Department of Science & Humanities, R.V.S. College of Engineering & Technology, Jamshedpur, Jharkhand

15. Drama- the Reflection of Life W.R.T. English Literature and Indian Drama 96
-K Sarika Chand
Research Scholar, Dept. of English, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi, Jharkhand
Currently: PRT (English), Delhi Public School, Ranchi, Jharkhand

16. Realism in Henrik Ibsen's Ghosts 105
-Anita Alda
Asst. Prof., Dept. of English, K.B. Women's College, Hazaribag, Jharkhand

17. R. N. Tagore as a dramatist with special reference to the symbolism of "The Post Office" 110
-Lily Roy
Research Scholar, University Department of English, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand

18. Rohinton Mistry and the Modern Indian Tradition of Drama 116
-Dr. Rahul Kumar Prasad
Asst. Professor, Dept. of English, Prabha Prakash Degree College, Punjwar, Siwan, Bihar

19. Relevance of the study of folklore to Sociolinguistics 122
-Dr. Mamta Kerketta
Assistant Professor, Department of English, Ranchi Women's College, Ranchi, Jharkhand

20. Emerging Trends in Modern English Drama 126
-Dr. Kiran Kumari Sah
Assistant Professor, Head, Dept. of English, Sita Ram Sahu College (M.U. Bodh Gaya), Nawada, Bihar

10. Sheridan's Achievement Vis-A-Vis- The Restoration Drama
-Dr. Laldeo Yadav 68
Teacher, D.A.V. Public School, Aurangabad, Bihar

11. Mahesh Dattani's Plays: A New Phase in Indian English Drama
-Dr Aradhana Goswami 73
Assistant Professor, Dept of English, Govt. Lahiri PG College (Sant Gahira Guru Sarguja University), Chirimiri, Koria, Chhattisgarh

12. Upamanyu Chatterjee and Emerging Trends in Indian English Drama
-Sarika Bhagat 77
Research Scholar, Dept. of English, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand

13. Girish Karnad and the Tradition of Drama
-Dr. Ranjeet Kumar Prasad 85
Assistant Teacher (English), Durga Unchch Vidya Mandir, Bishunpura, Ziradei, Siwan, Bihar

14. An Appraisal of Literary Works of Satyajit Ray
-Amarnath Dutta 89
Asst. Professor, Faculty of English, Department of Science & Humanities, R.V.S. College of Engineering & Technology, Jamshedpur, Jharkhand

15. Drama- the Reflection of Life W.R.T. English Literature and Indian Drama
-K Sarika Chand 96
Research Scholar, Dept. of English, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi, Jharkhand
Currently: PRT (English), Delhi Public School, Ranchi, Jharkhand

16. Realism in Henrik Ibsen's Ghosts
-Anita Alda 105
Asst. Prof., Dept. of English, K.B. Women's College, Hazaribag, Jharkhand

17. R. N. Tagore as a dramatist with special reference to the symbolism of "The Post Office"
-Lily Roy 110
Research Scholar, University Department of English, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand

18. Rohinton Mistry and the Modern Indian Tradition of Drama
-Dr. Rahul Kumar Prasad 116
Asst. Professor, Dept. of English, Prabha Prakash Degree College, Punjwar, Siwan, Bihar

19. Relevance of the study of folklore to Sociolinguistics
-Dr. Mamta Kerketta 122
Assistant Professor, Department of English, Ranchi Women's College, Ranchi, Jharkhand

20. Emerging Trends in Modern English Drama
-Dr. Kiran Kumari Sah 126
Assistant Professor, Head, Dept. of English, Sita Ram Sahu College (M.U. Bodh Gaya), Nawada, Bihar

Mahesh Dattani's Plays: A New Phase in Indian English Drama

Dr Aradhana Goswami
Assistant Professor, Dept of English, Govt. Lahiri PG College
(Sant Gahira Guru Sarguja University), Chirimiri, Koria, Chhattisgarh

Abstract

Mahesh Dattani is a man of multi dimensional personality. His plays deal with gender identity, gender discrimination, and communal tensions. The play *Tara* deals with gender discrimination, *Thirty Days in September* tackles the issue of child abuse head on, and *Final Solution* is about the lingering echoes of the partition. The plays of Dattani are characterized by some theatrical and thematic innovations. He is confluence of art and craft. He has not only intellectual power and prowess to produce a play in text but has an ability to get it stage successfully. Dattani has an unconventional approach to theatre. His plays externalize the problems and pent up feelings of the subalterns in a very authentic and realistic manner. He has made sustained and sincere efforts for making stage befitting to Indian milieu. He uses Indian words profusely in his English plays. Dattani is a forefront playwright in contemporary Indian Drama in English. He has authored more than one and a half dozen plays differing in themes, tone and treatments. Dattani is the spokesman of the unprivileged section of our society. He has examined and analysed the problems of women, children, eunuchs and minorities in his plays. He presents socio-political realities of our time.

The present paper focuses on the contribution of Mahesh Dattani's contribution to Indian English drama by introducing the issues in his plays which are considered as taboos in Indian society.

Introduction

Mahesh Dattani, a multifarious artist of contemporary Indian English drama is a director actor dancer teacher and writer all rolled into one. Mahesh Dattani is the first playright in English to be awarded the Sahitya Akademi Award for Final Solution. Tara and Thirty days in September are awarded as the best productions of the year directed by Arvind Gaur. His plays reveal that the most of his plays are rooted in urban milieu of India. He has dramatized the

ISBN 978-81-952235-0-3, Women Development, ISDR, Ranchi, India

Women Development

9120

First Edition: 2021

© Institute for Social Development and Research, Ranchi, Jharkhand

☞ No part of this book can be reproduced / reprinted / used without due acknowledgement of the Editor / Publisher.

Publisher:
Institute for Social Development and Research, Ranchi, Jharkhand

ISBN: 978-81-952235-0-3

Price: Rs. 340.00

ISBN 978-81-952235-0-3, Women Development, ISDR, Ranchi, India

Contents

1. Strategies for women's development
-Dr. Neelam Kumari 7
Associate Professor, Dept. of Sociology, R.P.M. College, Patna City, Patna, Bihar

2. From Sudraka's Vasantasena to Bessie Head's Dikeledi: A Journey of 'New' Women from 'Periphery' to 'Centre'
-Hindol Chakraborty 10
Ph. D. Scholar, Dept. of English, Jharkhand Rai University, Ranchi, Jharkhand

3. Role of Indian English Literature in Women Empowerment
-Dr. Aradhana Goswami 18
Assistant Professor, Department of English, Government Lahiri PG College, Chirmiri, Dist. Koriyaa, Chhattisgarh

4. Feminism in USA
-Aparna Sen 24
Researcher, Department of Political Science, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand

5. Role of Education in Women Development
-Nahid Jabeen 30
Research Scholar, Dept. of Geography, Magadh University, Bodhgaya, Gaya, Bihar

6. The Importance of Education in Women Development
-Dr. Sudha Kumari 34
Lecturer & Head, Department of English, S.S.A.M. College, Nawada, Bihar

7. Role of education in women development
-Dr. Dil Mohan Sah 39
Associate Professor, Head, Department of English, R.M.W. College (M.U. Bodh Gaya), Nawada, Bihar

8. Education is the key to Women's Development
-Dr. Pragati 45
Assistant Professor, University Dept. of Home Science, L.N. Mithila University, Darbhanga, Bihar

9. Effects of Dowry on Familial, Educational, Psychological and Social Areas in Bride and her Parents Lives
-Dr. Khusboo Prasad 49
Assistant Teacher (English), R.H.S. Govt. High School, Lakrakhanda, Bokaro, Jharkhand

ISBN 978-81-952235-0-3, Women Development, ISDR, Ranchi, India

Role of Indian English Literature in Women Empowerment

Dr. Aradhana Goswami
Assistant Professor, Department of English, Government Lahiri PG College, Chirmiri, Dist. Koriyaa, Chhattisgarh

Abstract

It is well said that Literature is mirror of society. Women representation in literary texts seems to vary in different ways. Some female characters appear as "commodities" of men's urges and desires, victims of marginalized oppression, and even as the "uneducated and regressive members of society". Through the progress and modernization of literature, women characters break away from these stereotypical representations as they become the powerful and resonating forces in different novels, stories and plays. Even though we, as readers, have our own temporary notions of women representation, it is hard to isolate our own biases on them. Truly, women representations in the field of literature are ambiguous that makes us wonder if these circumstances mirror real life. If we look at Indian English writing we find that author's especially female writers have strongly raised their voices against patriarchal system and exploitation of women in their works.

The present paper aims to focus that Indian women have contributed significantly as equivalent to men authors to the global literature. India's contribution was primarily through the Indian writing in English, with novelists at the forefront in this regard. A number of contemporary scene novelists have expressed their creative urge in no other language than English & credited Indian English fiction as a distinguishing force in world fiction. It assimilates the newly confronted circumstances and the nuanced dilemmas of the modern world. The new English novel shows confidence in dealing with new themes and deals with new techniques and approaches to dealing with these themes.

Key words: *patriarchy, exploitation, contemporary*

In Ancient India, many scriptures had written about the situation of the women, where she enjoyed equal status as that of men. Not only in the sphere of rights but also in the field of education, were

Journal of Literature, Culture & Media Studies (ISSN-0974-7192) is published twice a year in summer and in winter. It is a Multidisciplinary International Peer Reviewed Research Journal of Higher Education on Literature and Literary Theory, Art & Aesthetics, Cultural & Media Studies, Linguistics & English Language Teaching, Philosophy & Education, Hypertext & Communication Studies, Humanities & Social Sciences.

Manuscripts should be written in 3000 words, prepared according to the latest *MLA Handbook* style. Author's name should appear on the cover page only. Manuscripts should be submitted in MS-Word along with two copies, double space throughout and accompained by duly stamped, self-addressed envelope. All the papers submitted for publication will be evaluated by the Journal's referees. Only those papers which receive the favourable comments will be published. For book reviews, two copies of the book should be sent to the Editor-in-Chief. All enquiries should be made to either of the following addresses:

The opinion and observation of the writers are their own and editors do not share their opinion.

Prof. N.D.R. Chandra
Dept. of English, Post Box-430
Nagaland (Central) University,
Kohima Campus, Pin-797001
Phone-03702291470, 9436604508
Email : chandra592001@yahoo.com

Prof. N.D.R. Chandra
B-19, Central Avenue
Smriti Nagar, Dist.-Durg
Chattisgarh, Pin-490020
Cell- 8839846585
Cell- 9436830377
kcchandra66@gmail.com

Website of the journal : http//www.i-scholar.in, Zindexe.php/JLCMS/Index

Cheques/Money Transfer etc. are acceptable at either of the above addresses		
Subscription for life member	Rs. 5000/-	(Individual)
Subscription for life member	Rs. 10000/-	(Institutional)
Subscription for 5 years	Rs. 3000/-	(Individual)
Subscription for 5 years	Rs. 5000/-	(Institutional)
Annual membership	Rs. 500/-	(Individual)
Annual membership	Rs. 1000/-	(Institutional)
Single copy	Rs. 250/-	(Individual)
Single copy	Rs. 500/-	(Institutional)

Journal of Literature, Culture & Media Studies Vol. XI & XII

CONTENTS

RESEARCH PAPERS

1. Translator as Cultural Ambassador — 5
- Basavaraj Naikar

2. Pandemic Narratives of Re-dreaming and Self-becoming: Interpreting the Condition of Indian Women — 15
- Shubha Dwivedi

3. Acceptance Of Google Meet And Google Forms for Online Teaching-Learning and Evaluation During Covid-19 Pandemic — 34
-Vikas Chandra

4. Narratives of Gendered Subalternity : A Study in V.S. Naipaul's Half- a- Life — 49
-Mithilesh K. Pandey

5. Common Man and Literature of Indian Partition — 60
-Md. Badiuzzaman

6. V.S.Naipaul : His Life, Thoughts and Art — 70
- Daisy Kumari

7. Race and Gender Marginalization in Toni Morrison's *The Bluest Eye* — 74
-Aradhana Goswami, Jamashed Ansari

8. Fiction as Alternative History: A Reading of Toni Morrison's Beloved — 80
-Vizovono Elizabeth

9. Issues of Racial Prejudice and Nostaligia in Bharati Mukherjee's *The Tiger's Daughter* — 90
-Sanket Kumar Jha

10. Thematic Analysis of Kiran Desai's *Hullabaloo In The Guava Orchard* — 102
-P.B.Teggihalli

11. Indian English Campus Novels: Degrading Morals of Indian Academics — 109
- Charvi Oli

12. Deconstruction of Gender Construction in David Levithan's *Every Day* — 116
-Atuonuo Kezieo

7. Race and Gender Marginalization in Toni Morrison's *The Bluest Eye*

Aradhana Goswami*, Jamashed Ansari**

Abstract: *The Bluest Eye is a novel that brings to discussion themes such as Identity, gender and race–establishing a dialogue with the 1960s debates over such subjects. These topics are analysed by Morrison through the novel's plot, formal devices and characters. Therefore, all of those elements are examined in the present chapter, in order to understand what the novelist may be suggesting about identity, gender and race. In the first section of this paper, discusses the novel's formal devices. Its structure and narrative voice are quite meaningful and give us an insight into what Morrison's trouble with the "Black is Beautiful" slogan may be. The formal devices seem to suggest that African American traditions are the key to achieving wholesome and healthy identities. Also central to Morrison's possible project of questioning beauty standards and the concept of beauty itself, are the characters who are oppressed by them and who also use them to oppress others. As Morrison points out in the afterword to The Bluest Eye, which was added to the novel in 1993, the book was written during the years of 1965-69, "a time of great social upheaval in the lives of black people" (P. 208). The author stresses the importance of remembering the political charged climate of the 1960s to understand some of the novel's central themes, so a few of the events that took place in that decade, as well as some that led to them, will be discussed now. What became known as the Civil Rights Movement actually refers to a series of events and mobilizations that happened in the United States throughout most of the 20th century and are rooted not only on the American Civil War of 1861–1865, but on the entire slavery process that blacks underwent while in North American ground and its aftermath. During the Reconstruction period after the end of the Civil War, African Americans vehemently claimed for their rights to vote and protested segregation in spheres such as public transportation and education. Nonetheless, a large number of white citizens, especially in the South, engaged in racial violent acts against black people, and feelings of war-weariness prevented many national political leaders from advocating African Americans' rights, in fear that they might lose*

Journal of Literature, Culture & Media Studies (ISSN-0974-7192) is published twice a year in summer and in winter. It is a Multidisciplinary International Peer Reviewed Research Journal of Higher Education on Literature and Literary Theory, Art & Aesthetics, Cultural & Media Studies, Linguistics & English Language Teaching, Philosophy & Education, Hypertext & Communication Studies, Humanities & Social Sciences.

Manuscripts should be written in 3000 words, prepared according to the latest *MLA Handbook* style. Author's name should appear on the cover page only. Manuscripts should be submitted in MS-Word along with two copies, double space throughout and accompained by duly stamped, self-addressed envelope. All the papers submitted for publication will be evaluated by the Journal's referees. Only those papers which receive the favourable comments will be published. For book reviews, two copies of the book should be sent to the Editor-in-Chief. All enquiries should be made to either of the following addresses:

The opinion and observation of the writers are their own and editors do not share their opinion.

Prof. N.D.R. Chandra
Dept. of English, Post Box-480
Nagaland (Central) University,
Kohima Campus, Pin-797001
Phone-03702291470, 9436604508
Email : chandra592001@yahoo.com

Prof. N.D.R. Chandra
B-19, Central Avenue
Smriti Nagar, Dist.-Durg
Chattishgarh, Pin-490020
Cell- 8839846685
Cell- 9436830377
kcchandra06@gmail.com

Website of the journal : http//www.i-scholar.in, Zindese.php/JLCMS/Index

Cheques/Money Transfer etc. are acceptable at either of the above addresses		
Subscription for life member	Rs. 5000/-	(Individual)
Subscription for life member	Rs. 10000/-	(Institutional)
Subscription for 5 years	Rs. 3000/-	(Individual)
Subscription for 5 years	Rs. 5000/-	(Institutional)
Annual membership	Rs. 500/-	(Individual)
Annual membership	Rs. 1000/-	(Institutional)
Single copy	Rs. 250/-	(Individual)
Single copy	Rs. 500/-	(Institutional)

Literature, Culture & Media Studies
Vol. IX & X

CONTENTS

RESEARCH PAPERS

1. Religious Dimensions in New Criticism — 5
- S. K. Paul

2. The Concept of Idealism in Indian English Literature: A Study of the Ideal Characters in Raja Rao's Novels *The Cat and Shakespeare* and *The Serpent and the Rope* — 17
- Yasser A. M. Ahmed Alasbahi

3. Salient Features of the Poetry of the Kamala Das — 23
-Ruma Ruhi

4. Emergence of New Woman and Her Challenges in Shashi Despande's Novels — 30
-Aradhana Goswami

5. Song as Storytelling: Oral Tradition in Toni Morrison's *Song of Solomon* — 36
-Vizovono Elizabeth

6. Social Realism Theory and Comparative Study in Tabish Khair's *The Thing About Thugs* and Toni Morrison's *The Bluest Eye* — 43
- Arun Nath, N. D. R. Chandra, S. S. Sharma

7. Trepidation and Embrace to Death, As Phenomena of Human Existence, Using the Novels of J M Coetzee and Sylvia Plath — 62
-Soundarya K. R, Shalini Infanta, L. K, Shanthichitra

8. Oppressed Desire in Black Women's Narratives and Its Manifestations in Maya Angelou's Selected Poems — 68
-Maitri Verma

9. Echoes of the Anti-War Saga in Dharamvir Bharati's *Andha Yug* — 75
-Laghima Joshi

10. Voice of Peace in Multicultural World: A Study of Stephen Gill's Poetry — 80
-Mary Mohanty

11. Issues of Gender, History and Journey: A Reading of Mamang Dai's *The Black Hill* — 88
- Kailash Kumar

12. Mood of Defiance and Assertion: A Gendered Approach to Easterine Kire's *A Man of A Woman* and *A Terrible Matriarchy*. — 95
-Petekhrienuo Sorhie

13. Tenyimia Lyrical Poetry and Textual Interpretation: Analysing "Avu Nei Hu" from a Stylistic Orientation — 105
- Kevizonuo Kuolie

14. Galsworthy's Social Concerns in his Plays — 115
- S.P.Singh Bhadauria

4. Emergence of New Woman and Her Challenges in Shashi Deshpande's Novels

Aradhana Goswami*

ABSTRACT: *In India, down the ages, women from all the caste, class and religion are suppressed and neglected. Since women had no writing experiences, their work was dominated by sentimentality and didacticism. Social, political, and economic pressures play an important role in the life of these women. Shashi Deshpande's novels show a changing society in very subtle ways. Deshpande seems to believe that it is the educated and the creative woman who will liberate herself first and contribute to women's liberation both actively as well as through her exemplary behaviour. In all her novels, the protagonists are not only educated, creative and liberated but also mature and compassionate enough to reach out to others who are at the bottom of the socio-economic ladder. Shashi Deshpande's works have come 30 to 40 years after Independence. Thus her novels reflect these political changes. Her protagonists are educated and some of them are economically independent too. They are intelligent and mature, not weak helpless beings, looking for sympathy and support; nor do they lament their victimage. Because of education, they have become aware of modern secular values such as human rights, equality, and egalitarianism etc. But in actual practice they are still victims of patriarchal domination, and realise how women have been suppressed for generations. But they also find it necessary to fight against the system in order to realize their suppressed potential. They also admit that they themselves too are responsible for the perpetuation of patriarchy. In the present research paper the scholar has tried to explore the traditional values, different shades of modernity and liberation of women in the major novels of Shashi Deshpande.*

Key Words: Equality, Suppression, Liberation, Modernity, tradition, Patriarchal, oppression.

Traditions are inseparable part of human society which is handed over from one generation to another. But with the passage of time each tradition changes its face. Change is the law of nature. Generally the meaning of modernity is associated with the sweeping changes that took place in the society. One can

International Journal of Physics and Applications
Online ISSN: 2664-7583; Print ISSN: 2664-7575; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 05-07-2020; Accepted: 20-07-2020; Published: 06-08-2020
www.physicsjournal.in
Volume 2; Issue 2; 2020; Page No. 01-02

Association of solar flux (2800 MHz) & cosmic ray intensity for solar cycle 22 and 23

SG Singh[1], Subhash Chandra Chaturvedi[2], NK Patel[3], Neelam Singh[4]
[1, 3] Department of Physics, Govt P.G College Panna, Madhya Pradesh, India
[2] Department of Physics, Govt. Lahari College Chirmiri, Chhattisgarh, India
[4] Department of Physics, Govt. College Malthone Sagar, Madhya Pradesh, India

Abstract
The variation of galactic cosmic rays in the heliosphere in correlation with the solar activity presents a high scientific interest for several aspects. The possibility of studying the energy charge (& mass), spatial & temporal distribution of cosmic rays in the interstellar space, in the vicinity of the solar system, can provide a better understanding of astrophysical mechanism like, for instance, the acceleration of charged particles in a shocked plasma. Galactic cosmic rays in turn can be used as a unique tool for deeply understanding the characteristics & the dynamics of the heliosphere. So it is necessary & significant to investigate the role of various solar parameters in the variation of galactic cosmic rays. Solar radio flux is the energy emitted by the sun with a slowly varying intensity. The amount of this energy is high in the corona & it changes gradually day to day in response to the numbers of spot groups on the solar disk.

Keywords: cosmic ray intensity (CRI), solar flares, solar flux (2800MHz)

Introduction
It is now significant to see the effect of this parameter (Solar flux) in the long-term variation of cosmic rays for different solar cycle 22, 23 & ascending phase of recent solar cycle 24. For this analysis we have used monthly mean values of solar flux (2800 MHz) & monthly mean counts of Kiel, Moscow & Huancayo neutron monitors stations (Mishra 2001, Singh 2006) [1, 2].

Here we used solar flux (2800 MHz) to derive the running cross-correlation function between cosmic ray intensity of neutron monitor Kiel (R = 2.36 GV), Moscow (R = 2.39 GV) & Huancayo (R = 13 GV) & solar flux (2800 MHz).

Methods
In this analysis we have taken the monthly mean value of solar flux from the solar geophysical data compressive report (1998) & determine cross-correlation between solar flux & cosmic rays intensity (CRI) neutron monitors Kiel, Moscow & Huncayo.

Results & Discussion
In the present analysis we have calculated running cross-correlation

Function between solar flux & cosmic ray intensity neutron monitor count rates. To see the effect of energy on running cross-correlation function we have selected the neutron monitor station Kiel, Moscow & Huncayo. Fig 1.1, fig 1.2 & fig 1.3 shows the cross-plot between solar flux (2800 MHz) & cosmic ray neutron monitor stations Kiel, Moscow & Huancayo for solar cycles 22 & 23. It is seen from the figure odd solar cycle shows similar loop structure & also even solar cycle shows similar loop structure but small in comparison to odd solar cycle. Therefore it might be said that there is a strong even-odd asymmetry in the variation of galactic cosmic rays by the solar flux (2800 MHz) for the different energy cosmic ray particles.

Conclusions
In given analysis we have find that the behavior of all cross-

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 9, pp: 280-282 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

Correlative Study of Geomagnetic Field with Solar Parameters during 2008-2020.

S.G. Singh[1], Pusparaj Singh[2], Subash Chandra Chaturvedi[3].
1, 2. Govt. Chhatrasal P.G. College Panna (M.P), India.
3.Govt. Lahri College ChirmiriKoria (C.G), India.

Date of Submission: 10-11-2020 Date of Acceptance: 24-11-2020

ABSTRACT:- In present work deals the associations of interplanetary magnetic field (B) with annual mean of solar parameters in a long period, during 2008 to 2020. It is found that the value of interplanetary magnetic field shows the increasing trend with solar parameters& also found that, the correlation coefficient is higher during 2008-2020. During the minimum phase of solar cycle, interplanetary magnetic field is higher & show controversial results for previous solar cycle.
Keyword:-Geomagnetic Field (B), Sunspot Number (Rz), Ap Index, Solar Disturbance Index (Dst).

I. INTRODUCTION:-

Cosmic ray intensity as observed on the earth surface, exhibit an approximate 11 year variation anti-correlated with solar activity (**Webb** et al 2003). Solar output in terms of solar plasma & interplanetary magnetic field ejected out into interplanetary medium consequently create the perturbation in the interplanetary magnetic field. The 11-year solar cycle is the best known variability in the sun so we have investigated association of interplanetary magnetic field with cosmic ray intensity on long-term basis. **Joselyn&McIntosh** (1981) have shown that the solar disappearing filaments have also been linked with large geomagnetic activities & interplanetary magnetic field. The cosmic ray intensity monitored at neutron monitor energies is found varying with an eleven year cycle (**Shrivastava**, et al 1993; **Singh** et al. 1999; **Shrivastava** et al 2003).
This solar modulation takes place as galactic cosmic ray propagation through the region around the sun. In this work, we have an approach slightly different from that used by earlier worker (**Grade** et al 1983).

II. METHOD OF ANALYSIS:-

For present investigated, we have sorted out interplanetary magnetic field during 2008 to 2020, data of interplanetary magnetic field taken from International Service of Geomagnetic Indices (ISGI). Data of Solar Parameters taken by National Geophysical Data Centre (NGDC) at www.ngdc.noaa.gov.website & by U.S. Dept. of commerce. NOAA, Space Environment Centre.

III. RESULTS & DISCUSSION:-

To show the Annual mean of solar parameters such as Sunspot number (Rz), Ap Index, Dst and interplanetary magnetic field we plotted the yearly mean values of the geomagnetic parameters for the period of 2008 to 2020 as shown in figure 1.1, which cover the solar cycle 24, whose correlation curve plotted in fig 1.2, which implied positive correlation & correlation coefficient. Similar curve plotted in fig 1.3 for Ap indices during the period of 2008 to 2020 which cover solar cycle 24, whose correlation curve plotted in fig 1.4, which gives positive correlation between interplanetary magnetic field &Apindices. Similar curve plotted in Fig 1.5, for Dst during period of 2008 to 2020 which cover solar cycle 24, whose correlation curve plotted in fig 1.6, which gives negativecorrelation between interplanetary magnetic field &Dstindices.The scales for the values of interplanetary magnetic field (B) with Sunspot number and Ap index clearly demonstrate a good correspondence between Solar parameters& interplanetary magnetic field (IMF) along with some peculiarities. The correlation of Interplanetary Magnetic Field with Sunspot number is r = 0.7632, with Ap Index r = 0.8731 and with Dst r = -0.8608.

Asian Basic and Applied Research Journal

4(2): 168-171, 2021; Article no.ABAARJ.617

Study the Effect of Magnetic Clouds on Geomagnetic Indices during Period 2007

S. G. Singh[1*], Subhash Chandra Chaturvedi[2], Achyut Pandey[3] N. K. Patel[1] and P. R. Singh[1]

[1]Department of Physics, Govt. Chhatrasal P.G College, M.P, 488001, India.
[2]Department of Physics, Govt. Lahiri College, Chirimiri (Koriya) C.G, India.
[3]Department of Physics, Govt. T.R.S College, Rewa, M.P, 486001, India.

Authors' contributions

This work was carried out in collaboration among all authors. All authors read and approved the final manuscript.

Short Research Article

Received 07 September 2021
Accepted 15 November 2021
Published 18 November 2021

ABSTRACT

The magnetic clouds event is a large scale interplanetary structure produced due to transient ejections in ambient solar wind. Several researchers investigate time to time to derive effect of magnetic clouds on geomagnetic field as well as cosmic rays [1]. Mishra, et. al. [2] studied effects of magnetic clouds event on geomagnetic field & cosmic rays for 3 various conditions. They have concluded that magnetic clouds associated with turban shock produce large cosmic ray intensity decreases & geomagnetic field variations. Several studies indicate a correlation in-between geomagnetic activity & southward element of interplanetary magnetic field [3]. In this study we have taken 3 & 5 events of magnetic clouds for years of 2006 & 2007. A chree study of super epocs procedure has been adopted to effects of magnetic cloud events on geomagnetic activity on short term basis. The results of chree study for taking daily value of geomagnetic Dst index for -5 to+10 days. This study has been done for both years of 2006 & 2007. Zero days are taken on arrival time of magnetic cloud events. Large decreases in Dst value for both years are seen. It indicates significant enhancement in geomagnetic field of earth due to influence of magnetic clouds. For further analysis, we have taken few magnetic clouds events to observe there association with interplanetary & geomagnetic indices.

Keywords: Interplanetary Magnetic Field (IMF); magnetic cloud; Dst index; Plasma Temperature (T); Proton density (D) and Plasma speed (V).

1. INTRODUCTION

The event of magnetic cloud in interplanetary medium was first introduced and interpreted by Burlaga et al. 1981. Magnetic cloud is a particular type of ejecta with following properties: (1) the magnetic field direction rotates smoothly through a large angle during an interval of order

**Corresponding author: Email: sgs81physics@gmail.com;*

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Physics

CORRELATIVE STUDY OF INTERPLANETARY MAGNETIC FIELD (IMF) WITH SOLAR INDICES DURING PERIOD 2008-2020

KEY WORDS: Interplanetary Magnetic field (IMF) (B), Sun-spot Number (Rz), Solar Wind Velocity (V), Ap-Index and Disturbance Strom Time (Dst).

S.G Singh* Department of Physics Govt. Chhatrasal P.G College M.P, 488001. *Corresponding Author

Subhash Chandra Chaturvedi Department of Physics Govt. Lahri College Chirmeri (Corea) C.G,

Achyut Pandey Department of Physics Govt. T.R.S College Rewa M.P, 486001.

N.K Patel Department of Physics Govt. Chhatrasal P.G College M.P, 488001.

Pusparaj Singh Department of Physics Govt. Chhatrasal P.G College M.P, 488001.

ABSTRACT

Burnberg & Deter (1954) have observed spatial anisotropy & attributed it to the existence of the extra cosmic ray particles arriving from asymptotic direction 1800 hours' local time. Long term variations of cosmic ray intensity are related to 11 year-period of solar activity related by sunspot number & the 22 year period of solar magnetic polarity cycle. Bush (1954) demonstrated for the first time sunspot cycle & cosmic rays intensity variation were anti correlated, Parker (1965) provided the theoretical explanation for this modulation. Nagashima & Morishita (1974) used sunspot number to study the long term variation of cosmic rays intensity Bowe & Hutton (1982) used solar flare number as representative of solar activity. Akassfu et al. (1985) have made a detailed study of long term variation by considering a number of parameter representing the solar activity index. The importance of propagation of disturbance to interplanetary medium associated with solar flare & sunspot number was shown by Hotton (1980) Donald et al (1982), Burlaga et al (1983). The relationship between solar wind parameters & geomagnetic disturbance has been investigated by many authors in past. Statistical studies of the correlation between the index & interplanetary magnetic field are reviewed by Hinshberg & Colburn (1969) & Snyder et al (1963). The nature of long term modulation is expected to depend upon the polarity of the solar poloidal magnetic field in addition to the sunspot numbers & other parameters of solar activity.

INTRODUCTION

The interplanetary magnetic field (IMF) is a part of the Sun's magnetic field that is carried into interplanetary space by the solar wind. The interplanetary magnetic field lines are said to be "frozen in" to the solar wind plasma. Because of the Sun's rotation, the IMF, like the solar wind, travels outward in a spiral pattern that is often compared to the pattern of water sprayed from a rotating lawn sprinkler. The IMF originates in regions on the Sun where the magnetic field is open i.e. where field lines emerging from one region do not return to a conjugate region but extend virtually indefinitely into space. The solar wind is a stream of energetic charged particles basically electrons and protons. Solar wind is flowing outward from the Sun through the solar system more than 900 km/s speed at a temperature of 1 million degrees (Celsius). A geomagnetic storm is defined by changes in the Dst (disturbance – storm time) index. The Dst index estimates the globally averaged change of the horizontal component of the Earth's magnetic field at the magnetic equator based on measurements from a few magnetometer stations. Dst is computed once per hour and reported in near-real-time. During quiet times, Dst is between +20 and -20 nano- Tesla (nT). The Ap index is averaged planetary A-index based on data from a set of specific Kp stations. The A-index provides a daily average level for geomagnetic activity. Because of the non-linear relationship of the K-scale to magnetometer fluctuations.

OBERVATIONAL ANALYSIS

In present analysis we observed interplanetary magnetic field, sun-spot number, Ap-index, Dst data due to omini website. Yearly average data observed from 2012-2020 which are given below:

YEAR	Interplanetary Magnetic Field	Solar wind Velocity	Sun- spot no.	Dst	Ap-index
2008	4.2	450	4	-8	7
2009	3.9	364	5	-3	4
2010	4.7	403	25	-9	6
2011	5.3	420	81	-11	7
2012	5.7	408	85	-12	9
2013	5.2	397	94	-10	8
2014	6.1	398	113	-11	8
2015	6.7	437	70	-14	12
2016	6.1	446	40	-10	10
2017	5.2	455	22	-9	10
2018	4.7	412	7	-6	7
2019	4.5	398	4	-5	6
2020	4.3	377	3	-3	5

RESULTS AND CONCLUSIONS

In present study, we initially determined solar Parameters during years 2008-2020, have been associated with different parameters such as sunspot numbers (Rz), interplanetary magnetic field (B), Solar wind velocity, Ap-index, Dst parameter. Solar terrestrial relationship also provides an important factor to explain the aspects of the variation of cosmic rays.

A correlative analysis has been done between interplanetary magnetic field (B), Sun-spot number, Solar wind velocity, Ap-index and Dst parameter. Yearly mean values of all parameters have been taken in correlative analysis. Direct correlation between solar wind velocity (V) & interplanetary magnetic field (B), interplanetary magnetic field and Sun-spot number, interplanetary magnetic field and Ap-index are reconfirmed for the recent periods but anti correlation between interplanetary magnetic field and Dst are reconfirmed for the resent period. For correlative analysis, we have used the period of 2008-2020.

Using the yearly mean values of interplanetary magnetic field, Sun-spot number, Solar wind velocity, Ap-index and Dst parameter, the correlation coefficient have been derived for the period 2008-2020. Coefficient of correlation is found to be positive & high for the most of the period. We have drawn cross plot for the yearly values of interplanetary magnetic field and Solar wind velocity, Sun-spot number, Ap-index in

International Journal of Research in Engineering and Science (IJRES)
ISSN (Online): 2320-9364, ISSN (Print): 2320-9356
www.ijres.org Volume 09 Issue 10 \ 2021 \ PP. 67-71

The Solar-Terrestrial Links and Energy Transfer Mechanism in Recurrent and Non-recurrent Geomagnetic activities And Impacts of Solar Plasma on Earth's

S.C.Chaturvedi[1] Achyut Pandey[2] Brijesh Singh Chauhan[3] Yash kumar Singh[4]
1. Department of physics Govt. Lahiri P.G.College Chirimiri Distt.Koriya (C.G.)
2. Department of Physics, Govt.T.R.S.College Rewa Distt.Rewa (M.P)
3. Department of Physics Govt. College Majhauli Distt.Sidhi (M.P.)
4. Department of Physics Govt. Model Science College Rewa Distt.Rewa (M.P.)

Abstract
Geomagnetic storms are the most dramatic manifestation of solar-terrestrial coupling.They involve the injection of large amounts of energy from the solar wind into the earth's magnetosphere, ionosphere and thermosphere. There are number of solar sources, two types of solar wind streams and different interplanetary parameters that are responsible for geomagnetic storms have been investigated by many researcher. Recurrent storms occur most frequently in the declining phase of the solar cycle. Non-recurrent geomagnetic storms occur most frequently near solar maximum. The low-energy ions that replace them contribute little current, and so the strength of the ring current decreases with time. This is the recovery phase of the storm. Many storm recoveries occur in at least two stages. The first stage occurs due to rapid loss of oxygen ions, and the second from the slower loss of protons. only two are well known for our climate change and global warming, one is Earth itself and other the Sun.

Date of Submission: 11-10-2021 Date of acceptance: 25-10-2021

Introduction

The basic components that influence the Earth's climatic system can occur externally (from extraterrestrial systems) and internally (from ocean, atmosphere and land systems). The external change may involve a variation in the Sun's output.Internal variations in the Earth's climatic system may be caused by changes in the concentrations of atmospheric gases, mountain building, volcanic activity.Sun, oceans, atmosphere, cryosphere, land surface and biosphere. The Sun is the main source of the Earth's weather and climate.Solar Terrestrial Links.They involve the injection of large amounts of energy from the solar wind into the earth's magnetosphere, ionosphere and thermosphere geomagnetic storms and auroral display. Geomagnetic storms also have major effects on technical systems in space.The major perturbations in ionospheric conditions that affect communications and performance of satellites in geosynchronous orbit. Thus major magnetic storms are the events of significant scientific and natural interest.Energy Transfer Mechanism.

Geomagnetic hazards

Geomagnetic storms are large scale disturbances on the earth's magnetosphere and decreases horizontal component (H) of earth's magnetic field. The solar wind pressure on the magnetosphere will increase or decrease depending on the solar activities. Solar wind pressure changes modify the electric currents in the ionosphere. The solar wind also carries with it the magnetic field of the Sun. This field will have either a north or south orientation. Either the solar wind has energetic bursts, contracting and expanding the magnetosphere, or the solar wind takes a southward polarization. The southward field causes magnetic reconnection of the dayside magnetopause, rapidly injecting magnetic and particle energy into the earth's magnetosphere. During a geomagnetic storm the ionosphere's F_2 layer will become unstable, fragment, and may even disappear. In the northern and southern pole regions of the Earth aurora will be observable in the sky. The telegraph lines in the past were affected by geomagnetic storms as well. Earth's magnetic field is used by geologists to determine rock structures. For the most part, these geodetic surveyors are searching for oil, gas, or mineral deposits. They can accomplish this only when earth's field is quiet, so that true magnetic signatures can be detected. Other surveyors prefer to work during geomagnetic storms, when the variations to earth's normal subsurface electric currents help them to see subsurface oil or mineral structures. When magnetic fields move about in the vicinity of a conductor such as a wire, an electric current is induced into the conductor. Power companies transmit alternating current to their customers via long transmission lines. The nearly direct currents induced in these lines from geomagnetic storms are harmful to electrical transmission equiptment, especially to the transformers, it overheats their coils and causes their

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"The Geomagnetic Field Variations Morphology of Geomagnetic Storms and Distribution of Plasma in the Magnetosphere"

Brijesh Singh[1] Lalji Tiwari[2] Yash Kumar Singh[3] Devendra Sharma[4] Subhash Chandra Chaturvedi[5]

1. Department of Physics Govt. College Majhauli Distt. Sidhi (M.P.)

2. Department of Physics Govt. Vivekanand College Maiher Distt.Satna (M.P.)

3. Department of Physics Govt. Model Science College Rewa Distt.Rewa (M.P.)

4. Department of Physics Govt. Model Science College Rewa Distt.Rewa (M.P.)

5. Department of physics Govt.Lahiri P.G.College Chirimiri Distt.Koriya (C.G.)

Abstract-:

There are two types of geomagnetic field variations termed as secular change and transient variations. The main field of the Earth is subject to a slow variation in time, known as secular variation. There are two kinds of transient variation, the first includes relatively small and regular daily variation, and the second is the disturbances of a more violent nature known as geomagnetic storms. Alexander von Humboldt was the first to discover the dependency of magnetic intensity on latitude and observed the geomagnetic field at various locations at Earth (**Cane, H.V.1985**)[1].The variation in geomagnetic field is known as geomagnetic storm. The magnetosphere is filled with tenuous plasmas. Five plasma domains of different energy characteristics are well identified as the plasma mantle the plasma sheet the cusp region,

Introduction-:

The variation in geomagnetic field is known as geomagnetic storm. Geomagnetic storms are major disturbances on the magnetosphere that occur when the interplanetary magnetic field turns southward and remains southward for prolonged period of time. During a geomagnetic storm main phase, charged particles in the near-earth plasma sheet are energized and injected deeper into the inner magnetosphere the Van Allen belts and the plasmasphere. Magnetosheath-like plasmas have been found at several regions in the magnetosphere.The common characteristics of plasma mantle are that they have magnetosheath-like energy spectra and flow in the anti-solar direction. The magnetosphere has two domains where relatively dense plasmas are located. In the first plasmasphere occupies a part of the inner magnetosphere and its location varies with a fraction of local time.The plasmasphere is surrounded by another domain known as plasma sheet.The plasma sheet is a sheet-like distribution (**Barlow, W.H.1848**)[2].Centered on the midplane of the magnetotail called the 'neutral sheet.The plasma particles from inner or central plasma sheet (CPS) contribute significantly in exciting the diffuse auroral luminosity, after they are precipitated into the ionosphere by various plasma processes.Plasma particles in the upper

Current Research in Pharmacology and Drug Discovery 2 (2021) 100024

Contents lists available at ScienceDirect

Current Research in Pharmacology and Drug Discovery

journal homepage: www.journals.elsevier.com/current-research-in-pharmacology-and-drug-discovery

Synthesis, molecular docking, and biological evaluation of Schiff base hybrids of 1,2,4-triazole-pyridine as dihydrofolate reductase inhibitors

D. Dewangan [a,*], Y. Vaishnav [a], A. Mishra [a], A.K. Jha [a], S. Verma [b], H. Badwaik [c]

[a] Shri Shankaracharya Technical Campus, Shri Shankaracharya Group of Institutions, Junwani, Bhilai, 490020, Chhattisgarh, India
[b] University College of Pharmacy, Pt. Deendayal Upadhyay Memorial Health Sciences and Ayush University of Chhattisgarh Raipur
[c] Rungta College of Pharmaceutical Science and Research, Bhilai, 490023, Chhattisgarh., India

ARTICLE INFO

Keywords:
1,2,4-Triazole
Schiff bases
Aromatic aldehydes
Pyridine hybrid
Dihydrofolatereductase
In-*silico* design

ABSTRACT

In this study novel derivatives of 1,2,4-triazole pyridine coupled with Schiff base were obtained in altered aromatic aldehyde and 4-((5-(pyridin-3-yl)-4H-1,2,4-triazol-3-ylthio)methyl)benzenamine reactions. Thin layer chromatography and melting point determination were employed to verify the purity of hybrid derivatives. The structures of the hybrid derivatives were interpreted using methods comprising infrared, nuclear magnetic resonance, and mass spectroscopy. The *in vitro* anti-microbial properties and minimum inhibitory concentration were determined with Gram-positive and Gram-negative bacteria. Among the derivatives produced, two derivatives comprising *(Z)-2-((4-((5-(pyridine-3-yl)-4H-1,2,4-triazol-3-ylthio)methyl)phenylimino)methyl)phenol*and *(Z)-2-methoxy-5-((4-((5-(pyridine-3-yl)-4H-1,2,4-triazol-3- ylthio)methyl)phenylimino)methyl)phenol* obtained promising results as antibacterial agents. After synthesizing different derivatives, docking studies were performed and the scores range from −10.3154 to −12.962 kcal/mol.

1. Introduction

The preparation of 1,2,4-triazole and its biotic evaluation have facilitated the development of novel potent triazole derivatives (Chen et al., 2008; Bayrak et al., 2010; Agarwal et al., 2011). The established analogs of 1,2,4-triazole with diverse pharmacological properties, including analgesic, anti-inflammatory, anticancer, antihypertensive, anticonvulsant, and antiviral activities, have attracted much attention (Tozkoparan et al., 2007; Mhasalkar et al., 1970; Przegalinski and Lewandowska, 1979; Langley and Clissold, 1988; Kelley et al., 1995; Kumar et al., 2010; El-Nassan, 2011; El Sayed Aly et al., 2015; Hassan et al., 2020; Pagniez et al., 2020; Aly et al., 2020). Hybrids were obtained with a substituted benzyl group where, 5-mercapto-3-pyridyl-1,2,4-triazole was reacted to link the 1,2,4-triazole moiety with a pyridine ring. These hybrids of 1,2,4-triazole pyridine were shown to be active against Gram-negative and Gram-positive-bacteria. In particular, good activities against Gram-negative and Gram-positive bacteria were determined for the derivatives *3-(5-(2-bromobenzylthio)-4H-1,2,4-triazol*-3-yl)*pyridine* and *3-(5-(2,4-dibromobenzylthio)-4H-1,2,4-triazol*-3-yl)*pyridine*; in our previous study (Ahirwar et al., 2018).

Previous studies have also shown that Schiff bases have a broad range of biotic properties, including anticancer, antioxidant, and anti-inflammatory, activities (Nadia et al., 2017; Yasemin et al., 2016). Therefore, we hypothesized that including Schiff bases in hybrids with 1, 2,4-triazole pyridine might allow the synthesis of derivatives with improved biological activities. Thus, the main aims of the present study were to obtain a novel bioactive series of 1,2,4-triazole Schiff bases with hybrids of pyridine and to assess their potential biotic activities.

As part of our ongoing research into hybrids derivatives, we synthesized a series of novel 1,2,4-triazole, and pyridine hybrids combined together with Schiff bases by reacting 4-((5-(pyridin-3-yl)-4H-1,2,4-triazol-3-ylthio)methyl)benzenamine with different aromatic aldehydes to produce potent antimicrobial derivatives. *In-silico* investigations against dihydrofolate reductase(DHFR) were also performed to verify the antimicrobial activities. The residual interaction of the ligand with the receptor was visualized using DiscoveryStudiosoftware.

1.1. Experimental

Melting point determination was performed using an open capillary procedure followed by thin layer chromatography to check the purity of the compounds obtained (Dewangan et al., 2010, 2011).Fourier

* Corresponding author. Department of Pharmaceutical Chemistry, Shri Shankaracharya Technical Campus, Shri Shankaracharya Group of Institutions, Junwani, Bhilai, 490020, Chhattisgarh, India
E-mail address: danu_drugs@yahoo.com (D. Dewangan).

https://doi.org/10.1016/j.crphar.2021.100024
Received 30 December 2020; Received in revised form 31 March 2021; Accepted 31 March 2021
2590-2571/© 2021 The Author(s). Published by Elsevier B.V. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/).

Scanned by CamScanner

DOI: 10.1002/jhet.3941 | Revised: 29 January 2020 | Accepted: 2 February 2020

Check for updates

ARTICLE

WILEY

PPAR gamma targeted molecular docking and synthesis of some new amide and urea substituted 1, 3, 4-thiadiazole derivative as antidiabetic compound

Yogesh Vaishnav[1] | Dhansay Dewangan[1] | Shekhar Verma[1] | Achal Mishra[1] | Alok Singh Thakur[2] | Pranita Kashyap[3] | Santosh Kumar Verma[4]

[1]Shri Shankaracharya Technical Campus, Shri Shankaracharya Group of Institutions, Bhilai, India

[2]Department of Pharmaceutical Chemistry, Shri Rawatpura Sarkar Institute of Pharmacy, Kumhari, India

[3]Department of Pharmaceutical Chemistry, Dr. R.G. Bhoyar Institute of Pharmaceutical Education and Research, Wardha, India

[4]School of Chemistry and Chemical Engineering, Yulin University, Yulin, P.R. China

Correspondence
Yogesh Vaishnav, Shri Shankaracharya Technical Campus, Shri Shankaracharya Group of Institutions, Junwani, Bhilai, 490020, Chhattisgarh, India.
Email: yogesh446688@gmail.com

Abstract

The PPAR-γ agonist enhances the insulin sensitivity and avoids the disorganized hyperglycemic by promoting the insulin guided cellular uptake of blood glucose. Therefore, in the present work PPAR-γ has chosen as the target for the molecular docking study to design an effective agonist of the same. By this research work an effort has been made to prepare amide and urea series of 1, 3, 4-thiadiazole derivatives as 4-substituted-N-(5-(4-(1-piperidino)1-piperidinyl)-1,3,4-(2-thiadiazolyl) benzamide **(4a-f)** and 1-(4-substitutedphenyl)-3-(5-(4-(1-piperidino)1-piperidinyl) -1,3,4-(2-thiadiazolyl)urea **(6a-f)**. Both the docking score as well as the pharmacological animal study data has been suggested that the electron donating group containing compound **4f** and **6f** are most potent molecules for the antidiabetic activity close to the standard drug pioglitazone. It was further observed that the unsubstituted aromatic ring containing derivatives have also considerable effect **(4a** and **6a)** than the electron withdrawing containing derivatives. After the comparison of biological data for amide and urea series, it was concluded that the urea **(6a-f)** series is more effective than the amide series.

1 | INTRODUCTION

Diabetes is one the major intimidation in the 21st century which affects the health of people globally. Diabetes affected 210 million in the year 2010 and projected to be augmented around 300 million by the year 2025.[1] Rise of glucose level in the blood causes diabetes. In diabetes, production of insulin is affected and this may be due to many reasons such as genetically or may be due to inappropriate lifestyle. Now a day's people suffering from diabetes more due to depraved lifestyle. The surplus blood sugar in diabetes can cause disorder of blood vessels throughout the body which causes complications. Diabetic condition can harm different body parts and organs such as kidneys, eyes, nerve tissues, and heart. A person suffering from diabetes is more prone to heart attack as compared to nondiabetic patient. Insulin dependent and noninsulin dependent or types-2 diabetes were the two main classes of diabetes. Due to obesity and inactive lifestyle, type 2 diabetes was observed in many cases.[2]

After the exhaustive study of literatures, it was found that the 1, 3, 4-thiadiazole derivatives are potential antidiabetic pharmacophore.[2–6] It is known that thiadiazole and its derivatives efficiently bind with the PPAR-γ (Peroxisome Proliferator Activating Receptor gamma).[7] PPAR-γ genes are well studied as they contributed toward reducing the endoplasmic reticulum stress which is responsible for insulin resistance.[8,9] Thus, PPAR-γ agonist enhances the insulin sensitivity and avoids the

 © 2020 Wiley Periodicals, Inc.

Scanned by CamScanner

Design, Synthesis, and Characterization of Quinoxaline Derivatives as a Potent Antimicrobial Agent

Dhansay Dewangan,[a] Kartik Nakhate,[a] Achal Mishra,[b]* Alok Singh Thakur,[c] Harish Rajak,[d] Jaya Dwivedi,[c] Swapnil Sharma,[f] and Sarvesh Paliwal[f]

[a]Rungta College of Pharmaceutical Sciences and Research, Bhilai 490024, Chhattisgarh, India
[b]Shri Shankaracharya Institute of Pharmaceutical Science, Junwani 490020, Chhattisgarh, India
[c]Sri Rawatpura Sarkar Institute of Pharmacy, Kumhari 490042, Chhattisgarh, India
[d]Department of Pharmacy, Guru Ghasidas Central University, Bilaspur 495009, Chhattisgarh, India
[e]Department of Chemistry, Banasthali University, Banasthali 304022, Rajasthan, India
[f]Department of Pharmacy, Banasthali University, Banasthali 304022, Rajasthan, India
*E-mail: achal.mishra03@gmail.com

Received July 3, 2018
DOI 10.1002/jhet.3431
Published online 00 Month 2018 in Wiley Online Library (wileyonlinelibrary.com).

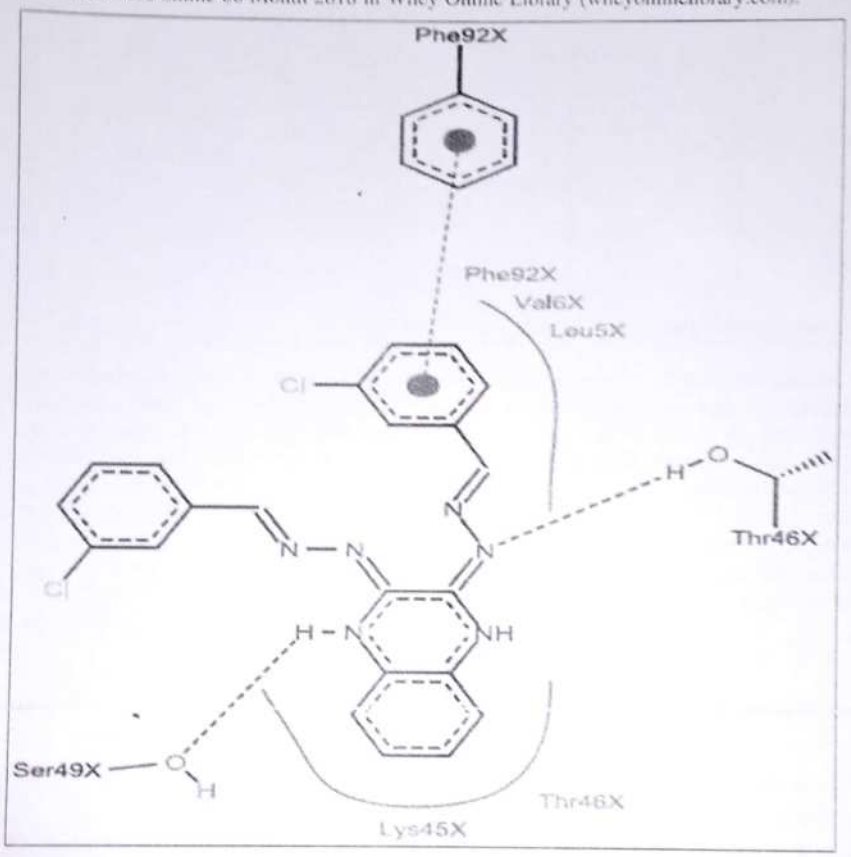

A series of quinoxalinone derivatives were synthesized by the reaction of o-phenylenediamine with oxalic acid to yield 1, 4-dihydro quinoxaline-2, 3-dione (**1**) and then treated with thionyl chloride to yield 2, 3 dichloro quinoxaline (**2**). This was further reacted with hydrazine hydrate to produce 2, 3-dihydrazinyl quinoxaline (**3**). This was finally reacted with substituted aromatic aldehydes to produce 2,3-*bis*[2-(sustituted benzylidine) hydrazinyl] quinoxalines (**4**). These quinoxalinone derivatives were characterized by infrared spectroscopy and nuclear magnetic resonance spectroscopy and MASS spectral data. All the synthesized compounds were evaluated for their antimicrobial activity. The results of the antimicrobial study revealed that compounds **4c**, **4d**, and **4i** were active and exhibited better inhibitory activities as compared to standard drug ciprofloxacin. The results were further checked with protein legend interaction by using docking studies, and all the compounds exhibited good docking scores between −8.72 and −11.29 kcal/mol against dihydrofolate reductase protein fragment from *Staphylococcus aureus* (PDB ID-4XE6). Among all compound, **4c** has shown maximum docking score and found in agreement to *in vitro* studies.

© 2018 Wiley Periodicals, Inc.

Scanned by CamScanner

Month 2018

Synthesis and Molecular Docking Study of Novel Hybrids of 1,3,4-Oxadiazoles and Quinoxaline as a Potential Analgesic and Anti-Inflammatory Agents

Dhansay Dewangan,[a]* Kartik T. Nakhate,[a] Vinay Sagar Verma,[a] Kushagra Nagori,[a] Hemant Badwaik,[a] Nisha Nair,[a] Dulal Krishna Tripathi,[a] and Achal Mishra[b]

[a]Rungta College of Pharmaceutical Sciences and Research, Bhilai, Chhattisgarh 490024, India
[b]Faculty of Pharmaceutical Sciences, SSGI, SSTC, Junwani, Bhilai, Chhattisgarh, India
*E-mail: dansy_drugs@yahoo.com

Received April 16, 2018
DOI 10.1002/jhet.3363
Published online 00 Month 2018 in Wiley Online Library (wileyonlinelibrary.com).

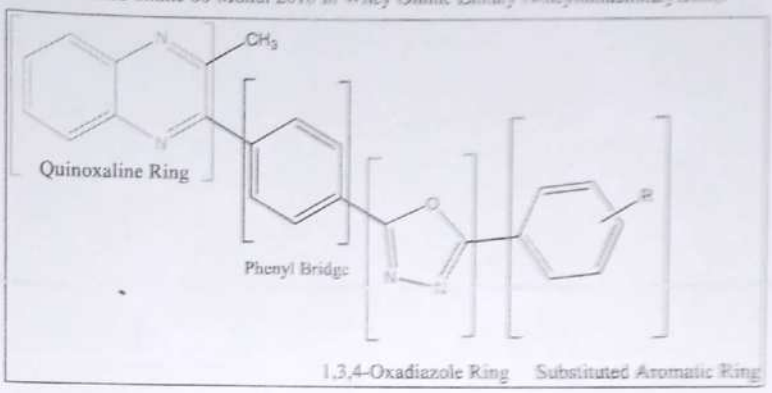

Novel hybrid molecules were synthesized through the amalgamation of quinoxaline residue with 1,3,4-oxadiazole molecule. The purity of obtained 1,3,4-oxadiazoles derivatives containing quinoxaline residue (total 11) was confirmed through thin-layer chromatography, combustion analysis, and melting point, whereas their structures were confirmed by infrared spectroscopy, nuclear magnetic resonance, and mass spectroscopy. In animal studies, the derivatives *4-(5-(4-(3-methylquinoxalin-2-yl)phenyl)-1,3,4-oxadiazol-2-yl)benzenamine* and *2-(5-(4-(3-methylquinoxalin-2-yl)phenyl)-1,3,4-oxadiazol-2-yl)benzenamine* showed excellent analgesic and anti-inflammatory activities, respectively, as compared with other derivatives. In order to rationalize the biological results of the derivatives, molecular docking studies were performed using Argus lab. The compounds exhibited good docking scores between −12.987 and −9.92 kcal/mol against cyclooxygenase-II (5IKQ) protein fragment.

INTRODUCTION

In a recent time, a research on synthesis of hybrid heterocyclic compounds (containing more than one heterocyclic rings) has been extensively carried out to explore potential novel therapeutic agents. Oxadiazole moiety are reported to elicit the activities such as analgesic, anti-inflammatory [1–4], antibacterial [5,6], antifungal [7], antitubercular [8], anticancer [9], anticandidal [10], antioxidant [11], and antidepressant [12]. Recently, in our laboratory, we have linked 1,3,4-oxadiazole with quinazolin-4-one, which showed good analgesic and anti-inflammatory activities [13]. We also synthesized novel Schiff's bases of 1,3,4-oxadiazole analogues containing quinazolin-4-one moiety with excellent analgesic and anti-inflammatory effects [14]. Quinoxaline nucleus also exhibits anticancer [15], antibacterial, antifungal [16], antitubercular [17], analgesic, anti-inflammatory [18], antidiabetic [19], and antidepressant [20] activities. In this background, it is valuable to assimilate two five-member heterocyclic rings together in a molecular framework in order to evaluate the additive pharmacological outcomes of the rings. Therefore, the present study was carried out to synthesize new promising bioactive 1,3,4-oxadiazole derivatives linked with quinoxaline moiety.

1,3,4-Oxadiazole derivatives were designed to synthesize new derivatives by simple and efficient method as given in Figure 1. According to this scheme, *4-(3-methylquinoxalin-2-yl)phenyl propionate* (**I**) was synthesized in the first step by reacting *4-(3-methylquinoxalin-2-yl)phenol* in ethanol with propionic acid for 5 h at 40–50°C. On treatment with hydrazine with the earlier synthesized intermediate, *4-(3-methylquinoxalin-2-yl)phenyl propionate*, in the second step afforded *4-(3-methylquinoxalin-2-yl)benzohydrazide* (**II**). These were later introduced in cyclization reaction with different aromatic acids, aromatic aldehydes, and carbon disulfide in the next step, producing the corresponding *2-(4-(5-aryl-1,3,4-oxadiazol-2-yl)phenyl)-3-methylquinoxaline* derivatives (**IV**, **V**, **VI**). Purity of the

© 2018 Wiley Periodicals, Inc.

Scanned by CamScanner

Synthesis, Characterization, Molecular Modeling, and Biological Evaluation of 1,2,4-Triazole-pyridine Hybrids as Potential Antimicrobial Agents

J. Ahirwar,[a]* D. Ahirwar,[a] S. Lanjhiyana,[a] A. K. Jha,[b] D. Dewangan,[c] and H. Badwaik[c]

[a]School of Pharmacy, Chouksey Engineering College, Bilaspur, Chhattisgarh, India
[b]Shri Shankaracharya Institute of Pharmaceutical Science, Bhilai, Chhattisgarh, India
[c]Rungta College of Pharmaceutical Sciences and Research, Bhilai, Chhattisgarh, India
*E-mail: jyoti_ah@yahoo.com

Received March 14, 2018
DOI 10.1002/jhet.3319
Published online 00 Month 2018 in Wiley Online Library (wileyonlinelibrary.com).

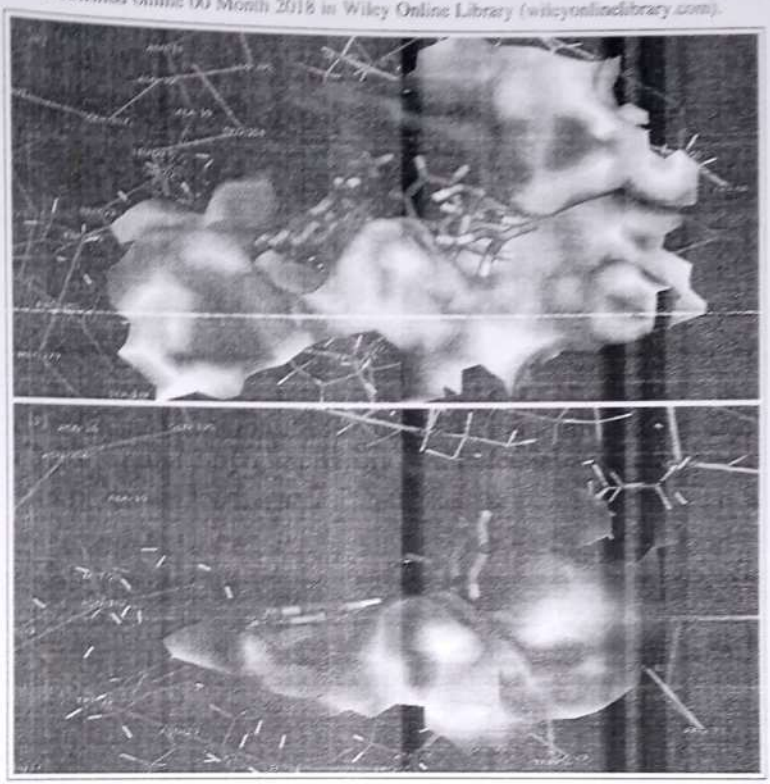

A novel 1,2,4-triazole-pyridine hybrid derivatives were synthesized by the reaction of nicotinohydrazide with carbon disulfide to yield potassium-3-pyridyl-dithiocarbazate (**I**). This was further cyclized with ammonia solution to yield 5-mercapto-substituted 1,2,4-triazole-pyridine hybrid (**II**). This was finally reacted with different substituted benzyl derivatives to produce 1,2,4-triazole-pyridine hybrid derivatives (**III**). The purity of the derivatives was confirmed by thin-layer chromatography and melting point. Structure of these derivatives was set up by determining its infrared spectroscopy, nuclear magnetic resonance spectroscopy, and mass spectroscopy. Further, the synthesized derivatives were evaluated for their in vitro antimicrobial activity against the three Gram-negative bacteria (*Escherichia coli*, *Pseudomonas aeruginosa*, and *Acinetbacter baumannii*), three Gram-positive bacteria (*Staphylococcus aureus*, *Streptococcus pyogenes*, and *Enterococcus faecalis*), and two fungus (*Aspergillus clavatus* and *Candida albicans*). Minimal inhibitory concentration was also determined against same microorganism. Out of all synthesized derivatives, two derivatives, that is, 3-(5-(2-bromobenzylthio)-4*H*-1,2,4-triazol-3-yl)pyridine and 3-(5-(2,4-dibromobenzylthio)-4*H*-1,2,4-triazol-3-yl)pyridine showing more potent antibacterial activity.

Docking studies were performed by using Argus lab, and all the derivatives exhibited good docking scores between −10.5369 and −11.8477 kcal/mol and were better as compared with standard drug methotrexate against a dihydrofolate reductase protein fragment from *E. coli* and *Lactobacillus* (4DFR). Among all compounds, **4h** has shown the maximum docking score and found in agreement to in vitro antimicrobial studies.

© 2018 Wiley Periodicals, Inc.

Scanned by CamScanner

Analgesic and Anti-inflammatory Potential of Merged Pharmacophore Containing 1,2,4-triazoles and Substituted Benzyl Groups *via* Thio Linkage

J. Ahirwar,[a]* D. Ahirwar,[a] S. Lanjhiyana,[a] A. K. Jha,[b] D. Dewangan,[c] and H. Badwaik[c]

[a]Division of Pharmacy, Chouksey Engineering College, Bilaspur, Chhattisgarh, India
[b]Shri Shankaracharya Institute of Pharmaceutical Science, Bhilai, Chhattisgarh, India
[c]Rungta College of Pharmaceutical Sciences and Research, Bhilai, Chhattisgarh, India
*E-mail: jyoti01ahirwar@gmail.com

Received April 7, 2018
DOI 10.1002/jhet.3258
Published online 00 Month 2018 in Wiley Online Library (wileyonlinelibrary.com).

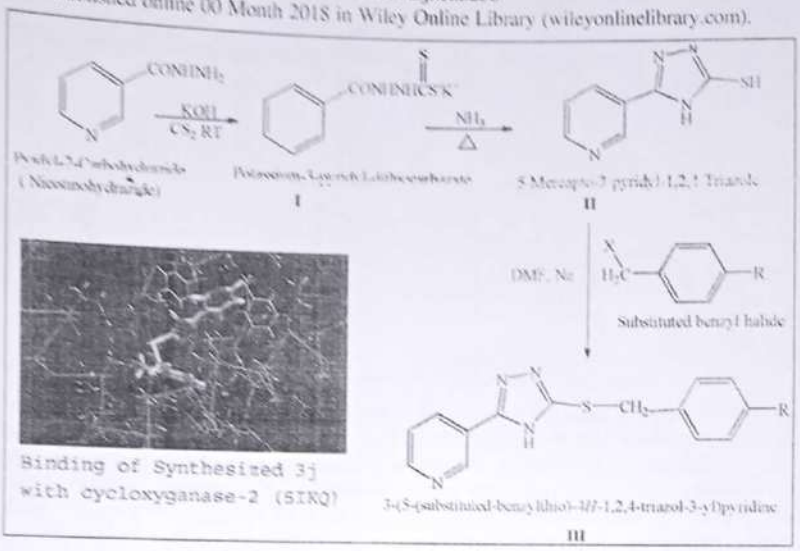

A plethora of non-steroidal anti-inflammatory drugs are available in the market with adverse side effects like gastrointestinal irritation, bleeding, and ulceration. Currently, the focus of researcher on the development of better, synergistic molecules by the hybridization of two or more active biomolecule or ligands to develop newer derivative possessing good anti-inflammatory activity with minimum side effects. In line with this, the present study was designed to synthesize a series of merged pharmacophore contaning1,2,4-triazoles and substituted benzyl groups *via* thio linkage. Purity of the derivatives was confirmed by thin-layer chromatography, combustion analysis, and melting point. Structure of these derivatives was set up by determining infrared spectroscopy, nuclear magnetic resonance spectroscopy, and mass spectroscopy. All the synthesized derivatives were evaluated for their analgesic and anti-inflammatory activities in mice and rats, respectively. In animal studies, the derivative 3-(5-(4-nitrobenzylthio)-4H-1,2,4-triazol-3-yl) pyridine showed more potent analgesic activity, and the derivative 3-(5-(2,4-dimethylbenzylthio)-4H-1,2,4-triazol-3-yl) pyridine showed more potent anti-inflammatory activity as compared with other derivatives. The results of the present study indicate that reaction of pyridine linked 1,2,4-triazole-3-thiol with different substituted benzyl halides to produce merged pharmacophore contaning1,2,4-triazoles and substituted benzyl groups with potent analgesic and anti-inflammatory activities. Docking studies were performed by using Argus lab, and all the derivatives exhibited good docking scores between −10 and −12 kcal/mol and were better as compared with standard drugs aspirin and indomethacin against cyclooxygenase-2. Among all compounds, **3j** has shown the maximum docking score and found in agreement to in pharmacological activities.

INTRODUCTION

Non-steroidal anti-inflammatory drugs (NSAIDs) are most widely prescribed drugs worldwide. Those are used in various inflammatory disease including rheumatoid and osteoarthritis. NSAIDs exert their anti-inflammatory effect mainly through inhibition of cyclooxygenases (COXs). There are at least two COX isoforms, COX-1 and COX-2 [1]. Constitutive COX-1 is responsible for providing cytoprotection in the gastrointestinal (GI) tract, whereas inducible COX-2 mediates inflammation. The chronic use of COX-1 inhibitors may elicit appreciable GI irritation, bleeding, and ulceration. Thus, the discovery provided the rationale for the development of drugs devoid of GI disorders while retaining clinical efficacy as anti-inflammatory agents [2–4]. In spite of many NSAIDs available in the market, there is still a need to develop new drugs that have potent anti-inflammatory activity

© 2018 Wiley Periodicals, Inc.

Scanned by CamScanner

Synthesis, Characterization, and Screening for Analgesic and Anti-Inflammatory Activities of Schiff Bases of 1,3,4-Oxadiazoles Linked With Quinazolin-4-One

Dhansay Dewangan,* Kartik T. Nakhate, Vinay Sagar Verma, Kushagra Nagori, and Dulal Krishna Tripathi

Rungta College of Pharmaceutical Sciences and Research, Bhilai 490024, Chhattisgarh, India
*E-mail: danu_drugs@yahoo.com

Received February 28, 2017
DOI 10.1002/jhet.2934
Published online 00 Month 2017 in Wiley Online Library (wileyonlinelibrary.com).

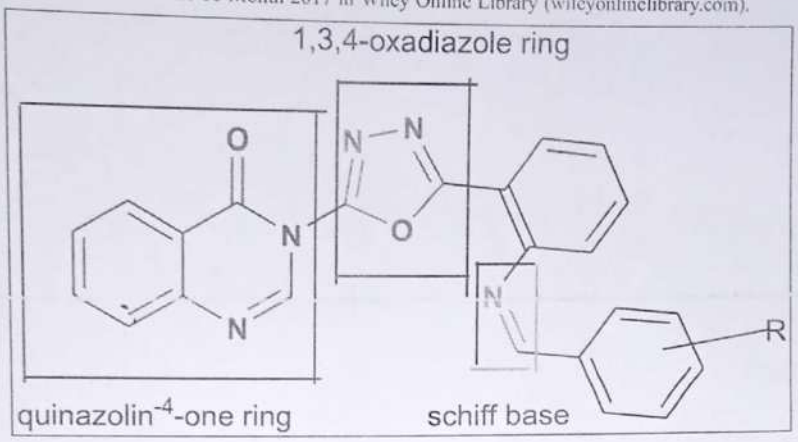

Sixteen Schiff bases of quinazolin-4-one-linked 1,3,4-oxadiazoles were synthesized by reaction with different aromatic aldehydes. Purity of newly synthesized derivatives was confirmed through thin-layer chromatography, combustion analysis, and melting point. The structure of the derivatives was confirmed by determining infrared spectroscopy, nuclear magnetic resonance, and mass spectroscopy. All the synthesized derivatives were evaluated for their analgesic and anti-inflammatory activities in mice and rats, respectively. In animal studies, the derivative (*E*)-3-(5-(4-(4-methoxybenzylideneamino)phenyl)-1,3,4-oxadiazol-2-yl)-2-phenylquinazolin-4(3*H*)-one showed more potent analgesic activity and the derivative (*Z*)-3-(5-(2-(2-hydroxybenzylideneamino)phenyl)-1,3,4-oxadiazol-2-yl)-2-phenylquinazolin-4(3*H*)-one showed more potent anti-inflammatory activity as compared with other derivatives. The results of the present study indicate that reactions of 3-(5-(4-aminophenyl)-1,3,4-oxadiazol-2-yl)-2-phenylquinazolin-4(3*H*)-one and 3-(5-(2-aminophenyl)-1,3,4-oxadiazol-2-yl)-2-phenylquinazolin-4(3*H*)-one with different aromatic aldehydes produce Schiff bases of quinazolin-4-one-linked 1,3,4-oxadiazoles with potent analgesic and anti-inflammatory activities.

INTRODUCTION

Heterocyclic compound synthesis has accredited a lot concern in recent years, mostly those containing more than one heterocyclic ring in a molecule. Oxadiazole and quinazolin-4-one moieties have revealed a range of biological activities such as analgesic, anti-inflammatory [1–4], antibacterial [5,6], antifungal [7], antitubercular [8], anticancer [9], anticandidal [10], antioxidant [11], and antidepressant [12]. In our recent study [13], we linked quinazolin-4-one with 1,3,4-oxadiazole, which revealed attractive analgesic and anti-inflammatory activities. It is worth noting here that, like oxadiazole and quinazolin-4-one moieties, Schiff bases also produce a broad range of biological activities such as antimalarial [14], anticancer [15], antibacterial, antifungal [16], antitubercular [17], and anti-inflammatory [18]. Therefore, we hypothesized that inclusion of Schiff bases may further improve the biological activities of quinazolin-4-one-linked 1,3,4-oxadiazole moiety.

In this background, the aspiration of the present research effort was to synthesize new series of Schiff bases of quinazolin-4-one-linked 1,3,4-oxadiazoles with a potential biological activity. We synthesized new Schiff bases of quinazolin-4-one-linked 1,3,4-oxadiazoles by reacting them with different aromatic aldehydes. Purity of the synthesized derivatives was confirmed by thin-layer chromatography (TLC), combustion analysis, and melting point. Structure of the derivatives was set up by infrared spectroscopy (IR), proton nuclear magnetic resonance (^{1}H-NMR), and mass spectroscopy (MS). Further, all the synthesized derivatives were screened for analgesic and anti-inflammatory activities in rodents employing acetic acid-induced writhing reflex and carrageenan-induced paw edema methods, respectively.

RESULTS AND DISCUSSION

In the present study, for the first time, we have reported the synthesis of Schiff bases of 3-(5-(4-aminophenyl)-1,3,4-

© 2017 Wiley Periodicals, Inc.

Scanned by CamScanner

ISSN - 0973-1628

Since 2002

160

Issue - 160, Vol-XVI (5), July - 2017
www.researchlink.co

UGC APPROVED

Welcome to UGC, New Delhi, India
www.ugc.ac.in

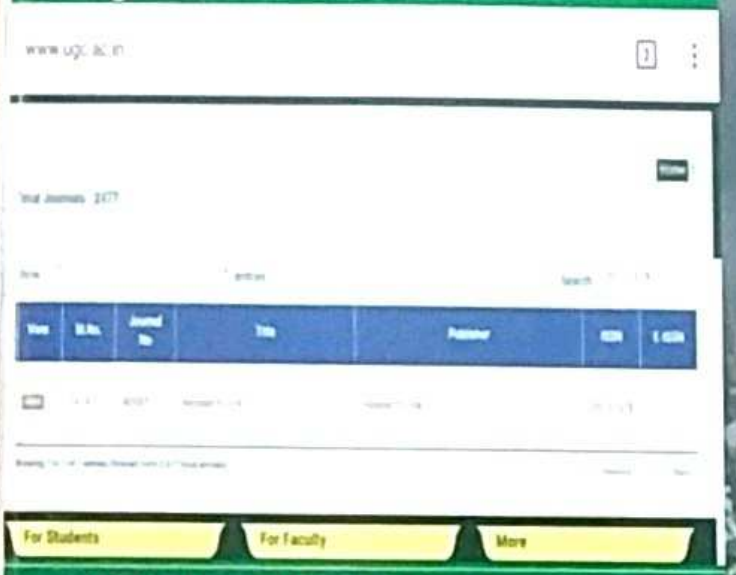

UGC Journal Details

Name of the Journal :	Research Link
ISSN Number :	09731628
e-ISSN Number :	
Source:	UNIV
Subject:	Accounting,Anthropology,Business and International Management,Economics, Econometrics and Finance(all),Education,Environmental Science(all),Finance,Geography, Planning and Development,Law,Political Science a,Social Sciences(all)
Publisher:	Research Link
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Arts & Humanities,Multidisciplinary,Social Science

Mob. 99815-51657

An International Registered and Referred Monthly Journal

RESEARCH Link

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

Impact Factor 2015
2.782

₹ 250/-

:: CIRCULATION ::

Andaman-Nicobar / Bihar / Chattisgarh / Delhi / Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka / Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal

- Regulation of Media in India in Constitutional Perspective
  Rupali Khanna (20).....89
- Observation on Muslim Matrimonial Law
  Dr. Jasvinder Singh Narang (667).....93
- मध्यप्रदेश शासन द्वारा जनजातियों की शिक्षा के विकास हेतु किए गए प्रावधान : एक अध्ययन
  डॉ.अरुणा सेठी एवं संगीता मसानी (639).....96

Drawing

- मुगलकाल की चित्रकला (अकबर के विशेष संदर्भ में)
  डॉ.(श्रीमती) वीणा चौबे (672).....99

Economics

- Economic Exclusion of Dalit Women in India : A Review
  Dr. D. Babu (429).....101
- Banking Development in India and Present Position
  Anshuman Joshi, Dr. Anil Singh & Dr. Praveen Bahal (680).....104
- BRICS - Formation & Role in The Developing Economy
  Dr. Smriti Khurasia & Mrs. Pallavi Saxena (22).....108
- निर्माणी कोयला खदान श्रमिकों को प्राप्त आवासीय सुविधा : एक अध्ययन
  कु.रजनी सेठिया एवं डॉ.सुनीता दुबे (583).....110

Commerce

- गिदा-सीधी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक का संविवर्गीय अध्ययन
  गुलाम मोहइयुदीन (672).....113

Research Paper

- Status of Women in Politics of India
  Dr. Paras Jain (651).....115
- Joint Forest Managmang is A Tool of Employment For Tribe
  Ghansham Baburao Jagtap (391).....117
- सांस्कृतिक विरासत - कुमाऊँनी संस्कृति
  तेज प्रकाशचन्द्र एवं निशा (19).....120
- उत्तराखण्ड राज्य की विकासखण्ड भिलंगना में प्रचलित लोकगीत - एक सांस्कृतिक अध्ययन
  डॉ.सोना पैन्यूली उनियाल एवं कृष्णचन्द नेगी (640).....123
- सौर ऊर्जा, भारत में आर्थिक प्रगति की अक्षय उम्मीद
  राजकुमार गंभीर एवं डॉ.पी.सी.अग्रवाल (670).....125
- कृषि आय का विश्लेषणात्मक अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के ग्राम सेमरा के संदर्भ में)
  डॉ.पूजा तिवारी एवं डॉ.एच.एस.भाटिया (662).....127

Home Science

- पूर्व किशोरावस्था के किशोरों के भोजन ग्रहण करने का उनके शारीरिक विकास से सम्बंध
  पूनम पाण्डे व डॉ.नीलिमा कंवर (659).....129

- **शोधपत्र भेजने संबंधी नियम**.....22, 128
- **'रिसर्च लिंक' सदस्यता फॉर्म**.....130

❀ ❀

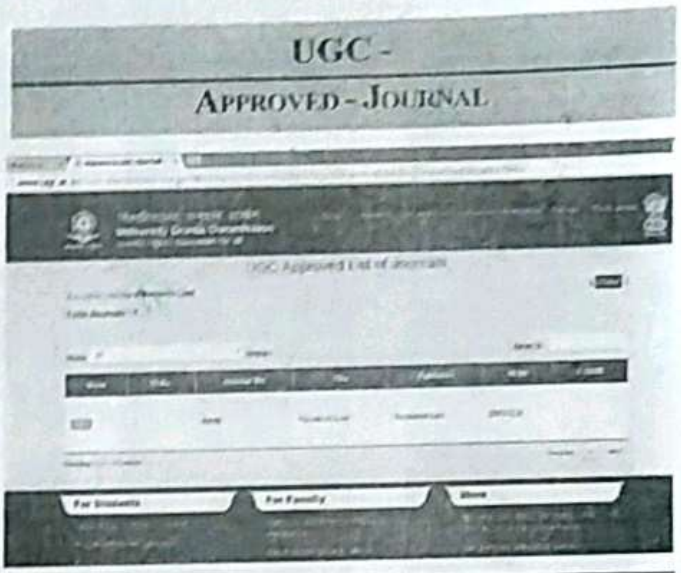

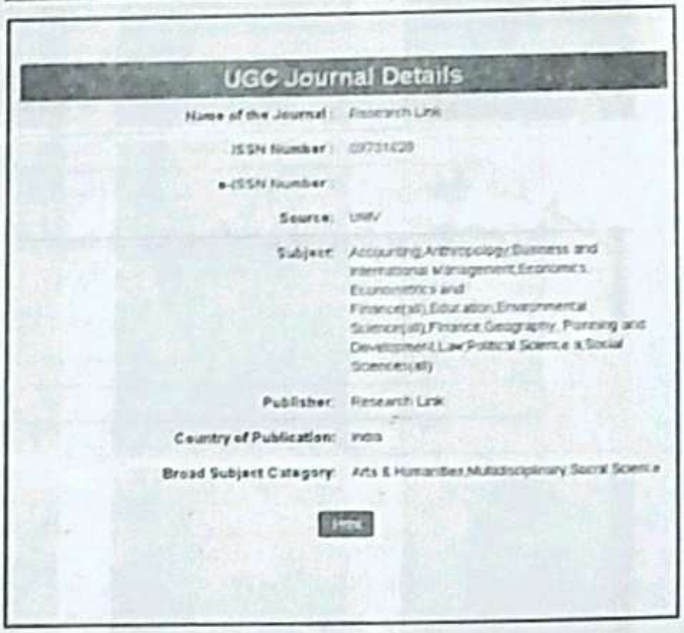

'रिसर्च लिंक' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है-

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच : ओल्ड पलासिया, इन्दौर,
कोड - **SBIN 000 3432**
खाते का नाम : रिसर्च लिंक,
खाता नंबर - **63025612815**

भुगतान की मूल रसीद, शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालयीन पते पर भेजना अनिवार्य है।

UGC Approved Journal - Research Link

Since March 2002

An International, Registered & Referred Monthly Journal : Economics

Research Link - 160, Vol - XVI (5), July - 2017, Page No. 110-112

ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

चिरमिरी कोयला खदान श्रमिकों को प्राप्त आवासीय सुविधा : एक अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र में चिरमिरी कोयला खदान श्रमिकों को प्राप्त आवासीय सुविधा का अध्ययन किया गया है। आवास, मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताओं में से एक है। भोजन तथा वस्त्र के बाद आवास अत्यंत महत्वपूर्ण मूलभूत आवश्यकता है। आवास न सिर्फ श्रमिकों के स्वस्थ जीवन, कलयाण एवं जीवन स्तर को प्रभावित करता है, बल्कि श्रमिक की कार्यक्षमता को भी प्रभावित करता है। आवासीय सुविधा ऐसी हो, जो आंतरिक एवं बाह्य दोनों रुप से आरामदायक, शांतिपूर्ण एवं सुरक्षात्मक हो। चिरमिरी कोयला क्षेत्र में श्रमिकों को आवासीय सुविधा उपलब्ध करने की दृष्टि से अलग-अलग टाइप के 12000 आवास उपलब्ध हैं। 2016 की स्थिति में 7200 श्रमिक इन आवासों में निवासरत हैं, अर्थात् 4800 आवास खाली हैं, जिनमें कुछ मकानों में अवैध कब्जा कर लिय गया है। खाली पड़े मकानों की स्थिति भी अत्यंत दयनीय है, क्योंकि उनकी मरम्मत व देखरेख नहीं हो पा रही है। प्रस्तुत शोध में राष्ट्रीयकरण के पूर्व एवं पश्चात् श्रमिकों को प्रदत्त आवासीय सुविधा का विश्लेषण एवं खाली पड़े आवासों को नियोजित तरीके से उपयोग हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

कु.रजनी सेठिया* एवं डॉ.सुनीता दुबे**

प्रस्तावना :

जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं के अंतर्गत आवास अत्यंत महत्वपूर्ण है। भोजन तथा वस्त्र के बाद आवास तीसरी महत्वपूर्ण आवश्यकता है। आवास व्यवस्था भौतिक वातावरण का एक भाग है, जो मानव के स्वास्थ्य, कल्याण और कार्य क्षमता को निरन्तर प्रभावित करता है। औद्योगिक श्रमिकों की आवास व्यवस्था देश के विभिन्न क्षेत्रों में काफी पहले से ही एक विकराल समस्या के रूप में विद्यमान रही है। विगत वर्षो में सरकार औद्योगिक श्रम आवास की अनेक योजनाएँ व अधिनियम बनाती रही है, परन्तु इसके बावजूद भी औद्योगिक श्रमिकों के आवास की सामान्य दशा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। श्रमिकों के सामाजिक और आर्थिक जीवन के दृष्टिकोण से आवास की संतोषजनक स्थिति होना जरूरी है। तभी दिन–रात उत्पादन में लगा श्रमिक का पूर्ण कुशलता से कार्य कर सकेगा तथा रोगग्रस्तता और खराब स्वास्थ्य और समस्त सामाजिक बुराइयों से दूर रह सकेगा। कोयला उद्योग में श्रमिकों का स्थान उद्योग की कार्यप्रणाली के अनुसार प्रतिक्षण जीवन और मौत से खेलते हुए उत्पादन पूर्ण करने में लगे रहने के कारण दूसरे औद्योगिक श्रमिकों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। जहाँ तक कोयला खानों के श्रमिकों के आवास का प्रश्न है, कोयला खानें जंगलों के बीच में शहरी क्षेत्रों से दूर हुआ करती हैं। अतः इन खानों में काम करने के लिए जो श्रमिक आते हैं, उनके लिए आवास की व्यवस्था करना आवश्यक हो जाता है। ऐसे स्थान में इन श्रमिकों की आवास की पूर्ति पूर्णतः सेवा योजक पर निर्भर करती है। अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में उद्योग लंबे समय के लिए स्थापित किए जाते हैं, परन्तु कोयला उद्योग में खदानों से कोयला निकालने के बाद क्षेत्र पुनः वीरान हो जाता है। अतः सेवा योजक अपने श्रमिकों के लिए रहने की व्यवस्था अस्थाई करना चाहता है। शायद यह सोचकर की श्रमिकों पर किया गया व्यय व्यर्थ है। इसी कारण कोयला खदानों में श्रमिकों की आवास स्थिति पूर्णतः संतोषजनक नहीं है।

छत्तीसगढ़ की समस्त कोयला खदानों में आवास की व्यवस्था तो है, परन्तु पूर्णतः संतोषजनक नहीं है। प्रायः सभी खान क्षेत्रों में 70 से 80 प्रतिशत तक श्रमिकों को आवास की सुविधा प्राप्त है और श्रमिकों को उद्योग क्षेत्र में भी विशेषकर खदानों के समीप ही रहने की सुविधा प्राप्त है। स्थानीय श्रमिक जिनके स्वयं के मकान क्षेत्र के पास है तथा निकटस्थ गाँव के हैं, वह स्वयं के आवास से कार्य स्थल पर पहुँचते हैं। कुछ आवास समस्याएँ हैं, भी तो आवास की दशाओं से संबंधित है। श्रमिकों को आवंटित आवास की स्थिति पूर्णतः संतोषजनक नहीं है, क्योंकि इस प्रकार के मकान वास्तविक रूप से श्रमिक की सुविधाओं, उनके स्वास्थ्य व अन्य आवश्यक सुविधाओं को ध्यान में रखकर सेवा योजक द्वारा नहीं बनाए गए हैं।

अध्ययन का क्षेत्र :

प्रस्तुत शोध पत्र चिरमिरी कोयला क्षेत्र की विभिन्न खदानों में कार्यरत श्रमिकों को प्रदत्त आवासीय सुविधा पर आधारित है।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य :

(1) राष्ट्रीयकरण के पूर्व एवं पश्चात् श्रमिकों को प्रदत्त आवासीय सुविधा एवं वर्तमान आवासीय सुविधा का विश्लेषण करना।

*सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र विभाग), शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय, चिरमिरी, जिला-कोरिया (छत्तीसगढ़) **सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य विभाग), शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय, चिरमिरी, जिला-कोरिया (छत्तीसगढ़)

UGC Approved and Notified Journal - Sr. N. 48654 IIJIF Impact Factor- 2.597

Regd. No. 1305/2014-2015 ISSN : 2395-4965

Asian Journal of Advance Studies

An International Research Refereed Journal for Higher Education
A Multidisciplinary Research Journal for All

Quarterly Journal

October - December 2017

Vol. III 2017 No. 4

Editor- in- Chief

Anil Kumar
Faculty of Law
Banaras Hindu University
Varanasi

➲ महिला सशक्तीकरण में शिक्षा की भूमिका	जुगुल किशोर सिंह	171-175
➲ नये युग में शत्रु बदलता परिवेश-जमते पाँव	रामाश्रय पटेल	176-181
➲ शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना के विकास में डॉ० नगेन्द्र का योगदान	रंजीत कुमार	182-186
➲ अध्यापनरत् शिक्षिकाओं के जीवनवृत्त और पारिवारिक मूल्यः एक विश्लेषण	रीता विश्वकर्मा	187-191
➲ संस्कृत साहित्य रामायण का साक्ष्य विवेचन	अर्चना	192-195
➲ साहित्य संस्कृत में 'नारी' की देह यात्रा पर सामाजिक चिंतन	उमा पति	196-199
➲ शिक्षा में सोशल मीडिया	दीप्ती द्विवेदी	200-203
➲ महिला सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह	संजीवन	204-208
➲ भारतीय राजनीति में अल्पसंख्यक	सीमा सिंह	209-210
➲ मध्याह्न भोजन योजना में कार्यरत रसोइयों का वैयक्तिगत अध्ययन (हरहुआ ब्लाक के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों पर आधारित)	कुमारी चन्द्रा चौधरी	211-218
➲ वेदेषु गीतिकाव्यतत्वानि	मूलचन्द्रशुक्लः	219-221
➲ भारतीय समाज और धर्म निरपेक्षता : एक तात्विक विवेचन	प्रो. आरती तिवारी प्रो॰ भागवत प्रसाद दुबे	222-224
➲ पंडित दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक चिंतन एवं इसकी प्रासंगिता	कु.रजनी सेठिया	225-226
➲ वर्तमान शिक्षा में भारतीय दर्शन की उपादेयता	डॉ0 (श्रीमती) गीता शुक्ला	227-230
➲ "हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन परम्परा"	आंचल रानी	231-236
➲ जैन आगम साहित्य में आयुर्वेद चिकित्सा सम्बन्धी सामग्री का अध्ययन	रविन्द्र कुमार डॉ0 रानी सिंह	237-243
➲ सभ्य समाज की संकल्पना तथा मानवाधिकार	डॉ0 सुरेन्द्र राम, रामप्रवेश	244-246
➲ बुद्ध की अनुशासनप्रियता	डॉ0 अभिजात ओझा	247-250
➲ धर्म, साम्प्रदायिकता एवं राजनीति	सोनी यादव	251-254
➲ भक्ति रस के उपासक गो० तुलसीदास का रस और भाव समन्वय	डॉ0 अमित कुमार मिश्र	255-258

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक चिंतन एवं इसकी प्रासंगिता

कु.रजनी सेठिया

"देश का दारिद्रय दूर होना चाहिए उसमे दो मत नही है किन्तु प्रश्न यह है कि यह कैसे दूर हो? हम अमेरिका के मार्ग पर चले या रूस के मार्ग को अपनाएँ अथवा यूरोपीय देशो का अनुकरण करें? नकल से समस्या का समाधान नही होगा। वादो के घेरे से मुक्त होकर हमे एक स्वतंत्र अर्थ व्यवस्था का विकास करना पड़ेगा जो मनुष्य को समग्रता से देखे।"

पं. दीनदयाल उपाध्याय

भारतीय चिंतन सदा से समग्रता का चिंतन रहा है। पं. दीनदयाल उपाध्याय की आधुनिक चिंतन के लिए सबसे बड़ी देन "एकात्मक मानववाद" है। राष्ट्र के निर्माण व उसकी मजबूती में उसके विरासत के मूल्यों का बहुत बड़ा योगदान होता है। देश के आमजन की बेहतरी, आमजन की सुरक्षा, आमजन को न्याय आदि के संबंध में समग्र चिंतन "एकात्मक मानववाद" के विराट दर्शन में नीहित है। पं.दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित इस विचार दर्शन में "एकात्मक" का आशय अविमान्य अथवा एकीकृत अवधारणा से है वही "मानववाद" से आशय यह है कि सब कुछ मानवमात्र के कल्याण हेतु संचालित हो। "एकात्म मानववाद" और ग्रामप्रधान अर्थ व्यवस्था के माध्यम से उन्होने समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के महत्व और उसके विकास का सिद्धांत प्रतिपादित किया है। जिस ग्रामीण प्रधान अर्थ व्यवस्था की बात महात्मा गाँधी जी ने की उसी को नए एवं परिष्कृत रूप से पं.दीनदयाल उपाध्याय जी ने रखा। वे मशीनो के विरुद्ध नही थे, लेकिन वे मशीन को मनुष्य के लिए समझते थे मनुष्य को मशीन के लिए नही। वे संयत उपभोग की बात करते थे। उन्हाने प्रत्येक व्यक्ति को काम के सिद्धांत को मान्यता दी थी। उन्होनें कहा था– "योजनाएं बनाने से पहले हमे प्रत्येक व्यक्ति को काम के सिद्धांत को मान्यता देनी पड़ेगी। यदि इसे मान लिया जाए तो योजनाओं की दिशा एवं स्वरूप बदल जाएगे भले ही बेकारी धीरे–धीरे दूर होगी। इसका विचार करके हम उत्पादन और साधनों का निश्चय करे। यदि ज्यादा आदमियों का उपयोग करने वाले छोटे–छोटे कुटीर उद्योग अपनाएँ गए तो कम पूंजी तथा मशीनों की आवश्यकता पड़ेगी, नौकर शाही का बोझ कम होगा, विदेशी ऋण भी नही लेना पड़ेगा। देश की सच्ची प्रगति होगी तथा प्रजातंत्र की नीव मजबूत होगी। जरूरत है उनके आर्थिक राजनीति विकास की दिशा में दिये गए विचार को सरकारी नीतियों में शामिल किया जाए।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी को आर्थिक चिंतन का यदि वर्तमान भारतीय अर्थ व्यवस्था के परिपेक्ष्य में मूल्यांकन किया जाए तो उनके विचार आज भी देश की अर्थ व्यवस्था के लिए सर्वांगीण विकास की दृष्टि से उतने ही महत्वपूर्ण है जितने वे उस समय थे। वर्तमान में केन्द्र में उसी दल की सरकार है। जिसकी नीव में पं.दीनदयाल उपध्याय का महती योगदान था उसकी नीतियों में उनके विचारों का व्यापक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

उनके स्वयं की अवधारण का आशय राष्ट्र की बहुमुखी आत्मनिर्भरता को स्थापित करना निश्च्य स्वम की अवधारणा में उनका सक्षम भारत का भावी चित्र रहा होगा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में काम कर रही भारत सरकार उस स्वयं की दृष्टि को अपनी नीतियों में प्रमुखता से लागु कर रही है। आत्मनिर्भरता से अनत्योदय की राह निकालने की दृष्टि के साथ भाजपा नीत केन्द्र सरकार की तमाम योजनाओं में अंतिम कतार के व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने का सकंल्प और प्रतिबद्धता स्पष्ट दिखती है। बैंको के राष्ट्रीय करण के पश्चात् आबादी का एक बड़ा भाग था जिसका बैंक में खाता नही था वर्ष 2014 में नरेन्द्र मोदी जी ने जनधन योजना के

*सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय चिरमिरी जिला–कोरिया छ.ग.

RNI NO. 98387CHHBIL/2006/17830

ISSN-0973-6387

A Registered & Refereed National Research Journal

RESEARCH DIGEST

Circulation Area - J & K, Himachal Pradesh, U.P., Uttaranchal, Madhya Pradesh, Maharashtra, Gujrat, Chhattisgarh, Orissa, W.B., Tripura, Andhra Pradesh, Tamilnadu, Kerala, Karnataka, Andaman & Nicobar Island.

A Journal Aiming Towards Excellence

Research Digest

A Quarterly Multidisciplinary Research Journal

OCT.- DEC. 2016 & JAN.- MARCH 2017

Vol. - 11 Issue - 3 & 4
ISSN - 0973-6387
RNI No.-90387CHHBIL/2006/17830

Editorial Consultant
Prof. James Aubrey, USA

Advice
Dr. Sunanda Tijare

Editor in Chief
Dr. S.K.Tiwari

Editors
Late Prof. R.N.Shukla
Smt. Preeti Tiwari

Co-ordinator
Dr. R.G.Yadav

Editorial Help
Dr. V.K. Patel
Dr. K.K. Sharma
Dr.Vivek Ambalkar
Dr. Manish Tiwari
Dr. M.S. Tamboli
Dr.Ashish Sharma

Special Correspondents
Mah Gounda - *EGYPT*
Dr. Mustafa Harriri - *Saudi Arabia*
Heidub Idris - *Libya*
Houssain Amjaour - *Jordon*
Abhishek Dubey - *Oman*
Javaria Farrequi - *Pakistan*
Dr. Motiee L. Mohammad -*Iran*
Nandini Sahu - *New Delhi*
Anita Sharma - *Shimla*
Anoop Kumar - *Jalandhar*
Dr. Manish Kumar Jain - *Jabalpur*
Smt. Swati Sharma - *Bhopal*
Pranav Joshipura - *Ahmedabad*
Ashish Parekh - *Surat*
Dr. Bharathi Harishankar - *Chennai*
A. Jaya Kumar - *Salem*
Ruth K.Maschi - *Jammu*
Jay Kumar - *Thiruvananthapuram*

Office Work :
Laya - Aryan

Office (Editorial/Publication)
E-22, Parijat Extension
Nehru Nagar, Bilaspur (C.G.) 495001
Phone : 07752 - 270127
Fax No. : 07752-434030
Mobile No. 09300-312013, 092296-60932
email ID researchdigestbilaspur@yahoo.com
website : www.researchdigest.in

CONTENTS

03 'A Study on Marketetable Surplus And Price Spread Of Capsicum Crop Under Protected Cultivation in himachal Pradesh: A Case Study of Hamirpur District
Dr.K.C.Sharma, Anjna Kumari

16 Ethno-medicinal plants in Ratanpur village of Bilaspur district, specially used in Children's disesses.
Dr. R.P. Sharma,Shweta Sharma,

21 Awareness of Diet and Pregnancy Related Problems in Urban & Rural Areas in Gorakhpur, District
Bushra Fatma,Dr. Anjali Saxena, Dr.Reeti Kushwaha,Dr. Meghna

28 Ethno-medicinal plants of Khudiya village in Mungeli district - specially used in veterinary practice
Dr. R.P. Sharma,Deepika Jaiswal

32 Impact of Industrialization Crops And Changing Crop Pattern In Bilaspur District of Chhattisgarh
Dipankar Biswas

36 Ethno-medicinal Aquatic Wild Plants in Kota Block of Bilaspur District (C.G.)
Dr. R.P. Sharma,Topeshwar Yadav

42 "Confusing Provision/ Definition Under Section 141 of Indlan Penal Code"
Dr. Annoo Bhai Soni, Prof Dharmendra Sharma,

45 "A study of perception of Special needs Children of High School Level towards School Climate with Respect to their Gender"
Kshama Tripathi,Nirmala Pandey

49 Taxonomic And Ethnobotanical Stuies of Edible Wild Plant In Ratanpur,Bilaspur District
Dr. R.P. Sharma,Umesh Kumar Shrivas

54 Film Reviw
Dr. S.K. Tiwari

58 A Study of Skill of Usability of Mathematical Concepts in Daily Life By the Students at Secondary Level
Dr. P.K. Naik,Gayatri Chaturvedi

76 **कोयला खान श्रमिकों की आय एवं उपभोग प्रवृति का विश्लेषण(चिरमिरी कोयला क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)**
प्रो.अमरकान्त पाण्डेय,कु.रजनी सेठिया

85 **विश्व शांति, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और धर्मनिरपेक्षता**
डॉ. हेमचन्द पाण्डेय.

87 **सक्ती रियासत का इतिहास (जांजगीर-चांपा जिले के संदर्भ में)**
डॉ. (श्रीमती) तृप्ति पाण्डेय

93 **छत्तीसगढ़ में औद्योगिक विकास हेतु प्रोत्साहन योजनाएं -एक अध्ययन**
डॉ. सुनीता दुबे

101 **विद्यार्थियों में संस्थागत परिवेश का कैरियर दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन**
डॉ. अन्जू यादव

104 **नारी सशक्तीकरण के क्षेत्र में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन**
डॉ. अन्जू शुक्ला, डॉ. स्वाती शर्मा

कोयला खान श्रमिकों की आय एवं उपभोग प्रवृति का विश्लेषण (चिरमिरी कोयला क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

श्रमिकों को मजदूरी तथा वेतन से प्राप्त आय उनकी आर्थिक स्थिति को व्यक्त करती है और उपभोग की विभिन्न मदों पर व्यय उनकी जीवन स्तर को व्यक्त करता है। यद्यपि आय अधिक होने पर जीवन स्तर ऊँचा होता है और आय कम होने पर जीवन स्तर नीचा होता है। आय एवं उपभोग व्यय के विश्लेषण के आधार पर ज्ञात होता है कि उपभोग की विभिन्न मदों पर आय का कितना भाग व्यय किया जा रहा है। सामान्यतया आय का अधिक भाग भोजन पर व्यय निम्न आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर को व्यक्त करता है एवं यह संकेत करता है कि आय आवश्यकताओं की पूर्ति पर्याप्त नहीं है। NCWA IX के समझौते द्वारा निर्धारित आय को विभिन्न मदों पर व्यय के विश्लेषण हेतु अनुसूची द्वारा प्राप्त अभिमतों के आधार पर चिरमिरी कोयला खान श्रमिकों के आय एवं उपभोग प्रवृत्ति का विश्लेषण किया गया है और यह जानने का प्रयास किया गया है उनके उपभोग व्यय के लिए पर्याप्त है एवं उनमें बचत की प्रवृत्ति है।

शब्द कुंजी – आय के स्त्रोत, व्यय की मदें, उपभोग प्रवृति।

प्रस्तावना – श्रमिक की आय उसके जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करती है। श्रमिकों का समाज में स्थान, उनका स्वास्थ्य, र्यकुशलता, भावी योजना, इच्छाओं की पूर्ति सभी उनकी आय के अनुरूप ही निर्धारित निर्मित एवं परिपूर्ण होती है। निश्चित ही पर्याप्त आय प्राप्त करने वाला व्यक्ति अच्छा जीवन स्तर बना सकता है। श्रमिकों को प्राप्त होने वाली आय उनकी आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर की स्पष्ट परिचायक होती है। अधिक आय उच्च आर्थिक स्थिति तथा कम आय निम्न आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर को व्यक्त करती है। आय के साथ उपभोग व्यय का नियोजन आवश्यक है अन्यथा ऊँची आय के बावजूद आर्थिक स्थिति खराब हो सकती है जीवन स्तर निम्न हो सकता है। सामान्य रूप से परिवार बजट के विश्लेशण का सैद्धांतिक आधार आय बढ़ने के साथ–साथ जीवन स्तर में सुधार होना चाहिए क्योंकि आय द्वारा आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर निर्धारित होता है।उक्त तथ्य के साथ ही व्यय संबंधी घटक की चर्चा तथा विश्लेषण उतना ही आवश्यक तथा महत्वपूर्ण होता है जितना कि आय संबंधी। आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर को सुधारने तथा नियमित करने के लिए आवश्यक है प्राप्त आय का सदुपयोग किया जाए।

कोल इंडिया लिमिटेड (CIL) की सहायक कंपनी साउथ ईस्टर्न कोल फील्डस लिमिटेड (SECL) के अंतगर्त चिरमिरी कोयला क्षेत्र छ.ग. राज्य के कोरिया जिले में आता है यह सबसे पुराना कोयला उत्खनन क्षेत्र है। चिरमिरी का प्राचीन नाम स्थानीय भाशानुसार देड़मेढ़ी परन्तु विटिश शासन काल में बदल कर चिरमिरी हुआ जो कोयला का उत्पादन करने वाले नगर के रूप में पूरे भारत में विख्यात। चिरमिरी कोलफील्डस "सोनवैली " बेसिन का हिस्सा है। यह 23.08' एवं 23.15' उत्तरी देशांतर तथा 82.17' एवं 82.25' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है इसका क्षेत्र 130 वर्ग कि. मीटर में विस्तृत है। इस क्षेत्र में कोयला खदाने कुरासिया, एन.सी.पी.एच.,वेस्ट चिरमिरी, डोमनहिल, नार्थ चिरमिरी ओर कोरिया कालरी कार्यशील है। चिरमिरी बेसिन में सबसे महत्वपूर्ण सीम "काराकोह सीम" है जो सभी ब्लाको में स्थित है। चिरमिरी कोयला क्षेत्र में 11 कोयला खदाने है जिनमें 3 खुली खदानें तथा 8 भूमिगत खदानें 1. चिरमिरी 2. कुरासिया 3. वेस्ट चिरमिरी 4. अंजनी हिल 5. चिरमिरी बरतुँगा 6. चिरमिरी(लोकल सिम) 7. कुरासिया (भूमिगत) 8. एन.सी.पी.एच 9. नार्थ चिरमिरी 10. रानी अटारी 11. विजय वेस्ट.

चिरमिरी कोयला क्षेत्र में भूमिगत तथा खुली खदानों दोनो में कोयला उत्खन्न होता है। 31/03/2014 को चिरमिरी कोयला क्षेत्र की खुली तथा भूमिगत खदानों में कुल 8330 श्रमिक कार्यरत थे जिसने

प्रो. अमरकान्त पाण्डेय अध्यक्ष अर्थशास्त्र अध्ययन शाला पं. रविशंकर विश्वद्यालय रायपुर (छ.ग.)
सु. रजनी रोठिया , सहा. प्राध्यापक अर्थशास्त्र, शास. लाहिडी महाविद्यालय चिरमिरी , कोरिया (छ.ग.)

UGC Approved and Notified Journal - Sr. N. 48654 IIJIF Impact Factor- 2.597

Regd. No. 1305/2014-2015 ISSN : 2395-4965

Asian Journal of Advance Studies

An International Research Refereed Journal for Higher Education
A Multidisciplinary Research Journal for All

Quarterly Journal

January - March 2018

Vol. IV 2018 No. 1

Social Development Welfare Society

www.asianjhc.com

Editor- in- Chief

Anil Kumar

Faculty of Law
Banaras Hindu University
Varanasi

➲ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य परम्परा में जनचेतना की अभिव्यक्ति	डॉ0 मनोज कुमार सोनकर	170-175
➲ २१ वीं शताब्दी एवं महिला सशक्तिकरण	श्रीमती आरती तिवारी कु.रजनी सेठिया	176-179
➲ प्रशिक्षणार्थियों के कौशल के विकास में सूक्ष्म शिक्षण एक उपकरण के रूप में	डॉ0 सुनील प्रताप सिंह	180-182
➲ अध्यापक शिक्षा में व्यावसायिक प्रशिक्षण की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ0 संतोष कुमार सिंह	183-186
➲ उच्च शिक्षा की उदीयमान समस्याएं	डॉ0 बृजभानु सिंह	187-192
➲ माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ0 अमित कुमार पाण्डेय	193-195

२१ वीं शताब्दी एवं महिला सशक्तिकरण

*डॉ. श्रीमती आरती तिवारी**

*कु.रजनी सोठिया***

15 अगस्त 1947 को आजाद भारत ने 26 जनवरी 1950 को संविधान स्वीकार करके अपना पहला गणतंत्र मनाकर संसदीय लोकतंत्र के मार्ग पर अपना कदम बढ़ाया।

हमे विश्वास था कि अब सदियों की पर्दानशीनी बालविवाह सती प्रथा, निरक्षरता, बहु **पत्नि विवाह, महिला शोषण** और कुप्रथाओं के साथ ही महिलाओं को हर अवस्था में कमजोर बनाने वाली प्राचीन मानसिकता से भी मुक्ति मिलेगी। आज जब हम गणतंत्र के अब तक के सफर पर अपनी निगाह दौड़ाते है तो समझ सकते है कि इस दौरान महिलाओ नें बहुत कुछ पाया है, लेकिन अभी बहुत कुछ पाना **शेष** है। जहाँ आधी आबादी ने सुनीता विलियम्स के रूप में आतंरिक्ष में उड़ान भरी वहीं जमीन पर उन्हे वर्श 2012 में दिल्ली में घटित 16 दिसम्बर 2012 जैसी घटना का षिकार भी होना पड़ रहा है। इस दौरान नित नई चुनौतियॉ आती रही है। जिनमें से कुछ का समाधान मिला और कुछ के लिए संघर्श जारी है।

महिला कानूनः–

गणतंत्र बनने के बाद देश में ऐसे कई कानून अस्तित्व में आए जिससे महिलाओं को सुरक्षा और अधिकार हासिल हुए है। हिन्दु विवाह अधिनियम 1955 से महिलाओं को तलाक और गुजारे भत्ते का अधिकार प्राप्त हुआ है। हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम 1956 **हिन्दी गोंद और भरण–पोषण** अधिनियम 1956 बना। दहेज प्रथा पर रोक लगानें के लिए 1986 में "दहेज निरोधक कानून" बना। राजस्थान में जब रूप कंवर को पति के साथ चिता पर सती किया गया तो सन् 1987 में सती प्रथा पर रोक लगाने के लिए कानून बना। बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण पाने के लिए सन् 1974 गर्भपात को कानूनी वैधता दी गई, लेकिन इसका दुरूपयोग इस अंदाज में किया जाने लगा कि, कोख में ही लड़कियों का कत्ल किया जाने लगा परिणाम लिंग सुतलन बिगड़ गया। भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार 1000 पुरूषो के पीछे 940 स्त्रियां है। कुछ राज्यों में तो 1000 पुरूशों के पीछे 827 स्त्रियां ही बची हैं 16 दिसम्बर 2012 की घटना ने सम्पूर्ण समाज को झकझोर दिया तो कानून को कठोर किया गया और कठोर सजा का प्रावधान किया गया साथ ही महिलाओं के लिए बजट में 1000 करोड़ के फंड से निर्भया कोश की स्थापना की गई। महिलाओं की सुरक्षा एवं सषक्तिकरण के लिए उन्हे कानून सषक्त बनाने का प्रयास किया गया।

ऐतिहासिक फैसलेः–

महिला सशक्तिकरण की दिषा में न्यायालयों के फैसले भी महत्वपूर्ण है। घर की चार दीवारी से कोर्टरूम तक का सफर तय कर महिलाओं ने अपने हक की लड़ाई लड़ी और जीती भी है। आज महिलाओं ने वो मुकाम हासिल कर लिया है कि उनको ध्यान में रखकर न सिर्फ कई नए कानून बन रहें हैं बल्कि **कई कानूनों में संशोधन** भी किया जा रहा है। उनकी सुरक्षा, **भरण–पोषण**, पहचान, अधिकार और सम्मान की खातिर महिलाओ के हक में ऐतिहासिक कानूनी फैसलों में–कामकाजी महिलाओं को भी मिलेगा **मेंटनेश** अगस्त 2011, दिल्ली हाईकोर्ट घरेलू हिसा से महिलाओं का सरक्षण अधिनियम (2005), लिव **इन रिलेशनशिप में भी मिलेगा भरण–पोषण** भत्ता (2010 सुप्रीम कोर्ट), पिता की सम्पत्ति में समान अधिकार (2005), सरनेम बनाए रखने की आजादी (2011), महिला आयोग ने एन आर आई सेल की स्थापना कर हालीडे

*प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय चिरमिरी जिला–कोरिया छ.ग.

** सहा.प्राध्यापक (अर्थषास्त्र) शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय चिरमिरी जिला–कोरिया छ.ग.

ISSN 0975-3486

Oct.Nov.Dec-2018, Issue-109-110-111 (Combined)

An International Indexed, Refereed, Interdisciplinary, Multilingual, Monthly Research Journal

Impact Factor-6.315 (SJIF)

UGC APPROVED & LISTED - 41022

SSM
A WAY TO SUCCESS
RAE
JAIPUR INDIA

RESEARCH ANALYSIS AND EVALUATION

रिसर्च एनालिसिस एण्ड इवैल्युएशन

www.ssmrae.com

EDITOR
Dr. KRISHAN BIR SINGH

www.ssmrae.com

Contents

Zoology

Tobacco Extract (Nicotiana tobaccum) Induced

*** Uttam Manikrao Jayabhaye**

**** Rajendra Prabhakar Mali**

***** Ashwini Ravichandra Jagtap** 8-9

Chemistary

An Efficient Approach For Synthesis

*** Naveen Gautam** 41-44

Law

National Food Assistance Schemes

*** Kavita** 16-18

Scrutiny of Law on Compounding

*** Dr. Sunita Arya ** Khuzema Kapadia** 64-65

Physical Education

Effectiveness of Plyometirc and Resistative

***Dr. Bimal Kumar K. Joshi** 13-15

Library & Information Science

Traditional Services in NIT Libraries: A Study

*** Mrs. Bharati Patle, * Dr. Veena A. Prakashe** 31-34

Marathi

स्वामी विवेकानंद यांची विचारसरणी आणि कार्य

***** प्रा. डॉ. ईश्वर सोमनाथे 112-113

Commerce

भारत में युवाओं के लिए रोजगार सृजन की चुनौतियाँ

***** डॉ० चैतन्य कुमार 86-87

Sociology

Globalisation, Multiculturalism and Identity

*** Dr. Gaurav Gothwal** 1-3

स्त्री भ्रूण हत्या और मानवाधिकार

***** कु. उज्वला टेकाडे 77-79

पर्यावरण संरक्षण हेतु ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्तियों में पर्यावरणीय

***** रवीश कुमार ****** डॉ० सुरेश सिंह 97-99

बाजार तंत्र में विज्ञापन, स्त्री और समाज

***** डॉ. भूरसिंह जाटव 104-107

CSA

Risk And Risk Management

*** Sheenu Bansal** Mrs. Poonam Rani** 47-49

Economics

Urban Co-Operative Banks: Problems

*** Dr. Mahesh Prabhakarrao Deshmukh** 35-37

शिक्षा एक निजी वस्तु अथवा सार्वजनिक वस्तु

***** डॉ राजेश कुमार जांगिड ****** डॉ अशोक 68-73

कोयला खान श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का एक अध्ययन

*****डॉ. अमरकान्त पाण्डेय ****** कु. रजनी रोठिया 94-96

History

नंदा राजजात–एक ऐतिहासिक देवयात्रा

***** डॉ० रंजना रावत 66-67

किराडू मंदिर समूह में पौराणिक देवी–देवताओं का अंकन

***** दीपक जोशी 90-93

Political Science

राजस्थान में मानव अधिकार संरक्षण

***** मधु मेहरा 74-76

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता– एक चुनौती

***** डॉ. आरती तिवारी 88-89

International Indexed Peer Review & Research Journal, ISSN-0975-3486(Print), E-ISSN-2320-5482, Oct, Nov., Dec.,2018 (Combined) ISSUE - 109,110,111

कोयला खान श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का एक अध्ययन (चिरमिरी कोयला क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

*डॉ॰ अमरकान्त पाण्डेय ** कु॰ रजनी सेठिया

* प्राध्यापक,अर्थशास्त्र अध्ययन शाला पं॰ रविशंकरशुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
** सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, शास. लाहिड़ी महाविद्यालय चिरमिरी, जिला कोरिया (छ.ग.)

सारांश – श्रमिकों को मजदूरी तथा वेतन से प्राप्त आय उनकी आर्थिक स्थिति को व्यक्त करती है और उपभोग की विभिन्न मदों पर व्यय उनकी जीवन स्तर को व्यक्त करता है। यद्यपि आय अधिक होने पर जीवन स्तर ऊँचा होता है और आय कम होने पर जीवन स्तर नीचा होता है। आय एवं उपभोग व्यय के विश्लेषण के आधार पर ज्ञात होता है कि उपभोग की विभिन्न मदों पर आय का कितना भाग व्यय किया जा रहा है। सामान्यतया आय का अधिक भाग भोजन पर व्यय निम्न आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर को व्यक्त करता है एवं यह संकेत करता है कि आय आवश्यकताओं की पूर्ति पर्याप्त नहीं है। NCWA IX के समझौते द्वारा निर्धारित आय को विभिन्न मदों पर व्यय के विश्लेषण हेतु अनुसूची द्वारा प्राप्त अभिमतों के आधार पर चिरमिरी कोयला खान श्रमिकों के आय एवं व्यय प्रवृत्ति का विश्लेषण किया गया है और यह जानने का प्रयास किया गया है उनके उपभोग व्यय के लिए पर्याप्त है एवं उनमें बचत की प्रवृत्ति है।

शब्द कुंजी आय के स्त्रोत, व्यय की मदें,

प्रस्तावना

कोल इंडिया लिमिटेड (CIL) की सहायक कंपनी साउथ ईस्टर्न कोल फील्डस लिमिटेड (SECL) के अंतगर्त चिरमिरी कोयला क्षेत्र छ.ग. राज्य के कोरिया जिले में आता है। यह सबसे पुराना कोयला उत्खनन क्षेत्र है। यहॉ 11 कोयला खदानें है जिनमे 3 खुली खदानें तथा 8 भूमिगत खदानें 1. चिरमिरी 2. कुरासिया 3. वेस्ट चिरमिरी 4. अंजनी हिल 5. चिरमिरी बरतुँगा 6.चिरमिरी(लोकल सिम)7. कुरासिया (भूमिगत) 8. एन.सी.पी. एच 9. नार्थ चिरमिरी 10. रानी अटारी 11. विजय वेस्ट। 31/03/2014 को चिरमिरी कोयला क्षेत्र की खुली तथा भूमिगत खदानों में कुल 8330 श्रमिक कार्यरत थे जिसमे भूमिगत खदानों में श्रमिकों की संख्या 4775 तथा खुली खदानों में कार्यरत श्रमिकों की संख्या 3555 है।[1] कोयला खान श्रमिकों को वेतन/मजदूरी राष्ट्रीय वेतन समझौता NCWA IX समझौता के तहत प्राप्त हो रही है जिसकी अवधि 1/7/2011 से 30/06/2016 5 वर्ष के लिए है। प्रस्तुत शोधपत्र कोयला खान श्रमिकों को वेतन/मजदूरी राष्ट्रीय वेतन समझौता NCWA IX पर आधारित है।

श्रमिक की आय उसके जीवन स्तर को सबसे अधिक प्रभावित करती है। श्रमिकों को प्राप्त होने वाली आय उनकी आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर की स्पष्ट परिचायक होती है। अधिक आय उच्च आर्थिक स्थिति तथा कम आय निम्न आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर को व्यक्त करती है। श्रमिकों का समाज में स्थान, उनका स्वास्थ्य, कार्यकुशलता, भावी योजना, इच्छाओं की पूर्ति सभी उनकी आय के अनुरूप ही निर्धारित ,निर्मित एवं परिपूर्ण होती है। निश्चित ही पर्याप्त आय प्राप्त करने वाला व्यक्ति अच्छा जीवन स्तर बना सकता है। आय के साथ उपभोग व्यय का नियोजन आवश्यक है अन्यथा ऊँची आय के बावजूद आर्थिक स्थिति खराब हो सकती है जीवन स्तर निम्न हो सकता है। सामान्य रूप से परिवार बजट के विष्लेशण का सैद्धांतिक आधार आय बढ़ने के साथ–साथ जीवन स्तर में सुधार होना चाहिए क्योंकि आय द्वारा आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर निर्धारित होता है।उक्त तथ्य के साथ ही व्यय संबंधी घटक की चर्चा तथा विश्लेषण उतना ही आवश्यक तथा महत्वपूर्ण होता है जितना कि आय संबंधी। आर्थिक स्थिति तथा जीवन स्तर को सुधारने तथा नियमित करने के लिए आवष्यक है प्राप्त आय का सदुपयोग किया जाए।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. श्रमिक की आय के स्रोत एवं व्यय श्रमिकों द्वारा व्यय की जाने वाली प्रमुख मदें क्या है ?
2. श्रमिक अपनी आय को विभिन्न मदों पर किस प्रकार व्यय करते है। निश्चित योजनानुसार व्यय किया जाता है अथवा कोई निश्चित योजना नही होती।
3. श्रमिको को प्राप्त आय उनमें उपभोग व्यय के लिए पर्याप्त है अथवा नहीं ?
4. श्रमिक अपनी समस्त आय उपभोग पर व्यय करते है अथवा बचत भी करते है ?

अध्ययन तकनीक

प्रस्तुत शोधपत्र "कोयला खान श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का एक अध्यन"–चिरमिरी कोयला क्षेत्र के विशेष संदर्भ में है। शोध अध्ययन हेतु प्राथमिक तथा द्वितीयक समंको को संग्रहित किया गया है"। आय सम्बधी समंक द्वितीयक समंक Memorandom of agreement NCWA IX NEW Delhi Dated 31st Jan 2012 के प्रावधान से प्राप्त किये गये है तथा उपभोग व्यय से सम्बधित प्राथमिक समंक को 300 न्यादर्श श्रमिकों (200 भूमिगत तथा 100 खुली खदान) के न्यादर्श लेकर अनुसूची/प्रश्नावली के माध्यम से समंक एकत्रित् कियें गये। अनुसूची के प्रश्न के उत्तर में उत्तरदाताओं से प्राप्त अभिमतों का विश्लेषण सॉख्यिकी रीतियों के द्वारा किया गया है।

आय के स्रोत एवं व्यय की मदें

कोयला श्रमिक की आर्थिक स्थिति के विश्लेषण के लिए उनके आय एवं व्यय की मदों का विश्लेषण आवश्यक है।

श्रमिकों की आय के स्रोत

Registration No. 1589/2008-09 ISSN. 2347-4491 Impact Factor 2.382

अयन्

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

Patron
Prof. I.S. Chouhan
(Ex V.C., Barkatullah University, Bhopal)

Editor in Chief
Dr. Bindu Bhushan Upadhyay

Executive Editor
Dr. Vikramaditya Rai

Editor
Dr. Vikash Kumar
Dr. Kumar Varun

Volume 7 No. 1 (January-March) Issue 2 UGC No. 49095 Year- 2019

Published by
Lok Manav Samaj Kalyan Sansthan
Aurangabad (Bihar)-824101

IN ASSOCIATION WITH
K.R. PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS
Baba Shopping Complex, Lanka, Varanasi – 05

❖	ग्राम्य–केंद्रित हिन्दी उपन्यासों में नारी जीवन *डॉ0 किशोरी लाल*	171-172
❖	शुंग काल के आभूषण *जलज चौधरी*	173-176
❖	**Politics and security with the challenge of ASEAN** *Phra Kitti Laophewpan*	177-185
❖	**The condition of suffering and happiness with the perspective of loka-dhamma** *Miss Notnargorn Thongputtamon*	186-195
❖	नारी शिक्षा व सशक्तिकरण पर स्वामी विवेकानंद जी के विचार *दीपक राजभर*	196-198
❖	मृच्छकटिकम् में वर्णित भाषाई चेतना *विकेश कुमार सिंह*	199-203
❖	रामकथा : आधुनिक भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में *डॉ0 मीनाक्षी मिश्रा*	204-207
❖	भारतीय काव्यशास्त्रीय परम्परा में काव्य गुण *डॉ. राजेश कुमार गर्ग*	208-213
❖	**Economic and Trade Policies of India** *Anumpa Pathak*	214-221
❖	**Similarities in Problems: China Threat** *Dheerendra Kumar Singh*	222-226
❖	"नालन्दा विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक एवं शैक्षिक मूल्यों की उपादेयता" *सर्वेश सिंह*	227-229
❖	**India and the European Union: Cooperation and Challenges** *Sohan Lal*	230-236
❖	महायान के प्रमुख आचार्य एवं उनकी कृतियाँ *मनीष कुमार भारती*	237-242
❖	बागड़ी समाज के लोक देवी–देवता और लोक मेले *डॉ. राजेन्द्र कुमार सेन*	243-251
❖	सर्व शिक्षा में मिड–डे मील की भूमिका *डॉ ज्याउद्दीन* *मनोज कुमार*	252-257
❖	मतदान व्यवहार *डॉ. आरती तिवारी*	258-263
❖	श्रम संगठनों की भूमिका – चिरमिरी कोयला क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में *कु. रजनी सेठिया*	264-269

Journal of Interdisciplinary Cycle Research

An UGC-CARE Approved Group - II Journal

An ISO : 7021 - 2008 Certified Journal

ISSN NO: 0022-1945 / web : http://jicrjournal.com / e-mail: submitjicrjournal@gmail.com

Certificate of Publication

This is to certify that the paper entitled

Certificate Id: JICR/4683

"Human Rights in India: The Constitutional Framework"

Authored by :

Dr. Ashish Kumar Pandey, Assistant Professor

From

Government Lahiri P.G. College, Chirimiri, Koriya

Has been published in

JICR JOURNAL, VOLUME XIII, ISSUE VI, JUNE- 2021

Dr. R. Rezwana Begum, Ph.D Editor-In-Chief

JICR JOURNAL

6.2 IMPACT FACTOR

ISO International Organization for Standardization 7021-2008

http://jicrjournal.com

GOVT. OF INDIA RNI NO. UPBIL/2014/56766

ISSN 2348-2397

UGC Approved
Care Listed Journal

Shodh Sarita

PUBLISHED BY

sanchar
Educational & Research Foundation

Chief Editorial Office

448/119/76, Kalyanpuri, Thakurganj Chowk,
Lucknow, Uttar Pradesh - 226003
+91-94155 78129 | +91-79051 90645
serfoundation123@gmail.com | seresearchfoundation.in

Certificate of Publication

Ref. No.: **SS/2021/SIS2**

Date: **29-03-2021**

Authored by

Dr. Ashish Kumar Pandey
Assistant Professor
Department of Commerce
Government Lahiri P. G. College, Chirimiri, Koriya, C.G.

for the Research Paper titled as

IMPACT OF LABOUR WELFARE PRACTICES ON EMPLOYEES' SATISFACTION

Published in

Shodh Sarita, Volume 8, Issue 29, January to March 2021

Dr. Vinay Kumar Sharma
Editor in Chief
M.A., Ph. D., D.Litt. – Gold Medalist
Awarded by The President of India 'Rajbhasha Gaurav Samman'

Shodh Sarita
EDITOR IN CHIEF
DR. VINAY KUMAR SHARMA